CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वैशाली की झाँकी

१४८

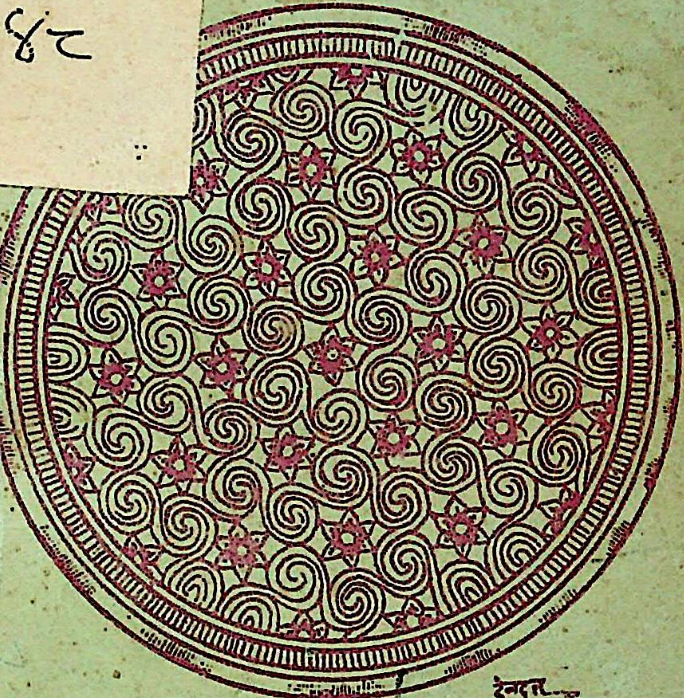

योगेन्द्र मिश्र

पुस्तक-विहार-प्रकाशन

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वैशाली की झाँकी

Ro...

वैशाली के समाज, कला, संस्कृति
और इतिहास का संक्षिप्त
निरूपण

लेखक
योगेन्द्र मिश्र, एम० ए०, साहित्यरत्न
इतिहास-विभाग,
पटना कालेज

पटना
पुस्तक - विहार
प्रकाशन

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्रकाशक
पुस्तक - विहार
एनी बेसेंट रोड, पटना–४

सर्वाधिकार सुरक्षित
मूल्य दो रुपये

वैशाली प्रेस,
पटना द्वारा मुद्रित

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अध्ययन को व्यसन का रूप देने वाले,
वैशाली-संघ के अध्यक्ष
और
बिहार राज्य के मुख्य मन्त्री
बिहार-केसरी
डाक्टर श्रीकृष्ण सिंह
के
कर-कमलों में
लेखक की सम्मान-भावना
का
यह प्रतीक
समर्पित
है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भूमिका

प्राचीन वैशाली के इतिहास, उसकी महान् विभूतियों, उसकी सांस्कृतिक और सामाजिक विशेषताओं और धार्मिक प्रवृत्तियों पर उसके प्रभाव के विषय में एक संक्षिप्त किन्तु प्रामाणिक ग्रन्थ की आवश्यकता थी। श्री योगेन्द्र मिश्र वैशाली-संघ और वैशाली-महोत्सव के आयोजन के साथ सन् १९४४ से ही सम्बद्ध रहे हैं। "वैशाली-अभिनन्दन-ग्रन्थ" का सम्पादन करते समय उन्हें तद्विषयक सामग्री का मनोयोगपूर्वक अध्ययन करने का अवसर मिला था। इसलिए वैशाली की इस सिलसिलेवार गाथा की रचना उन्हीं की लेखनी से हो, यह उचित ही है।

मिश्रजी ने भाषा सुबोध रखी है, कथा प्रारम्भ से अन्त तक रोचक और सुपाठ्य है। फिर भी ग्रन्थ का कोई भी अंश ऐतिहासिक तथ्यों के पथ से भटका नहीं है। लेखक ने एक इतिहासज्ञ के उत्तरदायित्व को सचेत रहकर निबाहा है, वरना तो वैशाली के उपासकों और उन्नायकों में से एक होने के नाते उनके लिए कल्पना की लगाम ढीली छोड़ देना स्वाभाविक होता!

वैशाली-संघ की ओर से मैं इस पुस्तक का स्वागत करता हूँ और आशा करता हूँ कि बिहार में ही नहीं, वरन् देश के विभिन्न भागों में इसका प्रचार होगा।

जगदीशचन्द्र माथुर
(शिक्षा-सचिव, बिहार सरकार
और
प्रधान मन्त्री, वैशाली-संघ)

पटना
१५-३-१९५३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

लेखक की ओर से

विगत अष्टम वैशाली-महोत्सव (७ अप्रैल, १९५२) के अवसर पर 'दीप बाबू' (श्री दीपनारायण सिंह, एम० एल० ए०, सम्प्रति बिहार सरकार के सहयोग-मंत्री) ने मुझसे कहा कि मैं वैशाली पर कोई ऐसी किताब लिखूँ, जिसे हर कोई खरीदकर पढ़ सके और समझ सके। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं की आज्ञा के पालन के रूप में है। वैशाली के सम्बन्ध में प्राचीन साहित्य में अनेक कहानियाँ और विवरण उपलब्ध होते हैं। मैंने मुख्यतया कहानियों का ही संग्रह किया है, जिसमें पुस्तक रोचक हो। अनेक स्थलों पर प्राचीन साहित्य की छाया दीख पड़ेगी। मैंने ऐसे स्थल जानबूझ कर रहने दिये हैं, जिसमें प्राचीन वैशाली की वास्तविक झाँकी मिल सके।

कहानियों और घटनाओं को कालक्रमानुसार रखा गया है। अबतक वैशाली सम्बन्धी किसी ग्रन्थ या पुस्तक में यह बात न बरती गयी थी। यह काम जितना कठिन है, उतना ही विवाद में फँसाने वाला भी। मैं गौतम बुद्ध का समय ५६७ ई० पू० से ४८७ ई० पू० तक मानता हूँ और वर्धमान महावीर का ५६१ ई० पू० से ४८९ ई० पू० तक। भगवान् महावीर की यह तिथि बौद्ध परम्परा के अनुकूल पड़ती है। बौद्ध और जैन साहित्यों का अध्ययन कर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि वैशाली की प्रसिद्ध गणिका अम्बपाली का जन्म ५५० ई० पू० और ५४८ ई० पू० के बीच कभी हुआ था।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पुस्तक के भीतर कहीं भी सन्-संवत् या शताब्दी का उल्लेख नहीं किया गया है, जिसमें कहानी-तत्त्व को प्रधानता मिले और इतिहास से अनभिज्ञ जन भी इसमें रस ले सकें।

भगवान् महावीर वैशाली की सबसे दिव्य विभूति थे। अतः उनके जीवन के सभी मुख्य अंश दे दिये गये हैं।

यह पुस्तक न केवल पढ़ी जा सकती है, बल्कि योग्य निर्देशक होने पर इसके आधार पर अभिनय और नृत्य का आयोजन भी संभव है। इसके नं० २५ (बुद्ध का उद्धत लिच्छवि युवकों पर आश्चर्यकारी प्रभाव, पृष्ठ ५८-५६) और नं० ३५ (लिच्छवियों का कठोर जीवन, पृष्ठ ८१-८३, आमोद-प्रमोद में तल्लीन रहते हुए भी रणभेरी सुनते ही लिच्छवियों द्वारा उसी उन्माद और उत्साह से वीरता का प्रदर्शन) वैशाली-महोत्सवों में तथा नं० ३४ (बुद्ध द्वारा अम्बपाली गणिका के निमन्त्रण की स्वीकृति, पृष्ठ ७८-८२) द्वितीय विहार सांस्कृतिक महोत्सव (पटना, जनवरी, १९५३) में नृत्य-रूप में सफलता-पूर्वक दिखलाये जा चुके हैं। इन नृत्यों की 'स्क्रिप्ट' मेरे ही द्वारा तैयार की गयी थी। कहानीपरक होने के कारण अन्य अंशों का भी इस रूप में आसानी से उपयोग हो सकता है। उस समय की वेषभूषा के लिए उपयुक्त ग्रन्थों से सहायता ली जा सकती है।

जिन-जिन ग्रन्थों से मुझे प्रस्तुत पुस्तक के लिखने में सहायता मिली है, उनके लेखकों और सम्पादकों का मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ब्लाकों के लिए मैं वैशाली-संघ (१६४५ में स्थापित) के अध्यक्ष डाक्टर श्रीकृष्ण सिंह (बिहार के मुख्य मन्त्री) और प्रधान मन्त्री श्री जगदीशचन्द्र माथुर, आई० सी० एस० (बिहार सरकार के शिक्षा-सचिव) एवं ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना के स्वत्वाधिकारी पंडित देवकुमार मिश्र और व्यवस्थापक श्री अयोध्या प्रसाद झा का अनुगृहीत हूँ। वैशाली-संघ और वैशाली-महोत्सव वैशाली के पुनरुद्धार के सुन्दर प्रयत्न हैं। इनके संस्थापक और संघ के प्रधान मन्त्री श्री जगदीशचन्द्र माथुर ने पुस्तक की भूमिका लिखकर इसका मान बढ़ा दिया है। वैशाली प्रेस के अधिकारी अगर तत्परता न दिखलाते, तो पुस्तक इस रूप में न निकल पाती। अतः ये भी हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

पुस्तक को और भी उपयोगी और रोचक बनाने के सम्बन्ध में हम पाठकों के सुझावों का सदैव स्वागत करेंगे।

वैशाली जैसी प्राचीन राजधानी और कला-संस्कृति-केन्द्र से सम्बन्ध रखनेवाले इतिहास-साहित्य को कालक्रमबद्ध कथा-रूप में लाने के प्रयोग में मैं कहाँ तक सफल हो सका हूँ, इसका निर्णय तो वे ही करेंगे, जिनके हाथ में अभी यह पुस्तक है।

इतिहास-विभाग,
पटना कालेज

योगेन्द्र मिश्र

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

विषय - सूची

क्रम	विषय		पृष्ठ-संख्या
१	विदेह-जनपद का प्रारम्भ (राजा विदेघ माथव)	...	१
२	वैशाली की स्थापना (राजा विशाल और उनके वंशज)		४
३	भगवान् राम भी वैशाली आये थे (राजा सुमति)	...	५
४	राजतंत्र का अन्त (राजा कराल जनक)	...	७
५	लिच्छवियों की उत्पत्ति-कथा	...	८
६	वृजि-संघ (वैशाली का गणतंत्र)	...	११
७	नगर-वर्णन	...	१४
८	वर्धमान का जन्म	...	१६
९	वर्धमान का विवाह	...	१९
१०	सिद्धार्थ द्वारा ज्ञान की खोज	...	२१
११	महालि	...	२३
१२	वैशाली का अनुकरण किया जाता था (जीवक का जन्म)	...	२४
१३	बिम्बिसार और अम्बपाली	...	२७
१४	वर्धमान का गृहत्याग	...	२८
१५	कर्मारग्राम में वर्धमान	...	३०
१६	चेल्लना (वैदेही) का विवाह	...	३२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

१७ बोधिलाभ के बाद वैशाली में भगवान् बुद्ध का प्रथम पदार्पण (लिच्छविपरिषद् की देवपरिषद् से तुलना) ३८
१८ महावन की कूटागारशाला (चैत्यों का दान) ... ४४
१९ भिक्षुणी-संघ की स्थापना ... ४७
२० वैशाली में बुद्ध के वर्षावास ... ५१
२१ वैशाली में महावीर के वर्षावास ... ५१
२२ महावीर का केवलज्ञान ... ५३
२३ महावीर की धर्मसभाएँ ... ५३
२४ सिंह सेनापति की बौद्धधर्म में दीक्षा ... ५४
२५ बुद्ध का प्रभाव ... ५८
२६ लिच्छवियों का दबदबा ... ५९
२७ अभिषेक-मंगल-पुष्करिणी ... ६१
२८ महावीर का निर्वाण ... ६३
२९ निगंठ नाथपुत्त के संघ में भेद ... ६४
३० वैशाली की बौद्ध भिक्षुणियाँ (थेरी-गाथा) ... ६६
३१ अजातशत्रु और लिच्छवियों में संघर्ष ... ६७
३२ बुद्ध द्वारा वज्जियों की प्रशंसा ... ६९
३३ पाटलिपुत्र में नगर-निर्माण ... ७५
३४ अम्बपाली गणिका का निमन्त्रण (लिच्छविपरिषद् की देवपरिषद् से तुलना) ... ७८
३५ लिच्छवियों का कठोर जीवन ... ८२
३६ भगवान् बुद्ध का अन्तिम वर्षावास ... ८३

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

३७ चैत्यों की रमणीयता ... ८४
३८ परिनिर्वाण की घोषणा ... ८६
३९ नागावलोकन (अन्तिम वैशाली-दर्शन) ... ८७
४० भिक्षापात्र का दान ... ८८
४१ बुद्ध के शरीरावशेष में लिच्छवियों का भाग ... ८८
४२ आनन्द-स्तूप ... ९१
४३ अम्बपाली की वृद्धावस्था ... ९२
४४ लिच्छवियों की पराजय (वैशाली-गणतंत्र का पतन) ९४
४५ द्वितीय बौद्ध संगीति ... ९८
४६ अर्थशास्त्र में लिच्छवियों और वृजियों का उल्लेख १०३
४७ अशोक का स्तम्भ ... १०५
४८ मनुस्मृति में लिच्छवियों का उल्लेख ... १०८
४९ भिक्षापात्र गन्धार चला गया ... १०९
५० नागार्जुन द्वारा प्रशंसा ... ११०
५१ लिच्छवियों की नेपाल-विजय ... १११
५२ कुमारदेवी का विवाह ... ११२
५३ 'लिच्छविदौहित्र' ... ११३
५४ फाहियान का वैशाली-भ्रमण ... ११५
५५ चौमुखी महादेव ... ११६
५६ गुप्तकालीन मुहरें और अन्य प्राचीन चिह्न ... ११७
५७ वाङ्-ह्वेन-सी का वैशाली-भ्रमण ... ११९
५८ ह्वेनसांग का वैशाली-भ्रमण ... ११९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

५६ इत्सिंग की वैशाली-यात्रा ... १२२
६० वैशाली के उपनिवेशक ... १२२
६१ उत्साह की बुद्धभक्ति ... १२३
६२ जैन वैशाली को भूल गये ... १२५
६३ शेख मुहम्मद फैजुल्लाह काजिन शुत्तारी ... १२६
६४ वैशाली के ऐतिहासिक अवशेष ... १२८
६५ वैशाली का पुनरुद्धार (वैशाली-संघ और वैशाली-महोत्सव) ... १३३

परिशिष्ट

१ वैशाली की समृद्धि और गणतन्त्रवादिता (ललितविस्तर) ... १३७
२ भगवान् महावीर की जीवन-झाँकी (जैन कल्पसूत्र) १३७
३ लिच्छवियों द्वारा बुद्ध-स्वागत की तैयारी (महावस्तु) १३९
४ वज्जि-गणतन्त्र की सात विशेषताएँ (दीघनिकाय : महापरिनिब्बाणसुत्त) ... १४४
५ कुछ महत्त्वपूर्ण तिथियाँ ... १४७

★

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

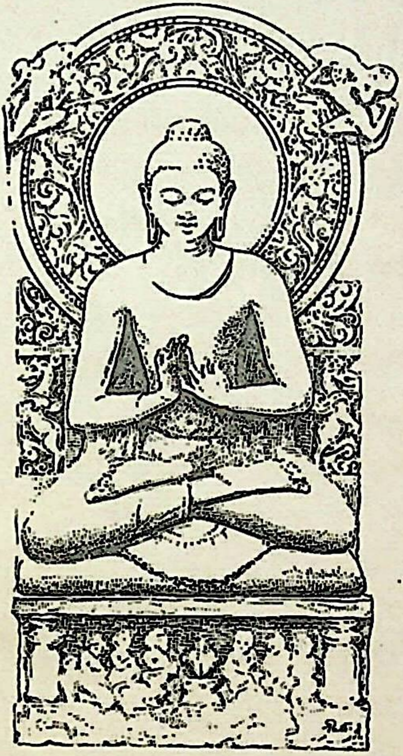

भगवान् बुद्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

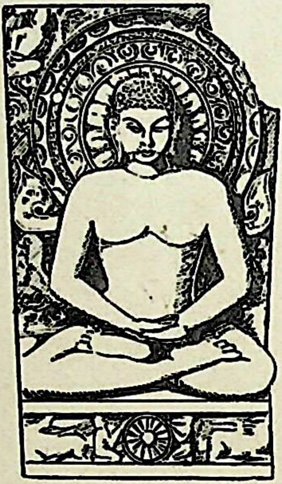

भगवान् महावीर

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

वैशाली की झाँकी

१

विदेह-जनपद का प्रारम्भ

राजा विदेघ माथव

आजकल जिस नदी को गण्डक के नाम से पुकारा जाता है, उसे बहुत पहले सदानीरा कहते थे। सदानीरा का अर्थ है 'वह नदी जिसमें सदा नीर (अर्थात् जल) रहे'। यह नदी उत्तरी (हिमालय) पर्वत से निकलती थी।

पहले सदानीरा के पूर्व की भूमि में खेती नहीं होती थी और वहाँ दलदल-ही-दलदल थी; क्योंकि अग्नि का वहाँ आगमन नहीं हुआ था। यह सोच कर कि 'अग्नि ने इसका दहन नहीं किया है' ब्राह्मण भी प्राचीन काल में सदानीरा को पार नहीं करते थे।

विदेघ माथव नामक राजा के आने के बाद बहुत-से ब्राह्मण भी सदानीरा के पूर्व गये और उनके यज्ञों द्वारा अग्नि का प्रज्वलन हुआ। इसलिए खूब खेती होने लगी। ग्रीष्म ऋतु में भी यह नदी कोप करती हुई प्रवाहित होती थी। अग्नि द्वारा अदग्ध रह जाने के कारण यह अत्यन्त शीतल थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विदेघ माथव के सदानीरा की घाटी में पहुँचने की कथा अत्यन्त मनोरंजक है। यह कथा वस्तुतः सप्तसिन्धु (पंजाब) से आर्यों के पूर्व की ओर बढ़ने का इतिहास है।

कथा इस प्रकार है।

विदेघ माथव अग्नि वैश्वानर को मुख में रख कर चले। गोतम राहूगण ऋषि उनके पुरोहित थे। गोतम राहूगण ने जब उन्हें सम्बोधित किया, तब विदेघ माथव चुप रह गये, क्योंकि उन्हें भय था कि कहीं मेरे मुख से अग्नि वैश्वानर निकल न जाएँ।

गोतम राहूगण ऋग्वेद के मन्त्रों से अग्नि की वन्दना करने लगे। राजा ने उत्तर नहीं दिया।

तब पुरोहित फिर अग्नि की वन्दना में लगे।

राजा पूर्ववत् चुप रहे। फलतः पुरोहित बन्दना करते ही रहे।

राजा अभी भी चुप ही रहे। तब पुरोहित ने अग्नि से कहा—"जिन पर घृत छिड़का जाता है, उन अग्निदेव का हम आह्वान करते हैं।"

पुरोहित का 'घृत' शब्द कहना था कि अग्नि वैश्वानर राजा के मुख में प्रज्वलित हो उठे। राजा उन्हें धारण न कर सके। अतः अग्नि राजा के मुख से निकल कर पृथ्वी पर आ गये।

विदेघ माथव उस समय सरस्वती नदी के तट पर थे।

अग्नि वैश्वानर पृथ्वी का दहन करते हुए वहाँ से पूर्व की ओर बढ़े। गोतम राहूगण और विदेघ माथव उनका अनुसरण करने

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

लगे। अग्नि ने सब नदियों का दहन कर दिया, किन्तु सदानीरा (गण्डक) का दहन नहीं किया।

तब विदेघ माथव ने अग्नि से पूछा—"मैं कहाँ रहूँ ?"

अग्नि ने कहा—"इस नदी के पूर्व आप का वासस्थान हो।"

गोतम राहूगण ने माथव से प्रश्न किया—"जब हमने आपको सम्बोधित किया था, तब आप क्यों नहीं बोले थे ?"

माथव ने उत्तर दिया—"मेरे मुख में अग्नि वैश्वानर थे। मैं बोलता, तो वे मेरे मुख से निकल जाते; इसलिए मुझे चुप रह जाना पड़ा।"

"तब आखिर यह हुआ कैसे ?"

"जिस समय आपकी वन्दना में घृत की चर्चा आयी, उसी समय अग्नि वैश्वानर मेरे मुख में प्रज्वलित हो उठे। मैं उन्हें धारण करने में असमर्थ हो गया। अतएव वे मेरे मुख से निकल गये।" राजा ने कहा।

❋ ❋ ❋

जिस तरह गंगा-यमुना की घाटी में कुरु-पाञ्चाल नामक विशिष्ट जातियाँ थीं, उसी तरह सरयू-सदानीरा की घाटी में कोसल-विदेह थे। सदानीरा कोसलों और विदेहों के बीच की मर्यादा (सीमा) हुई। ये विदेघ माथव के वंशज थे।

इस प्रकार विदेघ द्वारा विदेह-जनपद का प्रारम्भ हुआ, जिसे भविष्य में गौरवमय इतिहास का निर्माण करना था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

२

वैशाली की स्थापना

राजा विशाल और उनके वंशज

प्राचीन भारतीय इतिहास में अयोध्या के राजा इक्ष्वाकु का नाम बहुत प्रसिद्ध है। उन्हीं के कुल में तृणविन्दु हुए। उनकी स्त्री का नाम अलम्बुषा था। तृणविन्दु के अलम्बुषा से उत्पन्न पुत्र 'विशाल' के नाम से विश्रुत हुए। ये नरव्याघ्र और परम धार्मिक थे। इन्होंने विशाला नाम की पुरी वसायी। आज भी वैशाली में 'राजा विशाल का गढ़' नाम का बड़ा टीला अपने संस्थापक की याद दिला रहा है।

विशाल के पुत्र हेमचन्द्र अत्यन्त वलशाली थे। हेमचन्द्र के अनन्तर सुचन्द्र विख्यात हुए। सुचन्द्र के पुत्र धूम्राश्व प्रसिद्ध हुए। धूम्राश्व के पुत्र सृञ्जय हुए। सृञ्जय के पुत्र सहदेव श्रीयुक्त और प्रतापवान् थे। सहदेव के पुत्र कुशाश्व परम धार्मिक थे। कुशाश्व के लड़के सोमदत्त महातेजस्वी और प्रतापवान् थे। सोमदत्त के पुत्र काकुत्स्थ के नाम से विश्रुत हुए। उनके पुत्र सुमति महातेजस्वी, देवता के समान और दुर्जय थे। सुमति अयोध्या के राजा दशरथ के समकालीन थे।

इक्ष्वाकु के प्रसाद से वैशाली के सभी राजा दीर्घायु, महात्मा, वीर्यवान और सुधार्मिक हुए। विदेघ माथव ने विदेह में आर्य-सभ्यता की नींव डाली थी; कालान्तर में विदेह के पश्चिमी भाग—

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पश्चिमविदेह या वैशाली—में राजा विशाल द्वारा संस्थापित गौरवशाली राजवंश राज करने लगा।

३

भगवान् राम भी वैशाली आये थे

राजा सुमति

विश्वामित्र सिद्धाश्रम (वक्सर) में तप करते थे। राक्षस उनके यज्ञकार्य में वहुत विघ्न डाला करते थे। अतः उन्हें विवश होकर अयोध्या के राजा दशरथ की सहायता लेनी पड़ी। राम और लक्ष्मण ने विश्वामित्र मुनि की सहायता कर अपने पिता राजा दशरथ का नाम ऊँचा किया। राम ने सिद्धाश्रम में उपद्रव मचानेवाली ताटका नामक राक्षसी तथा अन्य राक्षसों का वध किया। वचे हुए राक्षस भाग गये।

सिद्धाश्रम के विघ्नरहित हो जाने के वाद विश्वामित्र, राम और लक्ष्मण के साथ, मिथिला चले; क्योंकि वहाँ के राजा सीरध्वज जनक के यहाँ उनकी कन्या सीता के विवाह के लिए धनुपयज्ञ हो रहा था।

शोणनदी पार करने के बाद वे मगध देश में पहुँचे। तदनन्तर उन्होंने श्रेष्ठ गंगा नदी को पार किया। उत्तरी तीर पर पहुँच कर गंगा के कूल पर कुछ काल के लिए ठहरे और उन्होंने विशाला पुरी को देखा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पुरी के दर्शन के अनन्तर मुनिवर, राघव और लक्ष्मण के साथ, शीघ्र विशाला नगरी पहुँचे। यह नगरी रम्य, दिव्य और स्वर्गोपम थी।

महाप्राज्ञ राम ने महामुनि विश्वामित्र से उत्तम विशाला पुरी के विषय में अंजलिबद्ध होकर प्रश्न किया।

राम का वचन सुनकर मुनिपुंगव ने विशाला का पुरातन वृत्तान्त बतलाया। उन्होंने राजा विशाल की कथा कह सुनायी और उनके उत्तराधिकारियों की चर्चा कर कहा—"यहाँ आज एक रात हमलोग सुखपूर्वक निवास करेंगे और कल प्रभात को नरश्रेष्ठ जनक के देखने के लिए चल पड़ेंगे।"

'विश्वामित्र आ गये हैं' यह सुन कर महातेजस्वी, नरवरश्रेष्ठ और महायशस्वी सुमति बान्धवों के साथ उनके पास गये। अंजलिबद्ध हो विश्वामित्र की परम पूजा करके वैशाली के राजा ने उनका कुशल पूछा और कहा—"मैं धन्य हूँ और अनुगृहीत हूँ, जो मुझे अपने राज्य में ही मुनि के दर्शन प्राप्त हुए। मुझसे अधिक धन्य कोई नहीं।"

परस्पर कुशल पूछकर विशालाधिपति सुमति ने महामुनि से देवतुल्यपराक्रम, गजसिंहगति, समुपस्थितयौवन, नरश्रेष्ठ और धनुर्धर वीर राम एवं लक्ष्मण के सम्बन्ध में पूछा। उनका वचन सुनकर विश्वामित्र ने सिद्धाश्रमनिवास और राक्षसों के वध का वर्णन किया। विश्वामित्र का वचन सुनकर राजा परम विस्मित

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

हुए। उन्होंने दशरथ के दोनों महाबलशाली पुत्रों का विविध सत्कार किया।

सुमति का परम सत्कार प्राप्त कर राम और लक्ष्मण, मुनि विश्वामित्र के साथ, दूसरे दिन मिथिला के लिए रवाना हुए।

४
राजतंत्र का अन्त

सुमति के बाद के राजाओं का इतिहास अन्धकार में है। किस प्रकार यहाँ राजतंत्र का अन्त हुआ और प्रजातंत्र स्थापित हुआ, इस बारे में हम कुछ नहीं जानते। महाभारत-युद्ध के बाद अयोध्या का लगातार पतन और मिथिला (विदेह) की विशेष उन्नति से अनुमान किया जा सकता है कि वैशाली इस विदेह राज्य का अंग बन गयी थी।

तब विदेह पर ही दृष्टिपात करें।

विदेह का अन्तिम राजा कराल जनक था। इसे कराल वैदेह भी कहते थे। एक बार यह तीर्थयात्रा के विचार से योगेश्वर जा रहा था। रास्ते में इसने कौतूहलपूर्वक भीड़ को देखा। इसकी दृष्टि एक ब्राह्मण की सुन्दर और युवती स्त्री पर पड़ी। काम से अभिभूत होकर यह जबर्दस्ती उस ब्राह्मण युवती को नगर में ले गया। तब ब्राह्मण क्रुद्ध हो नगर भर में यह कहता फिरा—"क्यों नहीं वह नगर धरती में समा जाता है, जहाँ ऐसी दुष्टात्मा का निवास है?" फलतः धरती फट गयी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

और कराल वैदेह अपने बन्धु और राष्ट्र के साथ विनाश को प्राप्त हुआ।

कहीं-कहीं ब्राह्मण युवती के बदले ब्राह्मण-कन्या लिखा है। उस हालत में शाप देने वाला ब्राह्मण उस बालिका का पिता होगा।

५

लिच्छवियों की उत्पत्ति-कथा

काशी के राजा की प्रधान महिषी को गर्भाधान हुआ। राजा को इस बात की सूचना यथासमय मिल गयी। राजा ने गर्भरक्षा के निमित्त अनुष्ठान करवाये।

समय पूरा होने पर प्रधान रानी प्रसूतिका-गृह में प्रविष्ट हुई। वहाँ अन्य रानियाँ भी थीं। पर आश्चर्य की बात यह हुई कि प्रधान रानी के पेट से केवल एक मांसपिण्ड निकला। दूसरी रानियों ने सोचा कि यदि राजा को इस बात की सूचना मिलेगी, तो वह सब पर रंज होगा; इसलिए उस मांसपिण्ड को एक पेटी में बन्द कर उस पर राजमुद्रा अंकित कर उन सब ने उसे गंगा में बहा दिया। किसी देवता ने तत्काल सिन्दूर से स्वर्णखण्ड पर, काशिराज की प्रधान महिषी की सन्तति' लिखकर उसे पेटी में चिपका दिया और फिर उसे उसी प्रकार गंगा में बह जाने दिया।

संयोगवश एक साधु प्रातःकालीन स्नान के लिए गंगातट पर पहुँचा। उसका ध्यान उस पेटी की ओर गया। उसने पेटी

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

को बाहर निकालकर खोला, तो देखा कि भीतर मांसपिण्ड है। साधु को बड़ी दया आयी। उसने उस पेटी को ज्यों-का-त्यों लाकर अपने आश्रम के एक शुद्ध स्थान में रख दिया। आधे महीने के बाद मांसपिण्ड दो टुकड़ों में विभक्त हो गया और इसके एक महीने के बाद एक से निकला एक बालक और दूसरे से एक बालिका। साधु दोनों का उचित रीति से लालन-पालन करने लगा। उन बच्चों के शरीर इतने सुन्दर—इतने निर्मल—थे कि जो कुछ भोजन-द्रव्य उनके उदर में प्रवेश करता, वह बाहर से स्पष्ट दीख पड़ता था, मानो उनके शरीर में कहीं छवि अर्थात् चर्म का सन्निवेश नहीं है। इसलिए उनका नाम 'निच्छवि' अर्थात् बिना छवि वाला—बिना चर्म वाला—पड़ा। किसी-किसी ने कहा कि 'दोनों (चर्म और उदर के भीतर का भोजन-द्रव्य) एक-दूसरे से सटे हुए (लीना-छवि) हैं, मानो एक साथ सी दिये गये हों' और इस कारण उनका नाम 'लिच्छवि' रखा।

साधु को उन बच्चों का प्रतिपालन और सेवा-शुश्रूषा करने में बड़ी कठिनाई पड़ती थी। यह देख कतिपय गोपाल उस साधु से उन दोनों बच्चों को माँग कर अपने घर ले गये। बच्चों को सौंपते समय साधु ने कहा—"ये बच्चे गुणवान् होंगे। अत्यन्त सावधानी से इनका पालन करना। जब ये बड़े हो जाएँ, तब एक का विवाह दूसरे से कर देना। राजा को प्रसन्न करके इनके लिए कुछ भूमि प्राप्त कर लेना और एक नगर का निर्माण करके उसमें इस कुमार को प्रतिष्ठित कर देना।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

साधु की आज्ञा शिरोधार्य कर वे गोपाल उन बच्चों का लालन-पालन बड़ी मुस्तैदी से करने लगे। जब वे दोनों कुछ सयाने हुए, तब उन चरवाहों के लड़कों को खेलते समय लात-घूँसे से मारते-पीटते थे। अभिभावकों को सच्ची बात का पता चल गया। तब गोपालों ने कहा—"ये बच्चे दूसरों को त्रास पहुँचाते हैं। ये रखे जाने लायक नहीं हैं। इन्हें हटा देना चाहिए (वज्जितव्वा)।" तब से वह तीन सौ योजनों का भूमि-प्रदेश 'वज्जी' के नाम से कहा जाने लगा।

पश्चात् वहाँ के राजा की कृपा से वह बालक उस प्रदेश का स्वामी हो गया और चरवाहों ने उसे ही राजा के रूप में अभि-षिक्त किया। सोलह वर्षों की अवस्था में उसका विवाह उसी लड़की से हो गया। दोनों के विवाह के बाद राजा ने यह नियम बनाया - "बाहर से कोई लड़की विवाहिता होकर इस नगर में नहीं लायी जाएगी और न यहाँ की कोई बाहर जाएगी।"

इस सम्बन्ध से पहली बार उन्हें दो सन्तानें हुईं—एक बालक और एक बालिका। इस प्रकार सोलह बार उन्हें यमज सन्तानें होती गयीं। जब वे सब सयाने हुए और नगर में उनके बाग, आनन्द-कुंज, भवन एवं सेवकों के लिए जगह की कमी पड़ गयी, तब शहर के चारों ओर एक-दूसरे से एक कोस की दूरी पर तीन दीवारें बनवायी गयीं। बार-बार नगर को विशाल बनाने के कारण इसका नाम 'वैशाली' पड़ गया।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

६

वृजि-संघ

काशी और विदेह में बहुत पहले से शत्रुता चली आ रही थी। अतएव यह सम्भव है कि विदेह के राजतंत्र के विनाश में काशी वालों का भी हाथ हो। लिच्छवियों की उत्पत्ति-कथा से ज्ञात होता है कि वे काशी की एक रानी की सन्तान थे। इसलिए पीछे चलकर यह विश्वास जड़ कर गया मालूम पड़ता है कि काशी के राजवंश के कुमारों ने विदेह (गण्डक घाटी) में राज्य स्थापित किया।

कारण चाहे जो हो, मध्य हिमालय से लेकर गंगा नदी तक का प्रदेश छोटे-छोटे गणतंत्रों में विभक्त हो गया और इनमें से अधिकतर राज्यों में इक्ष्वाकु-वंश के लोगों की प्रधानता हुई। कोसल में बहुत पहले से इक्ष्वाकु-वंश चला आता था, जहाँ से इस वंश की शाखाएँ वैशाली और मिथिला गयी थीं। जब गणतंत्रों की स्थापना हुई, तब इस वंश के लोग कई राज्यों में पाये जाते हैं। वैशाली के लिच्छवि, कुशीनगर के मल्ल, पिप्पलीवन के मोरिय, कपिलवस्तु के शाक्य और रामगाम के कोलिय इक्ष्वाकु-वंशी थे।

जितने गणतंत्र स्थापित हुए, उनमें वृजि-संघ सबसे अधिक बलशाली और प्रतिष्ठित था। इसे वज्जीसंघ भी कहते थे। इसकी स्थापना विदेह के राजवंश के विनाश के पश्चात् हुई। इसमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अष्टकुल सम्मिलित थे, जिनके नाम ये हैं—विदेह, लिच्छवि, ज्ञातृक, वृजि, उग्र, भोग, कौरव और ऐक्ष्वाक।

विदेहों की प्राचीन राजधानी मिथिला थी, जिसे अब जनकपुर कहते हैं। यह नेपाल राज्य में है।

वज्जिरट्ठवासियों (वृजिराष्ट्रवासियों) में सबसे प्रशस्त लिच्छवि थे। ये वासिष्ठ गोत्र के थे और इस कारण वासिष्ठ भी कहे गये हैं। इनकी राजधानी वैशाली थी।

ज्ञातृकों की राजधानी कुण्डपुर या कुण्डग्राम में थी। इसे क्षत्रियकुण्ड भी कहते हैं। यह वैशाली का उपनगर था। अतः कुण्डग्राम में ज्ञातृक-कुल में जन्म लेने पर महावीर स्वामी 'वैशालीय' और 'वैशालिक' कहे गये हैं। ज्ञातृक काश्यप-गोत्र के थे।

वृजि भी आठ कुलों में से एक थे। संघ का नाम इसी कुल के नाम पर वृजिसंघ पड़ा था। लिच्छवियों के समान वृजियों का भी वैशाली नगरी और इसके उपनगरों से घनिष्ठ सम्बन्ध था।

उग्रों का सम्बन्ध वैशाली और हस्तिग्राम से था। उग्ग नगर की चर्चा भी आती है। आगे 'उग्रलिपि' का उल्लेख भी मिलता है।

भोग भोगनगर में रहते थे। इस नगर की चर्चा वैशाली और पावा के बीच में आती है।

कौरवों का वृजिसंघ से सम्बन्ध मनोरंजक है। बौद्धधर्म

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

के उदय के बहुत पहले से कुरु-ब्राह्मण विदेह की राजधानी में बसने लगे थे। उन्हीं के साथ कौरव क्षत्रिय भी आये होंगे।

ऐक्ष्वाकों का वैशाली से अत्यन्त प्राचीन सम्बन्ध था, क्योंकि विशाल से लेकर सुमति तक सब राजा इक्ष्वाकु-वंशी थे।

वृजिसंघ के सदस्य 'राजा' कहलाते थे। सात हजार सात सौ सात राजा थे। इतने ही उपराज, इतने ही सेनापति और इतने ही भाण्डागारिक थे। सदस्यों में उच्च, मध्य, वृद्ध और ज्येष्ठ का कोई भेद नहीं था—एक-एक मानता था कि 'मैं राजा हूँ,' 'मैं राजा हूँ'। 'संस्थागार' में सदस्यों की बैठक हुआ करती थी।

मुख्य कार्य अष्टकुलकों और नौ लिच्छवि गणराजों के द्वारा सम्पन्न होते थे। नौ लिच्छवियों, नौ मल्लकियों और अठारह काशी-कोसल के गणराजों ने मिलकर एक संघ भी बनाया था।

वृजिसंघ अपनी विशिष्ट न्याय-प्रणाली के लिए प्रसिद्ध था। परम्परा से चला आया वज्जि-धर्म यह था कि वज्जि के शासक 'यह चोर है, अपराधी है' न कह आदमी को विनिश्चय-महामात्य (न्यायाधीश) के हाथ में दे देते थे। वह विचार करता, अपराधी न होने पर छोड़ देता, अपराधी होने पर स्वयं कुछ न कह व्यावहारिक (न्यायाध्यक्ष) को दे देता। वह भी अपराधी जानने पर सूत्रधार को दे देता। वह भी विचार कर निरपराध होने पर छोड़ देता, अपराधी होने पर अष्टकुलिक को दे देता। वह भी वैसा ही करके सेनापति को, सेनापति उपराज (उपाध्यक्ष) को और उपराज राजा (गणपति) को दे देता। राजा विचार कर, यदि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अपराधी न होता, तो छोड़ देता और अपराधी होने पर प्रवेणि-पुस्तक (दण्डविधान) वँचवाता। प्रवेणि-पुस्तक में लिखा रहता कि अमुक अपराध का अमुक दण्ड है। अपराध को उससे मिलाकर दण्ड दिया जाता।

वृजिराष्ट्र के निवासी वृजि या वज्जी भी कहे जाते थे।

हिमालय पर्वत से लेकर गोदावरी नदी तक का विस्तृत भू-भाग इन सोलह महाजनपदों में विभक्त था—काशी, कोसल, अंग, मगध, वृजि, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, पञ्चाल, मत्स्य, शूरसेन, अश्मक, अवन्ति, गन्धार और कम्बोज। वृजिसंघ भी इन महाजनपदों में एक था, जिसकी राजधानी वैशाली थी।

७

नगर-वर्णन

वैशाली नगरी तीन दीवारों से घिरी हुई थी। हर दीवार एक-दूसरी से एक गव्यूति (= ¼ योजन, एक कोस) पर थी। तीन स्थानों पर द्वार थे, जो गोपुरों और अट्टालिकाओं से युक्त थे।

वैशाली के तीन भाग थे। प्रथम भाग में सात हजार भवन थे, जिनके गोपुर सोने के थे; मध्य भाग में चौदह हजार भवन थे, जिनके गोपुर चाँदी के थे; अन्तिम भाग में इक्कीस हजार भवन थे, जिनके गोपुर ताँबे के थे। इनमें उच्च, मध्यम और निम्न वर्गों के लोग अपने पदों के अनुसार निवास करते थे।

वैशाली के निवासियों ने यह नियम बना रखा था कि प्रथम

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भाग में जन्मी कन्या का विवाह प्रथम भाग में ही होगा, द्वितीय या तृतीय भाग में नहीं; मध्य भाग में जन्मी कन्या का विवाह प्रथम और द्वितीय (=मध्य) भागों में होगा; किन्तु अन्तिम भाग में जन्मी कन्या तीन में से किसी भी भाग में विवाह कर सकेगी। यह नियम भी था कि वैशाली के बाहर कोई विवाह नहीं हो सकता था।

ये तीनों भाग वैशाली (ठेठ वैशाली), कुण्डपुर और वाणियगाम (वाणिज्यग्राम) रहे होंगे, जो सम्पूर्ण नगर के दक्षिण-पूर्वी, उत्तर-पूर्वी और पश्चिमी अंशों में फैले हुए थे। कुण्डपुर के बाद और उत्तर-पूर्वी दिशा में कोल्लाग-संनिवेश था, जिसमें मुख्यतया नायकुल (ज्ञातृकुल) के क्षत्रिय निवास करते थे।

यह सम्भव है कि प्राचीन काल में वैशाली, कुण्डग्राम और वाणिज्यग्राम में अलग-अलग ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य (वनिया) रहते रहे हों।

उस समय वैशाली ऋद्ध=स्फीत (=समृद्धिशाली), बहुत जनों (=मनुष्यों) से आकीर्ण और सुभिक्षा (=अन्नपानसम्पन्न) थी। एक विवरण के अनुसार उसमें ७७७७ प्रासाद, ७७७७ कूटागार, ७७७७ आराम और ७७७७ पुष्करिणियाँ थीं।

यही नहीं, वल्कि वैशाली महानगरी क्षेमपूर्ण, रमणीय, वितान-युक्त आंगन, द्वार, तोरण, गवाक्ष और हर्म्य से समलंकृत एवं पुष्प-वाटिका और संकुसुमित वनों से युक्त थी। वह सौन्दर्य में देवताओं के भवनों से पूर्ण पुरी से टक्कर लेती थी।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वैशाली में हर तरह की पैदावार होती थी। वहाँ के लोग शान्ति और सन्तोष का जीवन व्यतीत करते थे। राष्ट्र धनसम्पन्न और देवपुर जैसा सुन्दर था। भण्डार रत्न, स्वर्ण और रजत से पूर्ण थे।

इस नगरी के भवन सुन्दर थे; आराम और पुष्पवाटिकाएँ भी थीं; गान करने वाले पक्षी थे और लिच्छवियों में बराबर उत्सव होते रहते थे। वस्तुतः वैशाली पृथ्वी पर स्वर्ग थी।

८

वर्धमान का जन्म

वैशाली के समीप ही कुण्डपुर बसा हुआ था। इसे कुण्डग्राम भी कहते थे। यह एक प्रकार से वैशाली का उपनगर था। यह ज्ञातृक-वंश के क्षत्रिय रहते थे। ये सब क्षत्रियकुण्डपुर के उत्तरी भाग में अर्थात् उत्तरक्षत्रियकुण्डपुर में बसे हुए थे।

ज्ञातृक-वंश के क्षत्रिय ज्ञातृ, ज्ञाति, ज्ञात, नात, नाथ और नाय भी कहे जाते थे।

कुण्डपुर (क्षत्रियकुण्ड) के गणतांत्रिक नायक का नाम सिद्धार्थ था। वृजिसंघ के सभी सदस्य 'राजा' कहलाते थे; अतएव सिद्धार्थ भी 'राजा' कहलाते थे। वे काश्यपगोत्र के थे। उनके तीन नाम थे—सिद्धार्थ, श्रेयांस और यशस्वी।

सिद्धार्थ की रानी त्रिशला क्षत्रियाणी थीं। वे वासिष्ठगोत्र की थीं। उनके तीन नाम थे—त्रिशला, विदेहदत्ता और प्रियकारिणी। वे वैशाली के लिच्छवि नायक ('राजा') चेटक की बहन थीं।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला तीर्थंकर पार्श्वनाथ के अनुयायी श्रमणोपासक थे। उन्हें नन्दिवर्धन नामक एक पुत्र भी था।

एक बार ठीक मध्यरात्रि के समय त्रिशला ने हाथी, बैल, सिंह, लक्ष्मी, पुष्पमाला, चन्द्र, सूर्य, ध्वजा, कलश, पद्मसरोवर, क्षीरसमुद्र, देवविमान, रत्नराशि और निर्धूम अग्नि—ये चौदह पदार्थ स्वप्न में देखे।

स्वप्नदर्शन के अनन्तर त्रिशला शीघ्र जग पड़ीं और राजा सिद्धार्थ के पास जाकर अपने स्वप्नदर्शन की बात कही।

प्रातःकाल होते ही राजा ने ज्योतिषियों को बुला भेजा। वे स्वयं सामन्त-मन्त्रिमण्डल के साथ सभाभवन में आकर सिंहासन पर बैठे। सामन्त-मन्त्री आदि सभी यथास्थान बैठ गये।

राजा ने ज्योतिषियों से गत रात्रि के स्वप्न का सारा वृत्तान्त कहा। ज्योतिषियों ने उस पर विचार किया और तब उनके मुखिया ने राजा से कहा—"राजन्! यह स्वप्नदर्शन अत्यन्त शुभ है। हमारे स्वप्नशास्त्र में कुल बहत्तर प्रकार के स्वप्न बताये गये हैं, जिनमें से गज, वृषभ आदि चौदह महास्वप्न वे ही भाग्यवती स्त्रियाँ देखती हैं, जिनके गर्भ में भावी चक्रवर्त्ती राजा अथवा धर्मचक्रवर्त्ती तीर्थंकर का अवतार होता है। रानी ने ये महास्वप्न देखे हैं। अतः निश्चय ही इनकी कोख से किसी महान् चक्रवर्त्ती अथवा तीर्थंकर का जन्म होगा।"

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

राजा और रानी स्वप्न का फल जान अत्यन्त हर्षित हुए।

जबसे रानी के गर्भ रहा, तबसे राजा की सत्ता बढ़ने लगी उनके भाण्डागार धन-धान्य से अधिक पूर्ण होने लगे और स प्रकार से ज्ञातवंश की उन्नति होने लगी। इस अभ्युदय क देखकर सिद्धार्थ और त्रिशला ने निश्चय किया कि 'यह सब वृद्धि हमारे गर्भस्थ पुत्र के पुण्यप्रताप का फल है, इसलिए जन्म हो पर हम इस पुत्र का नाम वर्धमान रखेंगे'।

चैत सुदी तेरह की मध्यरात्रि में रानी त्रिशला की पुण्यकुक्षि से श्रमण भगवान् महावीर क्षत्रियकुण्डपुर में अवतरित हुए राजा सिद्धार्थ परम प्रसन्न हुए और उन्होंने नगर में दस दिनों त उत्सव मनाया। प्रजा के आनन्द और उत्साह की सीमा रही। सर्वत्र धूम मच गयी। कुण्डपुर आनन्दधाम बन गया।

बारहवें दिन नामकरण-संस्कार सम्पन्न हुआ। राजा सिद्धा ने अपने सम्बन्धियों, मित्रों एवं स्नेहियों को बुलाकर उनव सत्कार किया और कहा—"जबसे यह बालक हमारे कुल अवतीर्ण हुआ है, तबसे हमारे कुल में हिरण्य, सुवर्ण, धन, धान आदि की वृद्धि हो रही है। इस कारण हमने पहले ही निश्च कर लिया था कि हम इस पुत्र का नाम 'वर्धमान' रखेंगे। आ हमारे वे चिरसंचित मनोरथ पूर्ण हुए। अतः हम कुमार नाम 'वर्धमान' रखते हैं।"

जैनधर्म के चौबीसवें और अन्तिम तीर्थंकर महावीर ने इ प्रकार क्षत्रियकुण्ड में अवतार लिया। श्रमण भगवान् महावी

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

काश्यपगोत्र के थे। उनके तीन नाम थे। माता-पिता ने उनका नाम वर्धमान रखा था। कठोर श्रम करने की योग्यता रखने के कारण वे श्रमण कहलाते थे। देवताओं ने उनका नाम महावीर रखा था, क्योंकि वे भय और जोखिम में अटल थे, सहनशील, नियम-पालक और धीमान् थे, दुःख और सुख को एक-सा सहते थे, संयमी और वीर्यसम्पन्न थे। श्रमण भगवान् अर्हत् महावीर ज्ञातृ (नाए) थे, ज्ञातृ-पुत्र (नायपुत्ते) थे, ज्ञातृकुलचन्द्र (नाय-कुलचन्दे) थे। वे विदेह, विदेहदत्त, विदेहजात्य और विदेह-सुकुमार (विदेहे विदेहदिन्ने विदेहजच्चे विदेहसूकुमाले) थे, क्योंकि उनका जन्म विदेह में (गंगा के उत्तर) हुआ था और उनकी माता त्रिशला (विदेहदत्ता) विदेह (वैशाली) की थीं। क्षत्रियकुण्डपुर वैशाली का ही एक विभाग था। अतएव भगवान् महावीर 'वैशालीय' और 'वैशालिक' कहे गये हैं। वे वैशाली की सबसे दिव्य विभूति थे—विशाला (वैशाली) महावीर की जननी थी।

६
वर्धमान का विवाह

कुमार वर्धमान की बालावस्था वैभवसम्पन्न थी। राजा सिद्धार्थ उन्हें बहुत मानते थे। ज्योतिषियों ने चक्रवर्ती राजा अथवा धर्मतीर्थंकर होने का जो भविष्य-कथन किया था, उसका स्मरण करते हुए सिद्धार्थ और त्रिशला अपने इस छोटे पुत्र को

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अधिक भाग्यवान् समझते थे। अतः धात्रियाँ, बालमित्र, नौकर-चाकर और अन्यान्य सभी सुख-साधन वर्धमान के लिए प्रस्तुत किये गये।

वर्धमान बाल्यकाल से ही विवेक, शिष्टता, गाम्भीर्य आदि अनेक गुणों से समलंकृत थे। बड़े-बड़े समझदार वृद्ध पुरुष भी उनकी गुणशीलता से चकित थे। उनका साहस प्रशंसनीय था।

कुमार वर्धमान बालावस्था से ही कैसे गम्भीर थे, इस बात को समझने के लिए उनके लेखशाला-प्रवेश का प्रसंग उपयोगी होगा।

वर्धमान अलौकिक रूप से विद्वान् थे। पर उनके माता-पिता को यह बात मालूम न थी। इसलिए जब वर्धमान आठ वर्ष पूरे कर चुके, तब उनके माता-पिता विद्याध्ययन कराने के लिए उन्हें शुभ लग्न में लेखशाला ले गये।

स्वर्ग के इन्द्र को इस बात का पता चला। बालक वर्धमान की गम्भीरता और उनके माता-पिता की मुग्धता देख इन्द्र को महान् आश्चर्य हुआ। वृद्ध ब्राह्मण का वेष धारण कर वह लेखशाला पहुँचा। वहाँ उसने वर्धमान से व्याकरण-विषयक अनेक प्रश्न पूछे। वर्धमान ने सब प्रश्नों के स्पष्ट और ठीक उत्तर दिये। अध्यापक भी यह देख चकित हुआ। तब वृद्धरूपधारी इन्द्र ने कहा—"इस कुमार को तुम साधारण बालक न समझो। यह विद्या का सागर और ज्ञान की निधि है। आगे चलकर यह महान् धर्मतीर्थंकर होगा और लोगों का उद्धार करेगा।"

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

यह कहकर उसने अपना स्वरूप प्रकट किया और वर्धमान को नमस्कार कर अन्तर्धान हो गया।

अब वर्धमान के माता-पिता और परिजन कुमार की विशेषताओं को समझ गये और उसी क्षण उन्हें अपने घर वापस ले गये।

वर्धमान जब वीस वर्षों के हुए, तब यशोदा नाम की 'राजकुमारी' से उनका विवाह हुआ। यशोदा वसन्तपुर के महासामन्त समरवीर की पुत्री थीं। उनका सौन्दर्य अलौकिक था। वे कौण्डिन्यगोत्र की थीं। वसन्तपुर वैशाली के समीप ही था।

१०

सिद्धार्थ द्वारा ज्ञान की खोज

मध्यदेश में कपिलवस्तु नामक नगर था। जिस समय की बात लिखी जा रही है, उस समय क्षत्रियकुल ही लोकमान्य था। इसलिए इसी में बुद्ध ने वैशाख-पूर्णिमा को जन्म लिया। शुद्धोदन नामक 'राजा' उनके पिता थे। लाखों कल्पों से दान आदि करने वाली और जन्म से ही अखण्ड पञ्चशील (=सदाचार) रखने वाली महामाया नामक देवी उनकी माता थीं।

कपिलवस्तु में शाक्यवंशी क्षत्रियों का गणराज्य था। शुद्धोदन उनके नायक अथवा 'राजा' थे।

शुद्धोदन के पुत्र का नाम पड़ा सिद्धार्थ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अठारह वर्षों के होने पर सिद्धार्थ का विवाह यशोधरा नाम की सौन्दर्य-सम्पन्न 'राजकुमारी' से हुआ।

किन्तु सुन्दर स्त्री, राज्य, सुखोपभोग—कुछ भी उन्हें घर से बांध कर न रख सका। उन्तीस वर्षों की अवस्था में आषाढ़ की पूर्णिमा को सिद्धार्थ हाथ में आये चक्रवर्ती-राज्य को थूक की भाँति फेंककर कामनारहित हो ज्ञान की खोज में चल पड़े।

वैशाली में पार्श्वनाथ के अनुयायियों के होने के कारण यह श्रमण-धर्म, आध्यात्मिक अनुशासन और संन्यास का केन्द्र बन गयी थी। इसने भारत के धार्मिक जगत् में पहले से ही यश प्राप्त कर लिया था, क्योंकि यहाँ के यती कठोरतम तपस्या में लीन रहते थे।

जब सिद्धार्थ ने संसार का त्याग कर दिया और भिक्षु हो गये, तब उनका पहला काम हो गया उपयुक्त गुरु की खोज करना। धार्मिक जीवन में यह प्रथम सोपान होता है। यदि किसी की आँखों पर पट्टी बाँध दी जाए, तो वह रास्ता नहीं पा सकता। वह तभी सत्य का रास्ता पा सकता है, जब उसकी आँखों से गुरु पट्टी हटा दें और इस प्रकार उसे चक्षुदान दें।

सिद्धार्थ ने, जिन्हें बुद्धत्व-प्राप्ति के पूर्व बोधिसत्त्व भी कहते थे, वैशाली के गुरुओं की प्रशंसा सुनी। वहाँ आलार कालाम और उद्दक-रामपुत्र नामक दो प्रसिद्ध तपस्वी रहते थे। आलार तो समाधि में इतने बढ़े-चढ़े थे कि सड़क पर बैठे हुए इन्हें पाँच सौ शकट (गाड़ियाँ) न तो दीख पड़ते थे, न उनकी आवाज

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ही इन्हें सुन पड़ती थी। बोधिसत्त्व ने विचरण करते हुए आलार कालाम तथा उद्दक-रामपुत्र के पास पहुँच समाधि सीखी। उन्होंने कठोर साधना की। फलस्वरूप उनका शरीर अस्थि-पंजर-मात्र रह गया।

बोधिसत्त्व का शरीर इतनी कठोर साधना नहीं सहन कर सकता था। अतएव 'यह ज्ञान (=बोध) का रास्ता नहीं है'—ऐसा सोच, उस समाधि भावना को अपर्याप्त समझ, परमतत्त्व की प्राप्ति के लिए वे अग्रसर हुए।

११
महालि

श्रावस्ती के महाकोसल राजा का पुत्र प्रसेनजित् कुमार, वैशाली का लिच्छवि कुमार महालि, कुसीनारा का मल्ल राजपुत्र बन्धुल—ये तीनों ही दिशा-प्रमुख आचार्य के पास शिल्प (=विद्या) ग्रहण करने के लिए तक्षशिला गये। वहाँ नगर के बाहर धर्मशाला में भेंट हुई। एक-दूसरे के आने का कारण, कुल और नाम पूछ कर, मित्र बन, एक साथ ही आचार्य के पास जा, विद्या पढ़ने लगे।

तीनों ने शीघ्र ही विद्या समाप्त की। आचार्य से आज्ञा ले वे एक साथ ही निकल कर अपने-अपने स्थानों को गये।

प्रसेनजित् कुमार ने अपने पिता को विद्या दिखायी। पिता प्रसन्न हुए और प्रसेनजित् ने उनसे राज्याभिषेक पाया।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

महालिकुमार वैशाली पहुँचे। लिच्छवियों को उन्होंने अप विद्या दिखायी। पर बहुत उत्साह (बल) के साथ विद्या दिखाने कारण उनकी आँखें फूटकर निकल गयीं। लिच्छवि राजा (गणतंत्र के सभासदों) ने सोचा —'अहो! हमारे आचार्य आँखें फूट गयीं। इन्हें नहीं छोड़ना चाहिए। इनकी से करनी चाहिए।' यह सोच उन्होंने चुंगी से एक लाख आय वा एक नगरद्वार उन्हें दे दिया। महालि वहीं बैठ पाँच सौ लिच्छ राजकुमारों को विद्याग्रहण कराते रहने लगे।

वन्धुल राजकुमार कुशीनगर में न रहकर अपने मित्र के पा श्रावस्ती चला गया। प्रसेनजित् कोसल-राजा ने उसे सेनापति पद पर स्थापित किया। वन्धुल मल्ल माता-पिता को बुलवा क वहीं बस गया।

१२

वैशाली का अनुकरण किया जाता था

जीवक का जन्म

राजगृह का नैगम किसी काम से वैशाली गया। देखा वि वैशाली ऋद्ध=स्फीत (=समृद्धिशाली), बहुत जनों (=मनुष्यों से आकीर्ण और सुभिक्षा (=अन्नपान सम्पन्न) थी। उसमें ७७७७ प्रासाद, ७७७७ कूटागार, ७७७७ आराम और ७७७ पुष्करिणियाँ थीं। गणिका अम्बपाली अभिरूप=दर्शनीय= प्रासादिक और परम रूपवती थी। चाहनेवाले मनुष्यों के पास

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मनोरंजनार्थ जाया करती थी। उससे वैशाली और भी प्रसन्न शोभित थी।

राजगृह का नैगम वैशाली में अपना काम खतम कर फिर राजगृह लौट गया। लौट कर जहाँ राजा मागध श्रेणिक बिम्बिसार था, वहाँ गया। जाकर राजा मागध श्रेणिक बिम्बिसार से बोला—"देव! वैशाली ऋद्ध=स्फीत (=समृद्धिशाली), बहुत जनों (मनुष्यों) से आकीर्ण और सुभिक्षा (=अन्नपान-सम्पन्न) है। उसमें ७७७७ प्रासाद, ७७७७ कूटागार, ७७७७ आराम और ७७७७ पुष्करिणियाँ हैं। गणिका अम्बपाली अभिरूप दर्शनीय = प्रासादिक, परमरूपवती, नाच, गीत और वाद्य में चतुर है। चाहनेवाले मनुष्यों के पास मनोरंजनार्थ जाया करती है। उससे वैशाली और भी प्रसन्न शोभित है। अच्छा हो देव! हम भी गणिका रखें!"

"तो भणे! वैसी कुमारी ढूँढ़ो, जिसको तुम गणिका रख सको।"

उस समय राजगृह में सालवती नामक कुमारी अभिरूप दर्शनीय, प्रासादिक और परमरूपवती थी। अतः राजगृह के नैगम ने सालवती कुमारी को गणिका खड़ा किया।

सालवती गणिका थोड़े काल में ही नाच, गीत और वाद्य में चतुर हो गयी।

अचिर में ही वह गर्भवती हो गयी। तब उसको यह हुआ—

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

"गर्भिणी होने पर मेरा सब सत्कार चला जाएगा। क्यों न मैं बीमार बन जाऊँ ?"

तब सालवती ने दौवारिक (=दरवान) को आज्ञा दी—"भणे! दौवारिक! कोई पुरुष आए और मुझे पूछे, तो कह देना—'बीमार हैं'।"

"अच्छा आर्ये! (=अय्ये!)" उस दौवारिक ने सालवती से कहा।

सालवती ने उस गर्भ के परिपक्व होने पर एक पुत्र जना।

तब सालवती ने दासी को हुकुम दिया—

"हन्द! जे! इस बच्चे को कचरे के सूप में रखकर कूड़े के ऊपर छोड़ आ।"

दासी सालवती को "अच्छा आर्ये!" कह, उस बच्चे को कचरे के सूप में रख, ले जाकर कूड़े के ऊपर रख आयी।

उस समय अभय-राजकुमार ने, सकाल में ही राजा की हाजिरी को जाते समय, कौओं से घिरे उस बच्चे को देखा। देखकर मनुष्यों से पूछा—

"भणे! (=रे!) यह कौओं से घिरा क्या है ?"

"देव! बच्चा है।"

"भणे! जीता है ?"

"देव! जीता है।"

"तो भणे! इस बच्चे को ले जाकर हमारे अन्तःपुर में दासियों को पोसने के लिए दे आओ।"

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

"अच्छा देव !" कह वे मनुष्य उस बच्चे को अभय-राजकुमार के अन्तःपुर में दासियों को पोसने के लिए दे आये।

'जीता है (जीवति)' करके उसका नाम भी जीवक रखा। कुमार ने पोसा था, इसलिए कौमारभृत्य नाम हुआ।

जीवक कौमारभृत्य अचिर में ही विज्ञ हो गया। सात वर्षों तक उसने तक्षशिला में चिकित्सा-शास्त्र की शिक्षा पायी। वहाँ से लौट कर तरुण वैद्य जीवक ने अनेक लोगों को रोगमुक्त किया। अपने युग में वह राजवैद्य था।

उस समय मगध की राजधानी राजगृह भी वैशाली का अनुकरण करता था।

१३

बिम्बिसार और अम्बपाली

वैशाली में महानाम नामक लिच्छवि था। उसकी आम्र-वाटिका में कदली वृक्ष से एक कन्या उत्पन्न हुई। वह देखने में अतीव सुन्दरी थी और उसके शरीर के अंग-प्रत्यंग से लावण्य टपकता था। उसका नाम महानाम ने अम्बपाली (आम्रपाली) रखा।

वैशाली में यह नियम था कि वहाँ सबसे सुन्दरी स्त्री (वैशाली-स्त्रीरत्न) विवाह नहीं कर सकती थी, वरन् समूचे गण का उसके द्वारा मनोरंजन होता था। अम्बपाली जब बढ़कर बड़ी हुई, तब

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वैशाली में सबसे सुन्दरी कन्या होने के कारण उसे गणिका बन जाना पड़ा, जिसमें वह समूचे गण का मनोरंजन कर सके।

अम्वपाली की प्रसिद्धि दिनों-दिन बढ़ने लगी। मगध के राजा विम्बिसार ने अपने मन्त्री गोपाल से उसकी प्रशंसा सुनी। इस समय लिच्छवियों से उसका युद्ध चल रहा था। इसलिए खुल्लमखुल्ला वह वैशाली नहीं जा सकता था। तव विम्विसार ने दूसरा उपाय किया। वह छिपकर वैशाली पहुँचा। अम्व-पाली ने उसका स्वागत-सत्कार किया और सात दिनों तक राजा को अपने यहाँ छिपाकर रखा।

समय वीतने पर विम्विसार से अम्वपाली को एक पुत्र हुआ। अम्वाली ने इसे राजा विम्विसार के पास भेज दिया, जहाँ पहुँच कर यह निर्भीकता से अपने पिता की छाती पर चढ़ गया। तब राजा ने कहा—"यह वालक भय का नाम तक नहीं जानता।" इस घटना के कारण उसका नाम अभय या अभयकुमार पड़ गया।

कहीं-कहीं अम्वपाली के विम्विसार से उत्पन्न पुत्र का नाम विमल कोण्डञ्ञ मिलता है। उस हालत में अभय उज्जैन की गणिका पद्मावती से अथवा नन्दा से उत्पन्न पुत्र माना जाता है।

१४

वर्धमान का गृहत्याग

वर्धमान ने करीव दस वर्षों तक विवाहित जीवन व्यतीत किया। उनके प्रियदर्शना नामक पुत्री भी हुई।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स्वभाव से ही कुमार वर्धमान वैराग्यशील और एकान्तप्रिय थे। संसार छोड़ने का उनका विचार पहले से ही था, पर माता-पिता के आग्रह से वे रुक गये थे। माता-पिता के हृदय पर चोट पहुँचाना उन्हें नापसन्द था। अतः जबतक माता-पिता जीवित रहे, तबतक वर्धमान ने घर पर रहने का निश्चय कर लिया।

जब वर्धमान अठाईस वर्षों के हुए और उनके माता-पिता देवलोक को प्राप्त हुए, तब उनका मन प्रव्रज्या (=संन्यास-ग्रहण) के लिए उत्कठित हो गया। उन्होंने अपने ज्येष्ठ भ्राता नन्दि-वर्धन और अन्य स्वजनों के सामने अपना विचार प्रकट किया।

वर्धमान का विचार जान सभी बहुत दुःखित हुए। नन्दि-वर्धन ने कहा—"भाई! घाव पर नमक न छिड़को। अभी माता-पिता के वियोग का दुःख तो भूले ही नहीं कि तुम भी छोड़ने की बात करने लगे। भाई, जल्दी न करो। अभी कुछ समय तक ठहरो।"

वर्धमान—"कब तक?"

नन्दिवर्धन—"कम से कम दो वर्षों तक।"

वर्धमान ने बड़े भाई का आग्रह मान लिया, पर गृहस्थवेष में रहते हुए भी वे त्यागी जीवन बिताने लगे। उनका अधिक समय दीन-दुखियों के उद्धार में बीतता। अन्त में उन्होंने निष्क्रमण करने का निश्चय किया।

हिरण्य, सुवर्ण, धन, राज्य, राष्ट्र, बल (सेना), वाहन, कोष, कोष्ठागार, पुर, अन्तःपुर, जनता—सब प्रतिबन्धों से वर्धमान ने

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मन खींच लिया और मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी को दिन के चौ
पहर 'चन्द्रप्रभा' शिविका (पालकी) में बैठकर भवन से निकले
राजकुटुम्ब, राज्याधिकारी और चतुरंगिणी सेना के अतिरि
हजारों नागरिकों ने उनका अनुगमन किया।

क्षत्रियकुण्डपुर के वाहर ईशान दिशा में 'ज्ञातखण्डवन' नामक उद्यान (नायसंडवणे उज्जाणे) था। वर्धमान के दीक्षा-महोत्सव का जुलूस कुण्डपुर नगर के वीचो-वीच गुजरता हुआ इसी ज्ञातखण्ड में पहुँचकर एक अशोकवृक्ष के समीप रुका। वर्धमान ने शिविका को अशोकवृक्ष के नीचे रुकवाया और उससे वे उतर पड़े। उन्होंने अपने आभरण और अलंकार उतार दिये और अपने हाथों से पांच मुट्ठियों में अपने केश हटा डाले। उन्होंने दैवी वस्त्र (देवदूष्य) धारण किया, अपने समीप से सबको हटा दिया, अपने सभी केश हटा दिये और आगार को छोड़ अनागारिकत्व को प्राप्त हुए।

इस प्रकार तीस वर्ष विदेह में व्यतीत करके वर्धमान ने अपने गृह का त्याग किया। यदि वे चाहते, तो वृजि-संघ में उन्हें प्रतिष्ठित पद मिलता; पर उन्होंने राजपद का लोभ नहीं किया और कुमार रहते ही (अर्थात् राजपद पाने के पूर्व ही) प्रव्रजित हो गये।

१५
कर्मारग्राम में वर्धमान

ज्ञातखण्डवन उद्यान से चलकर एक मुहूर्त दिन शेष रहते

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वर्धमान कर्मारग्राम (कम्मारगाम) पहुँचे और रात्रि वहीं विताने के विचार से ध्यान में लीन हो गये।

सन्ध्या के समय वहाँ एक ग्वाला वैलों के साथ आया और वैलों को वहीं छोड़ गाँव में चला गया। जब वह कार्य से निवृत्त हो गाँव से लौटा, तब वैल वहाँ नहीं थे। ध्यानस्थित वर्धमान के पास जाकर उसने पूछा—"देवार्य! क्या आप जानते हैं कि यहाँ से वैल कहाँ गये हैं?" वर्धमान की तरफ से गोप को कोई उत्तर नहीं मिला। उसने सोचा—देवार्य को मालूम न होगा।

वह चला गया और वैलों की खोज में रात भर जंगल में भटकता रहा, पर उसे वैल न मिले।

सारी रात घूम-फिर कर ग्वाला रात्रि के अन्तिम भाग में वहाँ लौटा, तव वर्धमान के निकट वैल वैठे देखकर वह उन पर झल्ला कर वोला—"वैलों की वात जानते हुए भी तुमने मुझे सारी रात भटकाया है" और हाथ में रास लिये वर्धमान को मारने दौड़ा। पर उसके पाँव रुक गये। उसी समय वहाँ इन्द्र प्रकट होकर वोला "दुरात्मन्! तुझे इतना भी मालूम नहीं कि ये राजा सिद्धार्थ के दीक्षित पुत्र वर्धमान हैं?"

इसके पश्चात् वर्धमान की वन्दना कर इन्द्र ने कहा "भगवन्! वारह वर्षों तक आपको विविध उपसर्ग (=कष्ट, विघ्न) होने वाले हैं। अतः आज्ञा दीजिए कि मैं आपकी सेवा में रहकर कष्ट-निवारण किया करूँ।"

इन्द्र की प्रार्थना का उत्तर देते हुए वर्धमान ने कहा—

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

"देवेन्द्र ! यह कभी नहीं हुआ और न होगा। अर्हन्त देवेन्द्र या असुरेन्द्र किसी की सहायता से केवलज्ञान नहीं पाते, वरन् अपने ही उद्यम, वल, वीर्य और पुरुषार्थ से केवलज्ञान पाकर निर्वाण को प्राप्त हुए हैं, होते हैं और होंगे।

प्रव्रज्या लेकर वर्धमान प्रथम रात्रि कर्मारग्राम (कम्मारगाम) में ठहरे थे और यहीं आपको सर्वप्रथम गोप द्वारा उपसर्ग हुआ था।

कर्मारग्राम का अर्थ कर्मकारग्राम अर्थात् मजदूरों का गाँव होता है। कहीं-कहीं कर्मार का अर्थ लोहकार भी लिखा है। इससे जहाँ वर्धमान ने दीक्षा लेकर प्रथम रात्रिवास किया था, वह या तो मजदूरों की वस्ती थी अथवा लोहारों का गाँव था।

दूसरे दिन वर्धमान ने कर्मारग्राम से आगे विहार किया और कोल्लाग-संनिवेश जाकर एक ब्राह्मण के यहाँ पारणा किया। यह कोल्लाक वाणिज्य-ग्राम और उसके उद्यान दूतिपलाश के बीच में पड़ता था।

वर्धमान का जन्मस्थान कुण्डपुर, प्रथम उपसर्गस्थान कर्मारग्राम और प्रथम पारणास्थान कोल्लाक-संनिवेश, ये सव एक-दूसरे के आसपास थे।

कोल्लाग संनिवेश से वर्धमान ने मोराक-संनिवेश की तरफ प्रयाण किया।

१६

चेल्लना (वैदेही) का विवाह

विम्बिसार और सिद्धार्थकुमार मित्र थे। उन दोनों के पिता

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भी आपस में मित्र थे। सिद्धार्थकुमार विम्बिसार से पाँच वर्ष बड़े थे। उन्तीस वर्षों की आयु में बोधिसत्त्व (सिद्धार्थकुमार) ने गृह-त्याग किया था। वे छः वर्षों की तपस्या के बाद बुद्धत्व प्राप्त करके पैंतीस वर्षों की आयु होने पर विम्बिसार के पास पहुँचे।

महापुण्यात्मा विम्बिसार को पन्द्रह वर्षों की आयु में स्वयं पिता ने अभिषिक्त किया और राज्य-प्राप्ति के सोलहवें वर्ष में शास्ता (बुद्ध) ने उनको धर्मोपदेश दिया। बावन वर्षों तक उनने राज्य किया—भगवान् के स्वागत-सम्मेलन से पूर्व पन्द्रह वर्ष और तथागत ('बुद्ध') के जीवन-काल में सैंतीस वर्ष।

विम्बिसार मगध के राजा थे और उनकी राजधानी राजगृह थी। इस समय गंगा के उत्तर वैशाली में वृजि-संघ का राज्य था। वैशाली में गणतंत्र था, जब कि मगध में राजतंत्र। इस प्रकार वैशाली और मगध की शत्रुता स्वाभाविक थी। यह आदर्शों का संघर्ष था।

संघर्ष का दूसरा कारण था मगध की प्रसार-नीति। वह अंग को उदरस्थ कर चुका था। अंग राज्य गंगा के उत्तर और दक्षिण दोनों ओर था। इसके उत्तरी भाग की संज्ञा अंगुत्तराप (अंग+उत्तर+आप=गंगा के उत्तर का अंग) थी। अंगुत्तराप, सदानीरा-कौशिकी के मध्य में होने से, निश्चय ही उपनिषत्कालीन विदेह राज्य में था। जब मगध ने अंग (चम्पा) की विजय की, तब स्वाभाविक था कि लिच्छवि उसे प्राकृतिक सीमा का अति-

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

क्रमण कर गंगा के उत्तर में धनधान्यपूर्ण अंगुत्तराप की ओर बढ़ने से रोकते और विदेह की प्राचीन भूमि (अंगुत्तराप) को पुन: लेने की चेष्टा करते, जो उनके हाथों से निकल गयी थी। किन्तु जब बिम्बिसार ने चम्पा की विजय कर ली, तब वे अंग के गंगोत्तरीय प्रदेश अंगुत्तराप को क्यों छोड़ते, जिसके केवल आपण नामक निगम में ही बीस सहस्र दूकानें थीं ?

मगध और वृजि-संघ जूझ पड़े। लड़ाई कई वर्षों तक चलती रही। इस बीच बिम्बिसार को अम्बपाली से मिलने वैशाली जाना पड़ा था, तो वे वहां छिपकर गये थे।

अन्त में दोनों पक्षों में सन्धि हो गयी। वैशाली के लिच्छवि 'राजा' चेटक की कन्या चेल्लना का विवाह बिम्बिसार से हुआ और इस प्रकार शत्रुता का अन्त हुआ। चेल्लना ने मगध के भावी सम्राट् अजातशत्रु को जन्म दिया, जो वैदेहीपुत्र भी कहलाता था, क्योंकि चेल्लना विदेह (गंगा के उत्तर और गण्डक के पूर्व का प्रदेश) की कन्या होने से वैदेही कहलाती थी।

कहीं-कहीं वैदेही की कथा इस प्रकार मिलती है—

विदेह के राजा के मन्त्रियों में सकल भी था। अन्य मन्त्री उससे ईर्ष्या करते थे। अत: सकल अपने दोनों पुत्रों—गोपाल और सिंह—के साथ वैशाली चला आया। शीघ्र ही सकल वैशाली के प्रमुख नागरिकों में हो गया और कुछ समय के बाद वहां का नायक चुना गया।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

उसके दोनों पुत्रों ने वैशाली में विवाह किया। सिंह के वासवी नामक पुत्री हुई। ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की कि इसे एक लड़का होगा, जो अपने पिता की जान लेकर गद्दी हड़प लेगा। सिंह के उपवासवी नामक दूसरी लड़की भी हुई। ज्योतिषियों ने कहा कि इस लड़की का पुत्र अत्यन्त गुणसम्पन्न होगा।

गोपाल क्रूर और बलशाली था। इस कारण वह लिच्छवियों की वाटिकाएँ उजाड़ डालता था। उसे शान्त करने के लिए संघ ने गोपाल और उसके भाई सिंह को एक अलग शालवन दे दिया।

सकल की मृत्यु के पश्चात् संघ ने उसके पुत्र सिंह को नायक नियुक्त किया। गोपाल ने इसे अपना अपमान समझा और राजगृह चला गया। वहाँ वह बिम्बिसार का मन्त्री हो गया।

कुछ समय बाद बिम्बिसार ने गोपाल की भतीजी और सिंह की बड़ी पुत्री वासवी से विवाह किया। विदेह से आये हुए परिवार में जन्म लेने के कारण वासवी वैदेही कहलायी। उसे एक पुत्र हुआ, जिसका नाम पड़ा अज़ातशत्रु यानी उत्पन्न (जात) होने के पहले से ही शत्रु। यह नामकरण ज्योतिषियों की भविष्यवाणी को ध्यान में रखकर किया गया था।

कहीं-कहीं चेल्लना के नाम कूणिका और श्रीभद्रा भी मिलते हैं।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चेल्लना के विवाह के सम्बन्ध में यह कथा भी उपलब्ध होती है—

वैशाली के 'राजा' चेटक के सात पुत्रियाँ थीं—प्रभावती, पद्मावती, मृगावती, शिवा, ज्येष्ठा, सुज्येष्ठा और चेल्लना। प्रभावती वीतभय (सिन्धुसौवीर) के उदायन से, पद्मावती चम्पा (अंग) के दधिवाहन से, मृगावती कौशाम्बी (वत्स) के शतानीक से, शिवा उज्जयिनी (अवन्ति) के प्रद्योत से और ज्येष्ठा कुण्ड ग्राम के वर्धमान स्वामी के बड़े भाई नन्दिवर्धन से व्याही गयी थीं। सुज्येष्ठा और चेल्लना कुमारी थीं। मगध के राजा श्रेणिक विम्बिसार ने राजा चेटक से सुज्येष्ठा से व्याह करने की प्रार्थना की, परन्तु चेटक ने यह प्रार्थना स्वीकार नहीं की, क्योंकि विम्बिसार उनकी सम्मति में हीन कुल के थे। तब श्रेणिक ने सुज्येष्ठा की अनुमति से उसके हरण की योजना गढ़ी, पर धोखे से सुज्येष्ठा की छोटी वहन चेल्लना का ही हरण कर सके। चेल्लना भी सुन्दरी थी और बिम्बिसार से प्रेम करती थी। अतः विम्बिसार ने उसीसे व्याह कर लिया। सुज्येष्ठा आजन्म कुमारी रही और पीछे भिक्षुणी हो गयी।

मगध और वैशाली के राजकुलों का पारस्परिक रक्त-सम्बन्ध इस वंश-वृक्ष से स्पष्ट हो जाएगा—

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

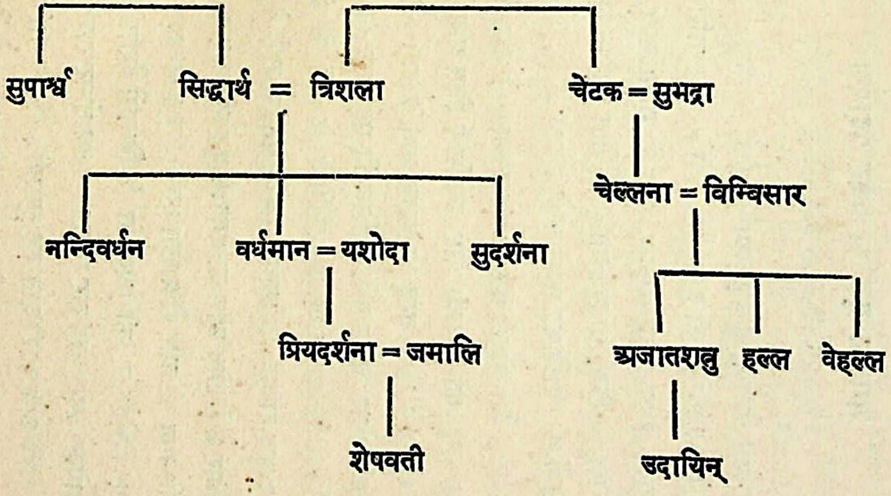

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra
ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

१७

बोधिलाभ के बाद वैशाली में

भगवान् बुद्ध का प्रथम पदार्पण

[लिच्छविपरिषद् की देवपरिषद् से तुलना]

एक बार वैशाली में बड़ी व्याधि फैली। बहुत लोग मरने लगे। देवी-देवताओं की दुहाई मच गयी। श्रेष्ठ धार्मिक नेताओं को बुलाया गया—काश्यपपूरण, मस्करि गोशालिपुत्र, अजित-केशकम्बल, निर्ग्रन्थ ज्ञातिपुत्र आदि कई नेता आये—पर वैशाली-निवासियों की व्याधि का शमन न हो सका।

अन्त में वैशाली की 'संस्था' (जनसभा) ने तय किया कि भगवान् बुद्ध को बुलाया जाए, क्योंकि वे जिस ग्राम में रहते हैं, उसकी सीमा में किसी तरह का उपद्रव नहीं होता। वैशाली में उस समय तोमर नामक पण्डित लिच्छवि-महोत्तरक (=सभापति) थे। वे ही लिच्छवि-गण के प्रतिनिधि के रूप में भेजे गये। भगवान् बुद्ध राजगृह के वेलुवन (=वेणुवन) में रहते थे।

तोमर ने वेणुवन पहुँचकर भगवान बुद्ध की वन्दना की और लिच्छवि-गण की ओर से प्रार्थना रखी। बुद्ध ने कहा कि राजा श्रेणिय विम्बिसार की अनुमति के बिना मैं वैशाली की जनता का आवेदन ग्रहण नहीं कर सकता। तब तोमर राजा विम्बसार से भी मिले और सारी बात कह सुनायी। विम्बिसार ने अनुमति दे दी। शर्त यह रही कि भगवान् के राजगृह से वैशाली जाने

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

में अपने-अपने राज्य में बिम्बिसार और लिच्छवि विदाई एवं स्वागत करेंगे।

बिम्बिसार ने भगवान् के वैशाली जाने का प्रबन्ध अपने राज्य में बहुत अच्छा किया। गंगा नदी मगध और वैशाली राज्यों की सीमा थी। राजगृह से गंगा के दक्षिणी किनारे तक का मार्ग समतल बना दिया गया और तलहत्थी के समान स्वच्छ कर दिया गया। वितानों और चित्रित कपड़ों से शोभावृद्धि की गयी। धूप जलायी गयी, जल सींचा गया और सर्वत्र पुष्प बिखेर दिये गये। नावें बाँध दी गयीं, जिनके द्वारा भगवान् श्रावकसंघ के साथ गंगा पार कर सकें। आधे योजन के अन्तर पर मण्डप, अन्नपान, शय्यासन और अन्य सभी सुखों का विधान किया गया था, जिसमें भिक्षुसंघ के साथ भगवान् को राजगृह से वैशाली जाने में कोई असुविधा न हो।

भगवान् नें भिक्षुसंघ के साथ प्रस्थान किया। राजा श्रेणिय बिम्बिसार ने वल-वाहन, देवीकुमार, अमात्य-परिजन के साथ भगवान् का अनुगमन किया। अपने राजैश्वर्य-प्रदर्शन के लिए वे छत्र, ध्वज, पताका आदि के साथ चल रहे थे। इस प्रकार वे अपने राज्य में गंगा के तीर तक पहुँचे।

वैशाली के लिच्छवियों ने सुना कि इस प्रकार का अच्छा प्रबन्ध राजा श्रेणिय बिम्बिसार ने भगवान् को राजगृह से वैशाली लाने के सम्बन्ध में किया है। सुनकर उन्होंने वैशाली से लेकर गंगा के उत्तरी किनारे तक के मार्ग को समतल बना दिया और

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तलहत्थी के समान स्वच्छ कर दिया। जल सींचा गया और सर्वत्र पुष्प बिखेर दिये गये। वितानों और चित्रित कपड़ों से शोभावृद्धि की गयी। धूप जलायी गयी। स्थान-स्थान पर नटों के नर्तन एवं मल्लों के कुश्ती खेलने का प्रवन्ध हुआ। आधे योजन के अन्तर पर भगवान् और श्रावकसंघ के लिए मण्डप, शय्यासन, पानी और भोजन का विधान किया गया। भीतरी वैशाली से चौरासी हजार और (बाहरी वैशाली से) एक लाख अड़सठ हजार रथों को जोड़, आनन्दघोष करते हुए पुष्पमाला, छत्र, ध्वजपताका और यथेष्ट गन्धमाल्य लेकर, सुन्दर यानों पर आरूढ़ हो, भेरीमृदंगशंख के निनाद के साथ लिच्छवि वैशाली नगर से भगवान् के स्वागतार्थ निकले। उनकी तैयारी से उनका महान् राजैश्वर्य झलक रहा था।

लिच्छवियों की वेषभूषा अपूर्व थी। उनके प्रत्येक दल का साजो सामान एक विशेष रंग का था।

कुछ लिच्छवि आये नीले रंग के घोड़े लगाकर, नीले रंग के रथों पर, नील रश्मि (= ज्योति) छिटकाने वाली नील वर्णा की छड़ियाँ लेकर, नील वस्त्र पहनकर, नील अलंकार धारण कर, नीले रंग की पगड़ियाँ पहनकर, नीले छत्र लगाकर, नील खड्गों, मणियों, पादुकों एवं चामरों के साथ—

नीलाश्वा नील रथा नीला रश्मिप्रतोदमुष्णीषा।
नीला च पंच ककुदा नीला वस्त्रा अलंकारा॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

कुछ लिच्छवि आये पीले रंग के घोड़े लगाकर, पीले रंग के रथों पर, पीली रश्मि छिटकाने वाली छड़ियाँ लेकर, पीले वस्त्र पहनकर, पीले अलंकार धारण कर, पीले रंग की पगड़ियाँ पहनकर, पीले छत्र लगाकर, पीले खड्गों, मणियों एवं पादुकों के साथ—

पीताश्वा पीत रथा पीता रश्मिप्रतोदमुष्णीषा।
पीता च पंच ककुदा पीता वस्त्रा अलंकारा॥

कुछ लिच्छवि आये मंजिष्ठ रंग के घोड़े लगाकर, मंजिष्ठ रंग के रथों पर, मंजिष्ठ रंग की छड़ियाँ लेकर, मंजिष्ठ वस्त्र पहनकर, मंजिष्ठ अलंकार धारण कर, मंजिष्ठ रंग की पगड़ियाँ पहनकर, मंजिष्ठ छत्र लगाकर, मंजिष्ठ मणियों, पादुकों एवं चामरों के साथ—

मंजिष्ठा अश्वरथा मंजिष्ठ रश्मिप्रतोदयष्टी च।
मंजिष्ठ पंच ककुदा मंजिष्ठ वस्त्रअलंकाराः॥

कुछ लिच्छवि आये लाल रंग के घोड़े लगाकर, लाल रंग के रथों पर, लाल रंग की छड़ियाँ लेकर, लाल वस्त्र पहनकर, लाल अलंकार धारण कर, लाल रंग की पगड़ियाँ पहनकर, लाल छत्र लगाकर, लाल खड्गों, मणियों, पादुकों एवं चामरों के साथ—

लोहिता अश्वा रथा च लोहित रश्मिप्रतोदयष्टी च।
लोहित च पंच ककुदा लोहित वस्त्रा अलंकाराः॥

कुछ लिच्छवि आये उजले रंग के घोड़े लगाकर, उजले रंग के रथों पर, उजले रंग की छड़ियाँ लेकर और उजले वस्त्र पहन कर, उजले अलंकार धारण कर, उजले रंग की पगड़ियाँ पहनकर,

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

उजले छत्र लगाकर, उजले खड्ग धारण कर, उजली मणियों, पादुकों एवं चामरों के साथ—

श्वेताश्वा श्वेत रथा श्वेत रश्मिप्रतोदयष्टी च।
श्वेता च पंच ककुदा श्वेता वस्त्रा अलंकाराः॥

कुछ लिच्छवि आये हरे रंग के घोड़े लगाकर, हरे रंग के रथों पर, हरी रश्मि छिटकाने वाली छड़ियाँ लेकर और हरे वस्त्र पहनकर, हरे अलंकार धारण कर, हरे रंग की पगड़ियाँ पहनकर, हरे छत्र लगाकर, हरे खड्ग धारण कर, हरी मणियों, पादुकों एवं चामरों के साथ—

हरिताश्वा हरित रथा हरिता रश्मिप्रतोदयष्टी च।
हरिता च पंच ककुदा हरिता वस्त्रा अलंकाराः॥

कुछ लिच्छवि आये व्यायुक्त (मिश्रित) रंग के घोड़े लगाकर, व्यायुक्त रंग के रथों पर, व्यायुक्त रश्मि छिटकाने वाली छड़ियाँ लेकर, व्यायुक्त वस्त्र पहनकर; व्यायुक्त अलंकार धारण कर, व्यायुक्त रंग की पगड़ियाँ पहनकर, व्यायुक्त छत्र लगाकर, व्यायुक्त खड्ग धारण कर, व्यायुक्त मणियों, पादुकों एवं चामरों के साथ—

व्यायुक्ता अश्वरथा व्यायुक्त रश्मिप्रतोदयष्टी च।
व्यायुक्त पंच ककुदा व्यायुक्त वस्त्रअलंकाराः॥

कुछ लिच्छवि सुवर्ण के छत्रों के साथ नानालंकारों से भूषित कुंजरों पर शोभित थे। कुछ लिच्छवि सब रत्नों से भूषित सुवर्ण की शिविकाओं (पालकियों) पर थे। कुछ लिच्छवि सुवर्णमय रथों पर आरूढ़ थे, जिनपर वैजयन्ती लगी थी, जिनसे नन्दिघोष

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

हो रहा था और जिनपर छत्र, ध्वज एवं पताकाएँ उड़ रही थीं।

इस प्रकार राजऋद्धि और समृद्धि से समन्वित हो वैशाली के लिच्छवि एक लाख अड़सठ हजार यानों पर चढ़कर निकले। गोश्रृंगी और आम्रपालिका भी साथ थीं।

यह विशाल जनसमूह भगवान् के दर्शन एवं स्वागत के लिए गंगातीर पर उपस्थित हुआ।

उस पार राजा श्रेणिय विम्बिसार के राज्य में गंगा का जो किनारा पड़ता था, वहाँ भगवान् बुद्ध मगध के ब्राह्मणों को धर्मकथा द्वारा समुत्तेजित कर चौरासी हजार मागध ब्राह्मणों को (वौद्ध-) धर्म में प्रतिष्ठित कर रहे थे। जब उन्होंने वैशाली के लिच्छवियों को देखा, तब भिक्षुओं से कहा—

"भिक्षुओ! तुमने त्रायस्त्रिंश देवताओं को उनकी अपनी सुदर्शना नगरी से उद्यानभूमि की ओर जाते नहीं देखा है। अब वैशाली के उन लिच्छवियों को देखो, जो ऋद्धि और समृद्धि में उन देवताओं के सदृश हैं। कुछ लिच्छवि कुंजरों (हाथियों) पर हैं, जिन पर सुवर्ण के छत्र हैं; कुछ सुवर्णमयी शिविकाओं पर हैं; कुछ सुवर्णमय रथों पर हैं— इस प्रकार वे हमारी ओर आ रहे हैं। सभी वन्धु-वान्धवों के साथ, तरुणों, मध्य अवस्था वालों और वृद्धों के साथ, अलंकृत होकर, लाह के लाल रंग में रंगे वस्त्र पहनकर एवं विविध सुन्दर रूपों में विचरण करते हुए वे आ रहे हैं।"

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

लिच्छवियों ने गंगा से वैशाली तक का मार्ग इस ऐश्वर्य और तैयारी से सजाया कि उसके सामने मगधराज की तैयारी बहुत पीछे पड़ गयी। उन्होंने तथागत और भिक्षु-संघ के सुख का प्रबन्ध और भी अधिक समृद्धिपूर्ण ढंग से किया।

भगवान् नाव पर आरूढ़ हुए। भिक्षु-संघ भी आरूढ़ हुआ। राजा श्रेणिय बिम्बिसार, भीतरी वैशाली के निवासी, बाहरी वैशाली के निवासी, नाग, यक्ष, चारों लोकपाल, त्रायस्त्रिंश देव, देवेन्द्र शक्र, तुषित देव, यहाँ तक कि सभी देव और मनुष्य गंगा पार करते हुए भगवान् के दर्शन करने लगे। सभी छत्र धारण किये हुए थे। अपूर्व शोभा हो रही थी।

भगवान् ने गंगा पार कर ज्योंही वैशाली की सीमा में प्रवेश किया, त्योंही वहाँ की सारी व्याधि भाग गयी और लोगों को स्वास्थ्य-लाभ हुआ।

१८

महावन की कूटागारशाला

[चैत्यों का दान]

जब भगवान् बुद्ध ने बोधिलाभ के बाद पहली बार वैशाली पहुँचकर वहाँ के रोग का निवारण किया और भिक्षुसंघ के साथ बैठे, तब लिच्छवियों ने भगवान् से पूछा—"भगवान् भीतरी वैशाली में रहेंगे या बाहरी वैशाली में ?"

भगवान् ने कहा—"हे वासिष्ठो ! मैं न तो भीतरी वैशाली में रहूँगा, न बाहरी वैशाली में। मैंने भगवती गोशृंगी का

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

निमन्त्रण स्वीकार कर लिया है। अतः मैं महावन में रहूँगा, जो वैशाली से उत्तर की ओर फैला हुआ है।"

गोश्रृंगी के यहाँ भिक्षु-संघ सहित भोजन कर भगवान् शालवन को गये। लिच्छवियों ने भगवान् के सुख के लिए वहाँ एक प्रवन्ध भी न छोड़ा।

लिच्छवियों ने भगवान् से कहा—"भगवन्! यही है हमलोगों के उद्यानों में महाउद्यान—महावन, जिसमें कूटागार-शाला है। इसे हमलोग भिक्षु-संघ के साथ आपको समर्पित करते हैं।"

भगवान् ने इस दान को स्वीकार कर लिया और भिक्षुओं को वहाँ आराम एवं विहार करने की आज्ञा दे दी।

महावन नगर के वाहर हिमवन्त पर्वत तक फैला हुआ था। अपनी विशालता के कारण यह 'महावन' के नाम से प्रसिद्ध था। इस वन में एक संघाराम की स्थापना हुई। स्तम्भों पर दो मंजिलों वाले प्रासाद का निर्माण हुआ, जिसका शिखर या कूट परम विशिष्ट था। अतः इसे 'कूटागारशाला' कहते थे। यह देव-विमान या देवरथ जैसा लगता था। इसका ऊपरी भाग दीवारों से न वनकर स्तम्भों पर बना था। शिखर या कूट-ऊपरी मंजिल के ऊपर से निकला था।

कूटागार-विहार को करीव हजार वर्ष वाद चीनी यात्री फाहियान ने देखा था—"नगर के उत्तर महावन है। इसमें दो

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मंजिलों वाला विहार है। इस विहार में बुद्ध निवास करते थे। यहीं आनन्द का अर्धांग-स्तूप भी है।"

ह्वेनसांग के समय तक कूटागारशाला उजाड़ हो चुकी थी।

❀ ❀ ❀

महावन से भगवान् चापाल चैत्य आये।

लिच्छवियों ने पूछा—"भगवान् कहाँ हैं ?"

भिक्षु बोले—"हे वासिष्ठो ! भगवान् दिन में विहार करने के लिए महावन से चापाल चैत्य चले गये हैं।"

तब लिच्छवियों ने चापाल चैत्य भिक्षु-संघ सहित भगवान् को समर्पित कर दिया।

इसी प्रकार जब लिच्छवियों ने भगवान् को सप्ताम्र चैत्य, बहुपुत्र चैत्य, गौतमक चैत्य, कपिनह्य चैत्य और मर्कटह्रदतीर चैत्य में दिवाविहार करते पाया, तब उनने ये सब चैत्य बुद्ध-प्रमुख भिक्षु-संघ को समर्पित कर दिये।

आम्रपाली ने भोजन कराकर भगवान् और भिक्षु-संघ को आम्रवन दे दिया।

बालिका ने भोजन कराकर भगवान् और भिक्षु-संघ को बालिका-छवि प्रदान कर दी।

इसे ही बालिकाराम या बालुकाराम भी कहते थे।

जिस प्रकार भगवान गौतम बुद्ध ने लिच्छवियों के प्रतिद्वन्द्वी मागधों की राजधानी राजगृह में अपना केन्द्र बना लिया था,

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

उसी प्रकार अब उन्होंने वैशाली में प्रवचन और उपदेश देकर इस नगरी को बुद्ध, धर्म और संघ का प्रबल केन्द्र बना लिया।

१६

भिक्षुणी-संघ की स्थापना

बुद्ध भगवान् शाक्यों के देश में कपिलवस्तु के न्यग्रोधाराम में विहार करते थे।

तब महाप्रजापती गौतमी जहाँ भगवान् थे वहाँ आयीं। आकर भगवान् की वन्दना कर एक ओर खड़ी हो गयीं। एक ओर खड़ी महाप्रजापती गौतमी ने भगवान् से कहा—"भन्ते! अच्छा हो, यदि मातृग्राम (= स्त्रियाँ) भी तथागत के दिखाये धर्म (धर्म-विनय) में घर से बेघर हो प्रव्रज्या पावें।"

"नहीं गौतमी! यह तुझे अच्छा नहीं लगना चाहिए कि स्त्रियाँ तथागत के दिखाये धर्म में घर से बेघर हो प्रव्रज्या पावें।"

दूसरी बार भी महाप्रजापती गौतमी ने भगवान् से कहा और भगवान् ने अस्वीकार किया।

तीसरी बार भी यही बात हुई।

तब महाप्रजापती गौतमी—भगवान् तथागत-प्रवेदित धर्म-विनय (= बुद्ध के दिखलाये धर्म) में स्त्रियों को घर छोड़ बेघर हो प्रव्रज्या लेने की अनुज्ञा नहीं करते—जान, दुःखी = दुर्मना अश्रुमुखी हो रोती भगवान् का अभिवादन कर प्रदक्षिणा कर चली गयीं।

* * *

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भगवान् कपिलवस्तु में इच्छानुसार विहार कर जिधर वैशाली थी, उधर चारिका को चल दिये। क्रमशः चारिका करते हुए, जहाँ वैशाली थी वहाँ पहुँचे। भगवान् वैशाली में महावन की कूटागारशाला में विहार करते थे। तव महाप्रजापती गौतमी, केशों को कटाकर काषाय वस्त्र पहन वहुत-सी 'शाक्य-स्त्रियों' के साथ, जिधर वैशाली थी उधर चलीं। क्रमशः चलकर वैशाली में जहाँ महावन की कूटागारशाला थी वहाँ पहुँचीं। महाप्रजापती गौतमी फूले पैरों, धूल-भरे शरीर से दुःखी = दुर्मना अश्रुमुखी, रोती, द्वारकोष्ठक (= वड़ा द्वार, जिस पर कोठा होता था) के वाहर जा खड़ी हुई। आयुष्मान् आनन्द ने महाप्रजापती को इस हालत में खड़ा देखकर पूछा—

"गौतमी! तू क्यों फूले पैरों, धूल-भरे शरीर से दुःखी = दुर्मना अश्रुमुखी, रोती, द्वारकोष्ठक के वाहर खड़ी है?"

"भन्ते! आनन्द! तथागत-प्रवेदित धर्म-विनय में स्त्रियों की घर छोड़ वेघर प्रव्रज्या की भगवान् अनुज्ञा नहीं देते।"

"गौतमी! तू यहीं रह। बुद्ध-धर्म में स्त्रियों की प्रव्रज्या के लिए मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ।"

तव आयुष्मान आनन्द जहाँ भगवान् थे वहाँ गये। जाकर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर वैठ भगवान् से बोले—

"भन्ते! महाप्रजापती गौतमी फूले पैरों, धूल-भरे शरीर से दुःखी दुर्मना अश्रुमुखी, रोती हुई द्वारकोष्ठक के वाहर खड़ी है कि भगवान् बुद्ध-धर्म में स्त्रियों की प्रव्रज्या की अनुज्ञा नहीं

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

देते। भन्ते ! अच्छा हो, यदि स्त्रियों को बुद्ध-धर्म में प्रव्रज्या मिले।"

"नहीं आनन्द ! यह तुझे नहीं रुचना चाहिए कि तथागत के जतलाये धर्म में स्त्रियों की घर से वेघर हो प्रव्रज्या हो।"

दूसरी वार भी आयुष्मान् आनन्द ने भगवान् से कहा और भगवान् ने अस्वीकार किया।

तीसरी वार भी यही वात हुई।

तव आयुष्मान् आनन्द ने सोचा—'भगवान् तथागत-प्रवेदित धर्म-विनय में स्त्रियों की घर से वेघर हो प्रव्रज्या की अनुज्ञा नहीं देते। क्यों न मैं दूसरे प्रकार से स्त्रियों की प्रव्रज्या की अनुज्ञा माँगूँ ?' यह सोच आयुष्मान् आनन्द ने भगवान् से कहा—

"भन्ते ! क्या तथागत-प्रवेदित धर्म में घर से वेघर प्रव्रजित हो स्त्रियाँ अर्हत् बन सकती हैं तथा अन्य फलों को साक्षात् कर सकती हैं ?"

"साक्षात् कर सकती हैं, आनन्द !"

"यदि भन्ते ! तथागत-प्रवेदित धर्म-विनय में प्रव्रजित हो स्त्रियाँ अर्हत्त्व-फल एवं अन्य फलों को साक्षात् करने योग्य हैं, तो भगवान् की मौसी महाप्रजापती गौतमी तो अभिभाविका, पोषिका एवं क्षीरदायिका होने के कारण बहुत उपकार करने वाली हैं—जननी के मरने पर उन्होंने भगवान् को दूध पिलाया था। इसलिए भन्ते ! अच्छा हो, यदि स्त्रियों को प्रव्रज्या मिले।"

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

"आनन्द ! यदि महाप्रजापती गौतमी आठ गुरु-धर्मों (=बड़ी शर्तों) को स्वीकार करे, तो उसकी उपसम्पदा हो।"

तब आयुष्मान् आनन्द भगवान् के पास इन आठ गुरुधर्मों को समझ (=उद्ग्रहण=पढ़) कर जहाँ महाप्रजापती गौतमी थीं वहाँ गये। जाकर महाप्रजापती गौतमी से बोले—

"यदि गौतमी ! तू आठ गुरु-धर्मों को स्वीकार करे, तो तेरी उपसम्पदा हो।"

आनन्द ने उन आठ गुरु-धर्मों को बतलाया। तब महाप्रजापती ने कहा—

"भन्ते ! आनन्द ! जैसे शौकीन शिर से नहाये अल्पवयस्क, तरुण स्त्री या पुरुष उत्पल की माला, वार्षिक (=जूही) की माला या अतिमुक्तक (=मोतिया) की माला को पा, दोनों हाथों में ले, उसे उत्तम अंग शिर पर रखता है, वैसे ही भन्ते ! मैं इन आठ गुरुधर्मों को स्वीकार करती हूँ।"

तब आयुष्मान् आनन्द जहाँ भगवान् थे वहाँ गये। जाकर अभिवादन कर एक ओर बैठकर भगवान् से बोले—

"भन्ते ! प्रजापती गौतमी ने यावज्जीवन अनुल्लंघनीय आठ गुरु-धर्मों को स्वीकार किया।"

"आनन्द ! यदि तथागत-प्रवेदित धर्म-विनय में स्त्रियाँ प्रव्रज्या न पातीं, तो यह ब्रह्मचर्य चिरस्थायी होता, सद्धर्म सहस्र वर्षों तक ठहरता। लेकिन चूँकि आनन्द ! स्त्रियाँ तथागत-

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

प्रवेदित धर्म-विनय में प्रव्रजित हुई हैं, अतः ब्रह्मचर्य चिरस्थायी न होगा, सद्धर्म पाँच सौ वर्ष ही ठहरेगा।"

२०
वैशाली में बुद्ध के वर्षावास

उन्तीस वर्षों की अवस्था में सिद्धार्थ-कुमार ने घर छोड़ा। ज्ञान की खोज में वे वैशाली भी आये थे।

पैंतीस वर्षों की अवस्था में वैशाख की पूर्णिमा को सिद्धार्थ-कुमार को ज्ञान प्राप्त हुआ और तब से वे बुद्ध कहलाने लगे। पैंतालीस वर्षों तक उनने धर्म-प्रचार किया।

वर्षा ऋतु में बुद्ध किसी एक स्थान पर ठहर जाते थे। इस प्रकार बुद्ध होने पर उन्होंने पैंतालीस वर्षावास किये। इनमें पञ्चम और अन्तिम (पैंतालीसवाँ) वर्षावास बुद्ध ने वैशाली में किये। यों तो बुद्ध वैशाली में कई वार आये और उनके अनेक महत्वपूर्ण उपदेश यहाँ हुए।

इस प्रकार स्वयं बुद्ध भगवान् ने इस स्थान को वार-वार अपनी चरण-रज देकर पवित्र बनाया।

२१
वैशाली में महावीर के वर्षावास

तीस वर्षों की उम्र में वर्धमान ने घर छोड़ा और ज्ञान की खोज में निकल पड़े। इस निष्क्रमण के बाद वे बयालीस वर्षों तक

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जीवित रहे। प्रथम भाग गृहस्थ-जीवन और द्वितीय भाग श्रमण-जीवन माने जाते हैं।

श्रमण-जीवन के बयालीस वर्षों में उनके बारह वर्षावास वैशाली-वाणिज्यग्राम में हुए। विवरण इस प्रकार है।

(ज्ञानप्राप्ति के पूर्व)

११ वाँ वर्षावास ... ... वशाली

(ज्ञानप्राप्ति के पश्चात्)

१४ वाँ वर्षावास ... ... वैशाली
१५ वाँ वर्षावास ... ... वाणिज्यग्राम
१७ वाँ वर्षावास ... ... वाणिज्यग्राम
२० वाँ वर्षावास ... ... वैशाली
२१ वाँ वर्षावास ... ... वाणिज्यग्राम
२३ वाँ वर्षावास ... ... वाणिज्यग्राम
२८ वाँ वर्षावास ... ... वाणिज्यग्राम
३० वाँ वर्षावास ... ... वाणिज्यग्राम
३१ वाँ वर्षावास ... ... वैशाली
३२ वाँ वर्षावास ... ... वैशाली
३५ वाँ वर्षावास ... ... वैशाली

ऊपर केवल वर्षावासों का विवरण है। यों भी महावीर कई वार वैशाली-क्षेत्र में आये थे और उनके उपदेश यहाँ हुए थे।

इस प्रकार वैशाली महावीर को जन्म दे एवं वार-वार उनकी चरणरज से पावन हो धन्य हुई।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

२२

महावीर का केवलज्ञान

उत्तम ज्ञान, उत्तम दर्शन, उत्तम चरित और उत्तम विहार के साथ वर्धमान महावीर बारह वर्षों तक कठोर तपस्या और ध्यान करते रहे।

मध्यमा के उद्यान से विचरते हुए श्रमण भगवान् महावीर जंभियगाम (जृम्भिकग्राम) के समीप उज्जुवालुया (ऋजुपालिका, रिजुवालुका, रिजुवालिया) नदी के उत्तर तट पर स्थित देवालय के समीप सालवृक्ष के नीचे उकडु आसन से ध्यानावस्थित हुए। कड़ी धूप लग रही थी। अढ़ाई दिनों तक उन्होंने निर्जल उपवास किया। तब वैशाख शुक्ला दशमी के दिन चौथे पहर के समय उन्होंने केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया।

अब श्रमण भगवान् महावीर अर्हत्, जिन (=विजेता), केवलिन्, सर्वज्ञ एवं सर्वदर्शी हुए और धर्मप्रचार में लग गये।

२३

महावीर की धर्मसभाएँ

भगवान् महावीर की कैवल्य-प्राप्ति का समाचार पाकर देवों ने स्वर्ग से आकर समवसरण (धर्मसभा) की योजना की। इस प्रथम समवसरण में देवता ही उपस्थित हुए थे। अतः किसी प्राणी को इसका लाभ न मिल सका। यह आश्चर्यजनक घटना 'अछेरा' (आश्चर्यजनक, अस्वाभाविक) नाम से प्रसिद्ध है।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भगवान् महावीर का दूसरा समवसरण (धर्मसभा) मध्यम नगरी के महासेन उद्यान में हुआ। वैशाख शुक्ल एकादशी को प्रातःकाल से ही मध्यमा के उस उद्यान की ओर नागरिकों के समूह उमड़ पड़े थे। थोड़े ही समय में महासेन-वन में सभा के रूप में एक नगर बस गया।

उस महती सभा में भगवान् महावीर ने अर्धमागधी भाषा में एक पहर तक धर्मोपदेश दिया और मनुष्यजीवन को अधिक महत्त्वपूर्ण एवं दुर्लभ बताते हुए उसे सफल बनाने के लिए विभिन्न व्रतों पर प्रकाश डाला।

भगवान् महावीर के ज्ञान और लोकोत्तर उपदेश की सर्वत्र प्रशंसा होने लगी। अनेक लोगों ने उस दिन उनसे दीक्षा ली। इनमें ग्यारह विशेष प्रसिद्ध हैं—इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, व्यक्त, सुधर्मा, मण्डित, मौर्यपुत्र, अकम्पित, अचलभ्राता, मेतार्य और प्रभास। ये 'गणधर' (समुदाय के नायक) पद से सुशोभित हुए।

धीरे-धीरे महावीर अपने धर्म का अधिकाधिक प्रचार करने लगे।

२४

सिंह सेनापति की बौद्धधर्म में दीक्षा

भगवान् बुद्ध वैशाली में महावन की कूटागारशाला में विहार करते थे।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

उस समय बहुत से प्रतिष्ठित लिच्छवि संस्थागार (=गणतंत्र-सभागृह) में बैठे थे। वे एकत्रित हो बुद्ध का गुण बखानते थे, धर्म का गुण बखानते थे और संघ का गुण बखानते थे।

निगंठों (=जैनों) का श्रावक सिंह सेनापति उस सभा में बैठा था। सिंह सेनापति के चित्त में हुआ—'निःसंशय भगवान् अर्हत् सम्यक्-संबुद्ध होंगे, तब तो ये बहुत से- प्रतिष्ठित लिच्छवि उनका गुण बखान रहे हैं। क्यों न मैं उन भगवान् अर्हत् सम्यक्-संबुद्ध के दर्शन के लिए चलूँ ?'

तब सिंह सेनापति जहाँ निगंठ नाथपुत्त (वर्धमान महावीर) थे, वहाँ गया। जाकर निगंठ नाथपुत्त से बोला—

"भन्ते ! मैं श्रमण गौतम को देखने के लिए जाना चाहता हूं।"

"सिंह ! क्रियावादी होते हुए तू क्या अक्रियावादी (=अकर्मवादी) श्रमण गौतम के दर्शन को जाएगा ? सिंह ! श्रमण गौतम अक्रियावादी हैं, श्रावकों को अक्रियावाद का उपदेश करते हैं।"

तब सिंह सेनापति की भगवान् बुद्ध के दर्शन के लिए जाने की जो इच्छा थी, वह शान्त हो गयी।

दूसरी बार भी प्रतिष्ठित लिच्छवियों द्वारा संस्थागार में बुद्ध, धर्म और संघ के गुणों का बखाना जाना सुन सिंह ने निगंठ नाथपुत्त (=निर्ग्रन्थ ज्ञातृपुत्र, वर्धमान महावीर) से पूछा और वही उत्तर पाकर चुप रह गया।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तीसरी वार भी वहुत-से प्रतिष्ठित लिच्छवियों द्वारा बुद्ध, धर्म और संघ की प्रशंसा सुन सिंह सेनापति ने सोचा—'पूछूँ या न पूछूँ ? निगंठ नाथपुत्त मेरा क्या करेंगे ? क्यों न निगंठ नाथपुत्त को विना पूछे ही मैं उन भगवान् अर्हत् सम्यक्-संबुद्ध के दर्शन के लिए जाऊँ ?'

तव सिंह सेनापति पाँच सौ रथों के साथ दिन-ही-दिन (=दो पहर) को भगवान् बुद्ध के दर्शन के लिए वैशाली से निकला। जितना यान (=रथ) का रास्ता था, उतना यान से जाकर, यान से उतर, पैदल ही आराम में प्रविष्ट हुआ। सिंह सेनापति जहाँ भगवान् बुद्ध थे, वहाँ गया। जाकर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर वैठ गया। एक ओर वैठे हुए सिंह सेनापति ने भगवान् बुद्ध से यह कहा—

"भन्ते ! मैंने सुना है कि 'श्रमण गौतम अक्रियावादी हैं, अक्रिया के लिए धर्म का उपदेश करते हैं, उसी की ओर शिष्यों को ले जाते हैं !' भन्ते ! जो ऐसा कहते हैं, क्या वे भगवान् के वारे में ठीक कहते हैं ? वे भगवान् की मिथ्या निन्दा तो नहीं करते ? भन्ते ! हम भगवान् की निन्दा करना नहीं चाहते।"

तव बुद्ध ने सिंह सेनापति को समझाया कि 'मैं पाप को अक्रिया कहता हूं और पुण्य को क्रिया।'

यह सुन सिंह सेनापति ने भगवान् बुद्ध से कहा—

"आश्चर्य ! भन्ते ! आश्चर्य ! भन्ते ! आप मुझे उपासक स्वीकार करें।"

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

"सिंह ! सोच-समझकर कहो। तुम्हारे जैसे सम्भ्रान्त मनुष्यों का सोच-समझकर निश्चय करना ही अच्छा है।"

"भन्ते ! भगवान् के इस कथन से मैं और भी सन्तुष्ट हुआ। भन्ते ! दूसरे तैर्थिक (=अन्य मतावलम्बी) मुझ जैसा शिष्य पाकर सारी वैशाली में पताका उड़ाते—'सिंह सेनापति हमारा शिष्य (=श्रावक) हो गया'। लेकिन भगवान मुझे कहते हैं—'सोच-समझकर सिंह ! निश्चय करो'। यह मैं दूसरी बार भगवान् की शरण जाता हूँ, धर्म और भिक्षु-संघ की भी शरण जाता हूँ।"

"सिंह ! तुम्हारा घर दीर्घकाल से निगंठों के लिए प्याउ की तरह रहा है, उनके जाने पर 'पिण्ड न देना चाहिए' ऐसा मत समझना।"

"भन्ते ! इससे मैं और भी प्रसन्न-मन, सन्तुष्ट और अभिरत हुआ। मैंने सुना था भन्ते ! कि श्रमण गौतम ऐसा कहते हैं—'मुझे ही दान देना चाहिए, दूसरों को दान न देना चाहिए'। भन्ते ! भगवान् तो मुझे निगंठों को भी दान देने को कहते हैं। हम भी भन्ते ! इसे युक्त समझेंगे। यह भन्ते ! मैं तीसरी बार भगवान की शरण जाता हूँ, धर्म और संघ की शरण जाता हूँ।"

तब भगवान बुद्ध ने सिंह सेनापति को कथाएँ सुनायीं, जिस कारण उसे धर्म-चक्षु उत्पन्न हुआ। भगवान् से वह बोला—

"भन्ते ! भिक्षु-संघ के साथ भगवान् मेरा कल का भोजन

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स्वीकार करें।"

भगवान् ने मौन से स्वीकार किया।

तब सिंह सेनापति भगवान् की स्वीकृति को जान आसन से उठ भगवान् का अभिवादन कर प्रदक्षिणा कर चला गया।

सिंह सेनापति ने उस रात के बीतने पर अपने घर में उत्तम खाद्य-भोज्य तैयार करा भगवान् बुद्ध को काल की सूचना दी। भगवान् बुद्ध पूर्वाह्ण समय सिंह सेनापति के घर पर गये और जाकर भिक्षु-संघ के साथ बिछे आसन पर बैठे। उस समय बहुत-से निगंठ (=जैन साधु) वैशाली में एक सड़क से दूसरी सड़क पर, एक चौरस्ते से दूसरे चौरस्ते पर, बाँह उठाकर चिल्लाते थे और सिंह सेनापति एवं श्रमण गौतम की निन्दा करते थे। सिंह सेनापति ने इस निन्दा की परवाह न की और बुद्ध-सहित भिक्षु-संघ को अपने हाथ से उत्तम खाद्य-भोज्य से संतर्पित और परिपूर्ण किया।

२५

बुद्ध का प्रभाव

एक बार बहुत-से लिच्छवि युवक शिकार खेलने चले। वे धनुष-बाणों से सज्जित थे। उनके साथ शिकारी कुत्ते भी थे। शिकार की खोज में वे महावन में घूमने लगे।

इसी समय एक अत्यन्त आश्चर्यजनक घटना हुई।

महावन में एक वृक्ष के नीचे भगवान् बुद्ध बैठे थे। उन्हें

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

देखकर लिच्छवि युवकों ने अपने धनुष-बाण फेंक दिये, अपने शिकारी कुत्ते घर भेज दिये और हाथ जोड़ कर भगवान् बुद्ध के समीप बैठ गये। उन पर भगवान् की उपस्थिति का प्रभाव व्याप्त था। वे मूक और निश्शब्द थे। उनकी मुद्रा से श्रद्धा टपक रही थी।

इसी समय महानाम नामक एक लिच्छवि वृद्ध भगवान् बुद्ध के चरणों में भक्ति अर्पित करने आये। लिच्छवि युवकों की हालत देख उन्हें महान् आश्चर्य हुआ। लिच्छवि युवक जिन्दा-दिल थे, शहर में उत्पात मचाते फिरते थे; मगर यहाँ महात्मा बुद्ध के सामने भक्त-रूप में चुपचाप बैठे थे! महानाम ने भगवान् बुद्ध से कहा—

"भन्ते! लिच्छवि युवक बड़े ही दुष्ट हैं। जो कुछ भी मिठाई या फल परिवारों को भेजे जाते हैं, उन्हें ये लूटकर चट कर जाते हैं। प्रतिष्ठित स्त्रियों और बालिकाओं पर ये धूल फेंकते हैं। ऐसे युवक अभी बिलकुल मूक और शान्त हैं—हाथ जोड़कर आपकी वन्दना करते हैं!"

निस्सन्देह यदि वैशाली बुद्ध को प्यारी थी, तो बुद्ध भी वहाँ-वालों को प्यारे थे।

२६
लिच्छवियों का दबदबा

राजा प्रसेनजित् के राज्य में रुद्र लोहित-पाणि, मार-काट-

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

संलग्न, प्राणि-भूतों में दयारहित अंगुलिमाल नामक डाकू था। उसने ग्रामों को भी अ-ग्राम कर दिया था, निगमों को भी अ-निगम कर दिया था, जनपद को भी अ-जनपद कर दिया था।

एक वार भगवान् बुद्ध उस रास्ते से निकले। अंगुलिमाल ने उन्हें पकड़ने की चेष्टा की, पर असफल रहा। तब वह उनका शिष्य हो गया।

भगवान् अंगुलिमाल को श्रमण वना जहाँ श्रावस्ती थी वहाँ चारिका के लिए चले। क्रमशः चारिका करते जहाँ श्रावस्ती थी, वहाँ पहुँचे। श्रावस्ती में भगवान् अनाथ-पिंडक के आराम जेतवन में विहार करते थे।

उस समय राजा प्रसेनजित् कोसल के अन्तःपुर के द्वार पर वड़ा जन-समूह एकत्रित था। कोलाहल हो रहा था—"देव! तेरे राज्य में अंगुलिमाल नामक डाकू है। उसने ग्रामों को भी अ-ग्राम, निगमों को भी अ-निगम और जनपदों को भी अ-जनपद कर दिया है। वह मनुष्यों को मारकर अंगुलियों की माला पहनता है। देव! उसको रोक।"

तव राजा प्रसेनजित् कोसल पाँच सौ घोड़सवारों के साथ मध्याह्न को श्रावस्ती से निकल जिधर आराम था, उधर गया। जितनी यान की भूमि थी, उतनी यान से जा, यान से उतर पैदल जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। जाकर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर वैठा। एक ओर वैठे राजा प्रसेनजित कोसल को भगवान् ने कहा—

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

"क्या महाराज ! तुझ पर राजा मागध श्रेणिक बिम्बिसार बिगड़ा है या वैशालिक लिच्छवि या दूसरे विरोधी राजा ?"

"भन्ते ! न मुझ पर राजा मागध श्रेणिक बिम्बिसार बिगड़ा है, न वैशालिक लिच्छवि बिगड़े हैं, न दूसरे विरोधी राजा। भन्ते ! मेरे राज्य में अंगुलिमाल नामक डाकू बहुत उत्पात कर रहा है। मैं उसी का निवारण करने जा रहा हूँ।"

"यदि महाराज ! तू अंगुलिमाल को काषायवस्त्रधारी, प्रव्रजित, प्राणहिंसाविरत, धर्मात्मा देखे, तो क्या करे ?"

"हम भन्ते ! उसे निमन्त्रित करेंगे। किन्तु उस दुःशील पापी को ऐसा शील-संयम कहाँ से होगा ?"

तब भगवान् ने प्रसेनजित् को अंगुलिमाल दिखलाया और राजा को सारी कथा ज्ञात हुई।

❀ ❀ ❀

लिच्छवियों के कोप से कोसलराज्य का होश-हवास बिगड़ सकता था, यह लिच्छवियों की शक्ति का परिचय देता है।

२७

अभिषेक-मङ्गल-पुष्करिणी

नगर के भीतर संस्थागार, कूटागारों और प्रासादों के अतिरिक्त एक महत्त्वपूर्ण वस्तु थी अभिषेक- पुष्करिणी।

वैशाली के प्रत्येक 'राजा' को राजतिलकोत्सव के समय नहाने के लिए इसी तालाब के पानी की जरूरत पड़ती थी। वह पानी

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नहीं होने से राजाओं का 'अभिषेक' सम्पूर्ण नहीं माना जाता था। इस पानी को लिच्छवि राजाओं के अतिरिक्त दूसरा कोई छू भी न सकता था। पुष्करिणी के भीतर और बाहर बड़ा जबर्दस्त पहरा था। ऊपर लोहे का जाल बिछा हुआ था, जिससे उड़ते हुए पंछी तक उसमें चोंच न डुबो सकते थे।

एक बार श्रावस्ती के राजसेनापति बन्धुल मल्ल की स्त्री मल्लिका ने अपनी गर्भावस्था में यह इच्छा प्रकट की कि 'मैं वैशाली नगर में गण-राजकुलों की अभिषेक-मङ्गल-पुष्करिणी में उतर कर नहाकर पानी पीना चाहती हूँ।' बन्धुल 'अच्छा' कह अपनी स्त्री को रथ पर चढ़ा एक हजार तीरन्दाज फौज के साथ श्रावस्ती से निकला। रथ हाँकते हुए वह महालि लिच्छवि को दिये द्वार से वैशाली में प्रविष्ट हुआ।

बन्धुल सेनापति ने रथ से उतर कर बेंत से पहरेवालों को पीटकर भगा दिया। लोहजाल को काटकर पुष्करिणी के भीतर भार्या को नहला, स्वयं भी नहा, फिर उसी रथ पर चढ़ नगर से निकलकर आने के रास्ते से ही चल दिया।

पहरेवालों ने लिच्छवियों से कहा। लिच्छवि राजा क्रुद्ध होकर पाँच सौ रथों पर आरूढ़ हो 'बन्धुल मल्ल को पकड़ेंगे' कह निकले। लोगों ने उस समाचार को महालि से कहा। महालि ने कहा—"मत जाओ। वह तुम सब को मार डालेगा।" उन्होंने भी कहा—"हम जाएँगे ही।" लड़ाई में वे सभी मारे गये।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

वन्धुल मल्लिका को ले श्रावस्ती चला गया।

२८

महावीर का निर्वाण

भगवान् महावीर अपने जीवन के एकहत्तर वर्ष समाप्त कर बहत्तरवें वर्ष में प्रवेश कर चुके।

इस वर्ष का वर्षा-चातुर्मास्य पावा (मध्यमा पावा) में व्यतीत करने का निर्णय करके आप राजा हस्तिपाल की रज्जुग-सभा में पधारे और यहीं वर्षा-चातुर्मास्य की स्थिरता की।

एक-एक करके वर्षाकाल के तीन महीने वीत गये और चौथा महीना लगभग आधा बीतने आया। कार्तिक-अमावस्या का प्रातःकाल हो चुका था। उस समय राजा हस्तिपाल के रज्जुग-सभा-भवन में भगवान् महावीर की अन्तिम उपदेश-सभा हुई।

भगवान् ने अपने जीवन की समाप्ति निकट जानकर अन्तिम उपदेश की अखण्ड धारा चालू की, जो अमावस्या की पिछली रात तक चलती रही। अमावस्या की पिछली रात को श्रमण भगवान् महावीर का निर्वाण हुआ। वे जन्म, जरा और मरण के वन्धनों को छिन्न कर सिद्ध, बुद्ध और मुक्त बन गये।

जिस रात को श्रमण भगवान् महावीर कालगत एवं सर्वदुःख-हीन हुए, उसके बाद वाली रात को नव मल्लकि, नव लेच्छकि (=लच्छवि) एवं काशी-कोसल के अठारह गणराजों ने दीपावली

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

का आयोजन किया, क्योंकि उन्होंने कहा—"चूँकि भावज्योति चली गयी है, इसलिए हम द्रव्य से ज्योति करेंगे।"

ग्यारह गणधरों में नौ तो भगवान् महावीर के जीवनकाल में ही मुक्त हुए और इन्द्रभूति गौतम ने भी भगवान् के निर्वाण के दिन शरीर त्याग दिया। केवल सुधर्मा भगवान् के बाद भी जीवित रहे।

२६

निगंठ नाथपुत्त के संघ में भेद

एक समय भगवान् बुद्ध शाक्यदेश में सामगाम में विहार करते थे।

उस समय निगंठ नाथपुत्त (= निर्ग्रन्थ ज्ञातृपुत्र, जैन तीर्थंकर महावीर) अभी-अभी पावा में मरे थे। उनके मरने पर निर्ग्रन्थों (= जैनों) के दो भाग हो गये। वे आपस में कलह और विवाद करते, एक दूसरे को मुख रूपी शक्ति से छेदते विहर रहे थे—

'तू इस धर्म-विनय (= धर्म) को नहीं जानता, मैं इस धर्म-विनय को जानता हूँ।'

'तू क्या इस धर्म-विनय को जानेगा? तू मिथ्यारूढ़ है, मैं सत्यारूढ़ हूँ।'

'मेरा कथन अर्थ-सहित है, तेरा कथन अर्थ-रहित है।'

'तू पूर्व बोलने की बात को पीछे बोला, पीछे बोलने की बात को पहले बोला।'

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

'तेरा वाद विना विचार का उलटा है।'

नाथपुत्तीय निगंठों में मानो युद्ध ही हो रहा था।

तब चुन्द समणुद्देस पावा में वर्षावास कर जहाँ सामगाम था, जहाँ आयुष्मान् आनन्द थे, वहाँ गया। जाकर आयुष्मान् आनन्द का अभिवादन कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे चुन्द समणुद्देस ने आयुष्मान् आनन्द को कहा—

"भन्ते! निगंठ नाथपुत्त अभी-अभी पावा में मरे हैं। उनके मरने पर नाथपुत्तीय निगंठों में मानो युद्ध ही हो रहा है।"

"चुन्द! भगवान् के दर्शन के लिए यह बात भेंट-रूप है। आओ चुन्द! जहाँ भगवान् हैं, वहाँ चलें। चलकर यह बात भगवान् को कहें।"

"अच्छा भन्ते!"

तब आयुष्मान् आनन्द और चुन्द श्रमणोद्देश जहाँ भगवान् थे, वहाँ गये। जाकर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठे हुए आयुष्मान् आनन्द ने भगवान् से कहा—

"भन्ते! यह चुन्द समणुद्देस ऐसा कह रहे हैं—'भन्ते! निगंठ नाथपुत्त अभी-अभी पावा में मरे हैं। उनके मरने पर नाथपुत्तीय निगंठों में मानो युद्ध ही हो रहा है।' तब भन्ते! मुझे ऐसा होता है— भगवान् के बाद भी कहीं संघ में ऐसा ही विवाद न उत्पन्न हो। यह विवाद अहितकर होगा।"

तब भगवान् ने इस विषय पर उपदेश दिया। आयुष्मान् आनन्द ने सन्तुष्ट हो भगवान् के भाषण का अभिनन्दन किया।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

३०

वैशाली की बौद्ध भिक्षुणियाँ

(थेरी-गाथा)

भगवान् बुद्ध द्वारा भिक्षुणी-संघ की स्थापना के बाद स्त्रियाँ भी बौद्धधर्म में प्रवेश करने लगीं। इनमें कई बहुत प्रसिद्ध हुईं। बौद्ध भिक्षुणी को थेरी (स्थविरा) कहते थे।

वैशाली की कई भिक्षुणियाँ (थेरियाँ) भी बौद्ध इतिहास में प्रसिद्ध हुई हैं। एक तो अज्ञातनामा भिक्षुणी थी। शेष छः के नाम हैं—जयन्ती (लिच्छवि राजकुल में जन्म), विमला, सिंहा (सिंह सेनापति की भानजी), वासिष्ठी (एक प्रतिष्ठित घर में जन्म), अम्बपाली और रोहिणी।

अम्बपाली का नाम किसने न सुना होगा! बाकी में विमला और रोहिणी की कथाएँ महत्त्वपूर्ण समझी जाकर नीचे दी जा रही हैं।

विमला वैशाली की एक वेश्या की कन्या थी। वयः प्राप्त होने पर वह भी दूषित जीवन विताने लगी। रूप-लावण्य, सौभाग्य और यश से मतवाली, अहंकार में मस्त वह अपने को बहुत गौरवमय समझती थी। गहनों से शरीर को सजाये हुए वह अपने गृह के द्वार पर सतर्क दृष्टि से बैठकर व्याध के समान जालों का निर्माण करती थी। मनुष्यों के पतन के लिए वह अनेक मायाए रचती थी। एक दिन उसने थेर

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

महामोग्गल्लान (स्थविर महामौद्गल्यायण) को देखा। जिस समय स्थविर महामौद्गल्यायण वैशाली में भिक्षाचर्या कर रहे थे, वह उनको देखकर उन पर आसक्त हो गयी और उनके निवास-स्थान पर जाकर उन्हें लुभाने की दुश्चेष्टा करने लगी। स्थविर ने उसके अशुभ आचरण के लिए उसे फटकारते हुए धर्मोपदेश किया। धर्मोपदेश के सुनते ही उसके अन्दर लज्जा और ग्लानि की भावना उदित हुई। संघ से वह वहिर्भूत ही रही, किन्तु उपासिका (गृहस्थ-शिष्या) के रूप में वह दीक्षित की गयी। बाद में ध्यान का अनुशीलन कर वह संघ में प्रवेश करने की अधिकारिणी मानी गयी और उसने अर्हत्त्व प्राप्त किया।

रोहिणी का जन्म वैशाली के एक समृद्धिशाली ब्राह्मण-कुल में हुआ था। भगवान् बुद्ध के उपदेश को सुनकर उसे धर्मश्रद्धा उत्पन्न हुई। बौद्धसंघ में वह अत्यन्त अनुरक्त थी। एक दिन अपने पिता के साथ हुए वार्त्तालाप में उसने बतलाया कि उसे बौद्ध-भिक्षु क्यों प्रिय हैं। साथ ही उसने अपने पिता को बुद्ध-मत में दीक्षित भी किया।

३१
अजातशत्रु और लिच्छवियों में संघर्ष

राजा श्रेणिक विम्बिसार ने अपने जीवन-काल में चेल्लना के पुत्र और कूणिक अजातशत्रु के छोटे भाई हल्ल और वेहल्ल को

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सेयणग हाथी और अट्ठारसवंक हार दिये थे। कूणिक अजातशत्रु के राजा होने पर उसकी पत्नी पद्मावती ने उन दोनों चीजों को प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की। कूणिक ने उन दोनों वस्तुओं को हल्ल और वेहल्ल से माँगा। हल्ल और वेहल्ल ने उन वस्तुओं को इस शर्त पर देना स्वीकार किया कि कूणिक उन्हें अपना आधा राज्य दे दे। पर कूणिक ने उनकी बात पर ध्यान न देकर अपनी माँग को पुनः दोहराया। हल्ल और वेहल्ल यह सोचकर कि यदि हम ये वस्तुएँ कूणिक को नहीं देंगे, तो मार दिये जाएँगे, चम्पा से भागकर अपने नाना राजा चेटक के आश्रय में चले आये।

कूणिक ने अपना दूत भेजकर हाथी, हार, हल्ल और वेहल्ल को चेटक से वापस माँगा। चेटक ने उत्तर दिया कि 'कूणिक भी राजा श्रेणिक का पुत्र और चेल्लना से उत्पन्न है, अतएव मेरा दौहित्र है; हल्ल और वेहल्ल भी राजा श्रेणिक के पुत्र और चेल्लना से उत्पन्न हैं, अतएव मेरे दौहित्र हैं। राजा श्रेणिक ने अपने जीवन-काल में हल्ल और वेहल्ल को हाथी एवं हार दिये थे। यदि कूणिक हल्ल एवं वेहल्ल को आधा राज्य देना स्वीकार करे, तो मैं हाथी, हार, हल्ल एवं वेहल्ल को लौटा दूँगा।'

कूणिक ने इसे अस्वीकार कर युद्ध-घोषणा की सूचना दी और वैशाली पर आक्रमण कर दिया।

अजातशत्रु के लिच्छवियों से शंकित होने का दूसरा कारण भी था। उसका ख्याल था कि राजा बिम्बिसार के अम्बपाली गणिका से उत्पन्न पुत्र अभय में लिच्छवि रक्त है और वह लिच्छ-

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

वियों को बहुत पसन्द भी करता है। इस समय लिच्छवियों की की शक्ति बढ़ रही थी। अजातशत्रु ने सोचा कि अगर अभय लिच्छवियों का साथ देगा, तो उसे (=अजातशत्रु को) लिच्छवियों को पराजित करने में बड़ी कठिनाई होगी। अतः उसने लिच्छवियों से पिण्ड छुड़ाने का निश्चय किया।

कहीं-कहीं अजातशत्रु-लिच्छवि-संघर्ष का अन्य कारण मिलता है—

गंगा के घाट के पास आधा योजन अजातशत्रु का राज्य था और आधा योजन लिच्छवियों का। वहाँ पर्वत के पाद (=जड़) से बहुमूल्य सुगंधवाला माल उतरता था। उसको सुनकर अजातशत्रु के 'आज जाऊँ, कल जाऊँ' करते ही लिच्छवि एकराय, एकमत हो पहले ही जाकर सब ले लेते थे। अजातशत्रु पीछे जाकर उस समाचार को पा क्रुद्ध हो चला जाता था। वे दूसरे वर्ष भी वैसा ही करते थे। तब उसने अत्यन्त कुपित हो ऐसा सोचा—'गण (=प्रजातंत्र) के साथ युद्ध मुश्किल है, उनका एक भी प्रहार बेकार नहीं जाता। किसी पण्डित के साथ मंत्रणा करके युद्ध करना अच्छा होगा।' यह सोच उसने वर्षकार ब्राह्मण को भेजा।

३२

बुद्ध द्वारा वज्जियों की प्रशंसा

एक समय भगवान् बुद्ध राजगृह में गृध्रकूट-पर्वत पर विहार करते थे।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मागध राजा वैदेहीपुत्र अजातशत्रु ने मगध के महामात्य (=महामंत्री) वर्षकार ब्राह्मण को कहा—

"आओ ब्राह्मण ! जहाँ भगवान् हैं, वहाँ जाओ। जाकर मेरे वचन से भगवान् के पैरों में शिर से वन्दना करो। आरोग्य और सुखविहार पूछो—'भन्ते ! मागध राजा वैदेहीपुत्र अजातशत्रु भगवान् के पैरों में शिर से वन्दना करता है और आरोग्य एवं सुखविहार पूछता है।' और यह कहो—'भन्ते ! मागध राजा वैदेहीपुत्र अजातशत्रु वज्जियों पर चढ़ाई करना चाहता है; वह ऐसा कहता है—'मैं इन महर्द्धिक (=वैभवशाली) और महानुभाव वज्जियों को उच्छिन्न करूँगा, वज्जियों का विनाश करूँगा, वज्जियों पर आफत ढाऊँगा'। भगवान् तुम्हें जैसा उत्तर दें, उसे समझकर आकर मुझे कहो। तथागत अयथार्थ नहीं बोला करते।"

मगध का महामात्य वर्षकार ब्राह्मण राजा की बात सुन, "अच्छा" कह, अच्छे-अच्छे यानों को जुड़वाकर, अच्छे यान पर आरूढ़ हो, अच्छे यानों के साथ राजगृह से निकला और जहाँ गृध्रकूट-पर्वत था, वहाँ चला। जितनी यान की भूमि थी, उतनी यान से जाकर, यान से उतर पैदल ही, जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। जाकर भगवान् के साथ संमोदन कर एक ओर बैठा। एक ओर बैठकर मगधमहामात्य वर्षकार ब्राह्मण भगवान् से बोला—

"गौतम ! मागध राजा वैदेहीपुत्र अजातशत्रु भगवान् के

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

पैरों में शिर से वन्दना करता है और आरोग्य एवं सुखविहार पूछता है। गौतम! राजा अजातशत्रु वज्जियों पर चढ़ाई करना चाहता है। वह ऐसा कहता है—'मैं इन महर्द्धिक (=वैभवशाली) और महानुभाव वज्जियों को उच्छिन्न करूँगा, वज्जियों का विनाश करूँगा, वज्जियों पर आफत ढाऊँगा'।"

उस समय आयुष्मान् आनन्द भगवान् के पीछे खड़े होकर भगवान् को पंखा झल रहे थे। तब भगवान् ने आयुष्मान् आनन्द को आमन्त्रित किया—

"आनन्द! क्या तुमने सुना है, क्या वज्जी बार-बार इकट्ठे होते और उनके जुटाव भरपूर होते हैं (अर्थात् उनमें बहुत लोग जमा होते हैं)?"

"सुना है, भन्ते! वज्जी बार-बार इकट्ठे होते और उनके जुटाव भरपूर होते हैं।"

"जबतक आनन्द! वज्जी बार-बार इकट्ठे होते और उनके जुटाव भरपूर होते हैं, तबतक आनन्द! उनकी बढ़ती की ही आशा करनी चाहिए, परिहानि की नहीं।"

इसी प्रकार बुद्ध ने आनन्द से छः प्रश्न और पूछे। इन सब प्रश्नों के उत्तर भी बुद्ध को पहले के समान ही वज्जियों के पक्ष में मिले। अतएव उन्होंने वज्जि-संघ की वृद्धि के सम्बन्ध में शेष छः बातों को भी इस प्रकार कहा—

"जबतक वज्जी इकट्ठे जुटते, इकट्ठे उठते (उद्यम करते) और इकट्ठे वज्जीकरणीयों (अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों) को करते हैं;

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जबतक वज्जी (सभा द्वारा) बाकायदा कानून बनाये बिना कोई आज्ञा जारी नहीं करते, बने हुए नियम का उच्छेद नहीं करते और नियम से चले हुए पुराने वज्जिधम्म (राष्ट्रीय कानून और संस्थाओं) के अनुसार मिलकर वर्तते हैं;

जबतक वज्जी वज्जियों के जो वृद्ध-बुजुर्ग हैं उनका आदर-सत्कार करते, उन्हें मानते-पूजते और उनकी सुनने लायक बातों को मानते हैं;

जबतक वज्जी जो कुल-स्त्रियाँ और कुल-कुमारियाँ हैं उनपर जोर-जबर्दस्ती नहीं करते;

जबतक वज्जी जो उन वज्जियों के भीतरी और बाहरी वज्जि-चैत्य (चौरा, देवस्थान, जातीय मन्दिर) हैं, उनका आदर-सत्कार करते, उन्हें मानते-पूजते और उनके पहले दी हुई धार्मिक बलि (=दान, वृत्ति) को नहीं छीनते; और

जबतक वज्जी अरहतों (पूज्यों) की अच्छी तरह धार्मिक (=धर्मानुसार) रक्षा करते हैं, जिसमें न आये हुए अरहत् राज्य में आवें एवं आये हुए अरहत् राज्य में सुख से विहार करें,

तबतक आनन्द ! उनकी बढ़ती की ही आशा करनी चाहिए, परिहानि की नहीं।"

तब भगवान् ने मगधमहामात्य वर्षकार ब्राह्मण को आमन्त्रित किया—

"ब्राह्मण ! एक समय मैं वैशाली में सारन्दद चैत्य में विहार करता था। वहाँ मैंने वज्जियों को ये 'सत्त अपरिहानिय

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

धर्म' (अपतन के सात नियम) कहे। जबतक ब्राह्मण! ये सात अपरिहाणीय-धर्म वज्जियों में रहेंगे, इन सात अपरिहाणीय-धर्मों में वज्जी दिखलाई पड़ेंगे, तबतक ब्राह्मण! वज्जियों की वृद्धि ही समझना, परिहानि नहीं।"

ऐसा कहने पर वर्षकार ब्राह्मण भगवान् से बोला—

"हे गौतम! एक भी अपरिहाणीय-धर्म से वज्जियों की वृद्धि ही समझनी होगी, सात अपरिहाणीय-धर्मों की तो बात ही क्या? हे गौतम! मागध राजा वैदेहीपुत्र अजातशत्रु को उपलाप (= रिश्वत देना) या आपस में फूट को छोड़ युद्ध करना ठीक नहीं। हन्त! हे गौतम! अब हम जाते हैं; हम कार्यव्यस्त हैं और हमें बहुत करना है।"

"ब्राह्मण! जैसा तुम उचित समझो।"

वर्षकार ब्राह्मण, भगवान् के वचन से अभिनन्दित हो, उठा और चला गया।

तब भगवान् ने वर्षकार ब्राह्मण के जाने के थोड़ी ही देर बाद आयुष्मान् आनन्द को आमन्त्रित किया—

"जाओ आनन्द! जितने भिक्षु राजगृह के आसपास विहरते हैं, उन सबको उपस्थानशाला में एकत्रित करो।"

"अच्छा भन्ते!"

भिक्षु-संघ को एकत्रित कर आनन्द ने भगवान् को सूचना दी।

तब भगवान् आसन से उठकर जहाँ उपस्थानशाला थी वहाँ

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जा, बिछे आसन पर बैठे। बैठकर भगवान् ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया—

"भिक्षुओ ! तुम्हें सात अपरिहाणीय-धर्म कहता हूँ, उन्हें सुनो।"

"अच्छा भन्ते !"

भगवान् बोले—

"भिक्षुओ ! जबतक भिक्षु बार-बार इकट्ठे होते और उनके जुटाव भरपूर होते हैं ;

जबतक भिक्षु इकट्ठे जुटते, इकट्ठे उठते (उद्यम करते) और इकट्ठे संघकरणीयों (अपने संघ के कर्त्तव्यों) को करते हैं ;

जबतक भिक्षु (सभा द्वारा) बाकायदा कानून बनाये बिना कोई आज्ञा जारी नहीं करते, बने हुए नियम का उच्छेद नहीं करते और नियम से चले हुए शिक्षा-पदों (=विहित भिक्षु-नियमों) के अनुसार मिलकर वर्तते हैं ;

जबतक भिक्षु, जो रक्तज्ञ (=धर्मानुरागी), चिरप्रव्रजित, संघ के पिता, संघ के नायक स्थविर भिक्षु हैं, उनका आदर-सत्कार करते, उन्हें मानते-पूजते और उनकी बातों को सुनने लायक मानते हैं ;

जबतक भिक्षु पुनः-पुनः उत्पन्न होने वाली तृष्णा के वश में नहीं पड़ते ;

जबतक भिक्षु आरण्यक शयनासन (=वन की कुटियों) की इच्छावाले हैं ; और

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

जबतक भिक्षु यह याद रखते हैं कि अनागत (=भविष्य) में सुन्दर ब्रह्मचारी आएँ, आये हुए (=आगत) सुन्दर ब्रह्मचारी सुख से विहरें,

तबतक भिक्षुओ ! भिक्षुओं की बढ़ती की ही आशा करनी चाहिए, परिहानि की नहीं ।

जबतक भिक्षुओ ! ये सात अपरिहाणीय-धर्म भिक्षुओं में रहेंगे, जबतक भिक्षु इन सात अपरिहाणीय-धर्मों में दिखाई देंगे, तबतक भिक्षुओ ! भिक्षुओं की वृद्धि ही समझना, परिहानि नहीं ।"

३३

पाटलिग्राम में नगर-निर्माण

गृध्रकूट-पर्वत के वृजि-संघ-सम्बन्धी प्रसिद्ध प्रवचन के बाद भगवान् बुद्ध राजगृह में इच्छानुसार विहार कर आयुष्मान् आनन्द एवं महान् भिक्षु-संघ के साथ अम्बलट्ठिका गये और वहाँ से नालन्दा गये। नालन्दा में इच्छानुसार विहारकर भगवान् ने आयुष्मान् आनन्द को आमन्त्रित किया—

"आनन्द ! चलो, जहाँ पाटलिग्राम है, वहाँ चलें ।"

"भन्ते ! अच्छा ।"

तब महान् भिक्षु-संघ के साथ भगवान्, जहाँ पाटलिग्राम था, वहाँ पहुँचे ।

पाटलिग्राम में अजातशत्रु और लिच्छवि राजाओं के आदमी

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

समय-समय पर, आकर घर के मालिकों को घर से निकालकर, मास भी आधामास भी बस रहते थे। इससे पाटलिग्रामवासियों ने नित्य पीड़ित हो – उनके आने पर यह हमारा वासस्थान होगा —सोचकर नगर के बीच में महाशाला बनवायी। उसका नाम था 'आवसथागार'। वह उसी दिन समाप्त हुआ था, जिस दिन भगवान् बुद्ध पाटलिग्राम पहुँचे थे।

जब पाटलिग्राम के उपासकों ने सुना कि 'भगवान् पाटलिग्राम आये हैं', तब वे जहाँ भगवान् थे वहाँ गये। जाकर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठे हुए पाटलिग्राम के उपासकों ने भगवान् से कहा—

"भन्ते! भगवान् हमारे आवसथागार (=अतिथिशाला) को स्वीकार करें।"

भगवान् ने मौन से स्वीकार किया।

तदनन्तर सन्ध्या समय आवसथागार में भगवान् बुद्ध प्रविष्ट हुए और वहाँ उपदेश दिया। देर तक यह कार्य होता रहा। पीछे उपासकों के चले जाने पर भगवान् शून्यागार चले गये।

उस समय मगध के महामात्य सुनीध (=सुनीथ) और वर्षकार पाटलिग्राम में वज्जियों को रोकने के लिए नगर बसाते थे। भगवान् ने रात के प्रत्यूष-समय (=भिनसार) को उठकर आयुष्मान् आनन्द को आमन्त्रित किया—

"आनन्द! पाटलिग्राम में कौन नगर बना रहा है?"

"भन्ते! मगध के महामात्य सुनीध (=सुनीथ) और वर्ष-

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

कार पाटलिग्राम में वज्जियों को रोकने के लिए नगर बसा रहे हैं।"

"आनन्द! जैसे त्रयस्त्रिंश के देवताओं के साथ मंत्रणा करके मगध के महामात्य सुनीथ और वर्षकार वज्जियों को रोकने के लिए पाटलिग्राम में नगर बना रहे हैं। यहाँ आनन्द! मैंने दिव्य अमानुष चक्षु से देखा—कई हजार देवता यहाँ पाटलिग्राम में वास्तु (=घर, निवास) ग्रहण कर रहे हैं। जिस प्रदेश में महाशक्तिशाली देवता वास ग्रहण कर रहे हैं, वहाँ महाशक्तिशाली राजाओं और राजमहामात्यों का चित्त घर बनाने को लगेगा। जिस प्रदेश में मध्यम देवता वास ग्रहण कर रहे हैं, वहाँ मध्यम राजाओं और राजमहामात्यों का चित्त घर बनाने को लगेगा। जिस प्रदेश में नीच देवता वास ग्रहण कर रहे हैं, वहाँ नीच राजाओं और राजमहामात्यों का चित्त घर बनाने को लगेगा। आनन्द! जितने भी आर्य-आयतन (=आर्यों के निवास) हैं, जितने भी वणिक्पथ (व्यापार-मार्ग) हैं, उनमें यह पाटलिपुत्र पुट-भेदन (माला की गाँठ जहाँ तोड़ी जाए) एवं अग्रनगर होगा। पाटलिपुत्र के आनन्द! तीन अन्तराय (=विघ्न) होंगे—अग्नि, जल और आपस की फूट।"

भगवान् बुद्ध जब पाटलिपुत्र से रवाना हुए, तब मगध के महामात्य सुनीथ और वर्षकार भगवान् के पीछे-पीछे चलने लगे तथा बोले—"आज श्रमण गौतम जिस द्वार से निकलेंगे, वह 'गौतमद्वार' होगा; जिस तीर्थ (=घाट) से गंगा नदी पार करेंगे, वह 'गौतम तीर्थ' होगा।"

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भगवान् जिस द्वार से निकले, वह 'गौतमद्वार' हुआ।

तब भगवान् जहाँ गंगा नदी है, वहाँ गये। उस समय गंगा करारों तक भरी, करारों पर बैठे कौवे के पीने योग्य थी। जैसे कि बलवान् पुरुष समेटी बाँह को सहज ही फैला दे और फैलायी बाँह को समेट ले, ऐसे ही भगवान् भिक्षु-संघ के साथ गंगा नदी के इस पार से अन्तर्धान हो दूसरे तीर पर जा खड़े हुए।

३४

अम्बपाली गणिका का निमन्त्रण

[लिच्छविपरिषद् की देवपरिषद् से तुलना]

पाटलिपुत्र नगर का उद्घाटन करने के बाद जब भगवान् बुद्ध ने गंगा नदी पार की, तब वे भिक्षु-संघ के साथ कोटिगाम आये। वहाँ इच्छानुसार विहरकर वे नादिका (=नाटिका) गये, जहाँ गिञ्जकावसथ में विहार किया।

नादिका में इच्छानुसार विहार कर भगवान ने आयुष्मान् आनन्द को आमंत्रित किया—

"आओ आनन्द! जहाँ वैशाली है, वहाँ चलें।"

"अच्छा भन्ते †!" कहकर आयुष्मान् आनन्द ने भगवान् का समर्थन किया।

तब भगवान् महाभिक्षु-संघ के साथ जहां वैशाली थी, वहाँ गये। वहाँ वैशाली में भगवान् अम्बपाली-वन में विहार करते थे।

† भन्ते स्वामी या पूज्य के लिए कहा जाता था।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

अम्बपाली गणिका ने सुना — 'भगवान् वैशाली में आ गये और वैशाली में मेरे आम्रवन में विहार करते हैं'। अम्ब-पाली सुन्दर-सुन्दर (·भद्र) यानों को जुड़वा कर, सुन्दर यान पर चढ़, सुन्दर यानों के साथ वैशाली से निकली और जहाँ उसका आराम था, वहाँ चली। जितनी यान की भूमि थी, उतनी यान से जाकर, यान से उतर पैदल ही जहाँ भगवान् थे, वहाँ गयी। जाकर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गयी। एक ओर बैठी अम्बपाली गणिका को भगवान् ने धार्मिक कथा से समुत्तेजित किया। तब अम्बपाली भगवान् से बोली—

"भन्ते ! भिक्षु-संघ के साथ भगवान् मेरा कल का भोजन स्वीकार करें।"

भगवान् ने मौन से स्वीकार किया।

तब अम्बपाली भगवान् की स्वीकृति को जान, आसन से उठ भगवान् का अभिवादन कर प्रदक्षिणा कर चली गयी।

वैशाली के लिच्छवियों ने सुना—'भगवान् वैशाली आये हैं और वैशाली में अम्बपाली-वन में विहार करते हैं'। तब वे लिच्छवि सुन्दर-सुन्दर (=भद्र) यानों को जुड़वा कर, सुन्दर यान पर चढ़, सुन्दर यानों के साथ वैशाली से निकले। उनमें कोई-कोई लिच्छवि नीले=नीलवर्ण, नील-वस्त्र, नील अलङ्कार वाले थे। कोई-कोई लिच्छवि पीले=पीतवर्ण, पीत-वस्त्र, पीत अलङ्कार वाले थे। कोई-कोई लिच्छवि लोहित (=लाल)=लोहितवर्ण, लोहित-

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वस्त्र, लोहित अलङ्कार वाले थे। कोई-कोई लिच्छवि अवदात (=श्वेत)=श्वेतवर्ण, श्वेतवस्त्र, श्वेत अलङ्कार वाले थे।

अम्बपाली ने तरुण-तरुण लिच्छवियों के धुरों से धुरा, चक्कों से चक्का, जूए से जूआ टकराया। उन लिच्छवियों ने अम्बपाली से कहा—

"जे! अम्बपाली! क्यों तरुण-तरुण लिच्छवियों के धुरों से धुरा, चक्कों से चक्का, जूए से जूआ टकराती है?"

"आर्यपुत्रो! क्योंकि मैंने भिक्षुसंघ के साथ भगवान् को कल के भोजन के लिए निमंत्रित किया है।"

"जे अम्बपाली! सौ हजार से भी इस भात (=भोजन) को (हमें करने के लिए) दे दे।"

"आर्यपुत्रो! यदि जनपद-सहित वैशाली भी दो, तो भी इस महान् भात को न दूँगी।"

तब उन लिच्छवियों ने अंगुलियाँ फोड़ीं—

"अरे! हमें अम्बिका ने जीत लिया, अरे! हमें अम्बिका ने वञ्चित कर दिया।"

तब वे लिच्छवि जहाँ अम्बपाली-वन था, वहाँ गये।

भगवान् ने दूर से ही लिच्छवियों को आते देखा। देखकर भिक्षुओं को आमंत्रित किया—

"भिक्षुओ! जिन भिक्षुओं ने तावतिंस देवों को नहीं देखा है, वे लिच्छवियों की परिषद् का अवलोकन करें। भिक्षुओ!

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

लिच्छवि-परिषद् का अवलोकन करो। लिच्छवि-परिषद् को त्रायस्त्रिंश-परिषद् (=देव-परिषद्) समझो।" †

तव वे लिच्छवि रथ से उतरकर पैदल ही जहाँ भगवान् थे, वहाँ जाकर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर वैठे। एक ओर वैठे लिच्छवियों को भगवान् ने धार्मिक कथा से समुत्तेजित किया। तव वे लिच्छवि भगवान् से बोले—

"भन्ते! भिक्षु-संघ के साथ भगवान् हमारा कल का भोजन स्वीकार करें।"

"लिच्छवियो! कल तो स्वीकार कर लिया है मैंने अम्ब-पाली गणिका का भोजन।"

तव उन लिच्छवियों ने अंगुलियाँ फोड़ीं—

"अरे! हमें अम्बिका ने जीत लिया। अरे! हमें अम्बिका ने वञ्चित कर दिया।"

तव वे लिच्छवि भगवान् के भाषण को अभिनन्दित कर अनुमोदित कर, आसन से उठकर भगवान् का अभिवादन कर, प्रदक्षिणा कर चले गये।

अम्वपाली ने अपने आराम में उत्तम खाद्य-भोज्य तय्यार कर भगवान् को वुलाया और वुद्ध-प्रमुख भिक्षु-संघ को अपने हाथ से परोसकर खिलाया।

---

† त्रायस्त्रिंश इन्द्रलोक के देवता हैं। बुद्ध ने वैशालीवासियों की उपमा उनसे दी थी; यह प्रकट करता है कि बुद्ध के भाव इस भूमि के निवासियों के प्रति कैसे थे।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भगवान् के भोजन कर लेने पर अम्बपाली गणिका एक नीचा आसन लेकर एक ओर बैठी और भगवान् से बोली—

"भन्ते ! मैं इस आराम को बुद्ध-प्रमुख भिक्षु-संघ को देती हूँ ।"

भगवान् ने आराम को स्वीकार किया।

तब भगवान् अम्बपाली गणिका को धार्मिक कथा से समुत्तेजित कर आसन से उठकर चले गये।

३५

लिच्छवियों का कठोर जीवन

लिच्छवियों का जीवन वैभवमय और समृद्धिशाली था। इससे कोई अनुमान कर सकता है कि उनका जीवन विलासपूर्ण था। पर बुद्ध के समय उनके जीवन के सम्बन्ध में ऐसा अनुमान गलत होगा। स्वयं भगवान् बुद्ध ने भिक्षुओं से कहा था—

"भिक्षुओ! इन लिच्छवियों को देखो कि कैसे ये काठ के टुकड़ों को तकिया बना कर सोते हैं, परिश्रमी और प्रमादशून्य हैं, वाणविद्या में कुशल हैं। मगध का राजा वैदेहीपुत्र अजातशत्रु उनमें कोई दोष नहीं निकाल सकता और न उनके विरुद्ध कार्रवाई का कोई मौका पा सकता है। परन्तु भिक्षुओ! यदि भविष्य में लिच्छवि अपने हाथ-पैर कोमल और मुलायम रखेंगे, सर्वोत्तम कपास के गद्दे पर दिन उठने तक आराम से सोया करेंगे, तो मगध

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

का राजा वैदेहीपुत्र अजातशत्रु उनमें दोष निकालेगा और उनके विरुद्ध कार्रवाई का मौका पाएगा।"

बुद्धदेव के इस कथन से मालूम होता है कि लिच्छवियों का जीवन कठोर और क्रियाशील था तथा सैनिक शिक्षा में वे बड़े पटु थे; अतः कोई शत्रु सहसा आघात न कर सकता था। आमोद-प्रमोद में तल्लीन रहते हुए भी रणभेरी सुनते ही लिच्छवि उसी उन्माद एवं उत्साह से वीरता का प्रदर्शन भी कर सकते थे।

३६

भगवान् बुद्ध का अन्तिम वर्षावास

वैशाली में अम्बपाली गणिका के द्वारा समर्पित आराम को भिक्षु-संघ के लिए ग्रहण कर लेने के बाद भगवान् बुद्ध महाभिक्षु संघ के साथ जहाँ वेलुवगामक (=वेणुग्राम) था, वहाँ गये। वहाँ भगवान् वेलुवगामक में विहरते थे। भगवान ने वहाँ भिक्षुओं को आमंत्रित किया—

"आओ भिक्षुओ! तुम वैशाली के चारों ओर मित्र-परिचित देखकर वर्षावास करो। मैं यहीं वेलुवगामक में वर्षावास करूँगा।"

"अच्छा भन्ते!" कहकर भिक्षुक वैशाली के चारों ओर मित्र-परिचित देखकर वर्षावास करने लगे। भगवान् ने वेलुवगामक में ही वर्षावास किया। वेलुवगामक वैशाली के बिलकुल समीप था।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वर्षावास में भगवान् को कड़ी बीमारी उत्पन्न हुई। भारी मरणान्तक पीड़ा होने लगी। भगवान् उस व्याधि को वीर्य (=मनोबल) से हटाकर जीवन-संस्कार (प्राणशक्ति) के अधिष्ठाता बन विहार करने लगे। तब भगवान् की वह बीमारी शान्त हो गयी।

३७

चैत्यों की रमणीयता

वैशाली में पिण्डाचार कर भोजनोपरान्त भगवान् बुद्ध आयुष्मान् आनन्द से बोले—

"आनन्द! आसनी उठाओ। जहाँ चापाल चैत्य है, वहाँ दिन के विहार के लिए चलेंगे।"

"अच्छा भन्ते!" कह आयुष्मान् आनन्द आसनी ले भगवान् के पीछे-पीछे चले।

तब भगवान् जहाँ चापाल चैत्य था, वहाँ गये। जाकर बिछे आसन पर बैठे। आयुष्मान् आनन्द भी भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठे।

एक ओर बैठे आयुष्मान् आनन्द को भगवान् ने यह कहा—

"रमणीय है आनन्द! वैशाली। रमणीय है उदेन चैत्य। रमणीय है गोतमक चैत्य। रमणीय है सत्तम्बक (=सप्ताम्रक) चैत्य। रमणीय है बहुपुत्त चैत्य। रमणीय है सारन्दद चैत्य। रमणीय है चापाल चैत्य।"

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

ये चैत्य भगवान् बुद्ध को वहुत प्यारे थे।

❀ ❀ ❀

वैशाली की चार दिशाओं में चार प्रसिद्ध चैत्य (उद्यान-पुष्करिणी-सहित देवस्थान) थे—पूर्व में उदयन चैत्य, दक्षिण में गोतमक चैत्य, पश्चिम में सप्ताम्रक चैत्य और उत्तर में वहुपुत्रक चैत्य।

वैशाली में अचेल कोरमट्टक नामक एक वड़ा प्रभावशाली नागा रहता था। वैशाली के लोगों में उसका बड़ा सम्मान था। उसने सात प्रतिज्ञाएँ ले रखी थीं—

(१) सदा नंगा रहना, वस्त्र न धारण करना;

(२) जीवन भर ब्रह्मचारी रहना;

(३) भात-दाल न खा, केवल मांस खाना और सुरा पीना;

(४) वैशाली में पूर्व की ओर उदयन चैत्य से आगे न जाना;

(५) दक्षिण में गोतमक चैत्य से आगे न जाना;

(६) पश्चिम में सप्ताम्रक चैत्य से आगे न जाना और

(७) उत्तर में वहुपुत्रक चैत्य से आगे न जाना।

मालूम पड़ता है, ये चारों चैत्य वैशाली नगर के पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर के महाद्वारों के वाहर थे। आज भी पूरब में कम्मन छपरा के चौमुखी महादेव और उत्तर में वनिया के चौमुखी महादेव मौजूद हैं, जो क्रमशः उदयन और वहुपुत्रक चैत्य हो सकते हैं। फाहियान के लेखानुसार बुद्ध ने अन्तिम वार वैशाली के पश्चिम द्वार से वाहर निकलकर नागावलोकन किया

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

था। यह स्थान सप्ताम्रक चैत्य के समीप रहा होगा, जिसे बोधा के आसपास कहीं होना चाहिए। दक्षिण द्वार के बाहर गोतमक चैत्य था, जिसे परमानन्दपुर से कोसा के गुप्त महादेव के दक्षिण तक ढूँढ़ना होगा।

इस प्रकार चैत्यों की सहायता से हम पुरानी वैशाली के नगर-सीमान्त का कुछ अनुमान कर सकते हैं।

३८
परिनिर्वाण की घोषणा

वैशाली में भगवान् बुद्ध ने आयुष्मान् आनन्द से कहा —

"आनन्द! मैंने पहले ही कह दिया है कि सभी प्रियों से जुदाई होती है। तदनुसार जल्द ही तथागत का परिनिर्वाण होगा। आज से तीन मास बाद तथागत परिनिर्वाण को प्राप्त होंगे। आओ आनन्द! जहाँ महावन कूटागार-शाला है, वहाँ चलें।"

"अच्छा भन्ते!" आनन्द ने समर्थन किया।

भगवान् आयुष्मान् आनन्द के साथ जहाँ महावन कूटागार-शाला थी, वहाँ गये। वैशाली के पास जितने भिक्षु विहार करते थे, उन सबको भगवान ने उपस्थानशाला में एकत्रित कराया और अपने धर्म पर व्याख्यान दिया। उन्हें प्रोत्साहित करने के बाद भगवान् ने अन्त में कहा—

"शीघ्र ही तथागत का परिनिर्वाण होगा। आज से तीन मास बाद तथागत परिनिर्वाण पाएँगे।"

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

इस प्रकार सर्वप्रथम वैशाली में महात्मा बुद्ध ने अपने भावी परिनिर्वाण की घोषणा की।

३६

नागावलोकन

(अन्तिम वैशाली-दर्शन)

आनन्द से परिनिर्वाण की घोषणा करने के कुछ समय बाद भगवान् बुद्ध ने वैशाली से कुशीनगर की यात्रा की।

भगवान् अन्तिम बार वैशाली को छोड़ रहे थे। चलने के पहले एक वार फिर उस वीतराग ने हाथी की तरह सारे शरीर को घुमाकर (नागावलोकन करके) वैशाली को आँख भर कर देख अपने प्रिय शिष्य से कहा—"आनन्द ! तथागत का यह अन्तिम वैशाली-दर्शन होगा। तथागत फिर वैशाली नहीं आएँगे।"

भगवान् बुद्ध के ये वचन वैशाली नगर की गली-गली में विजली की तरह फैल गये और उस समय इस ढंग की एक गाथा भी तैयार हो गयी—

"इदं अपश्चिमं नाथ वैशाल्यास्तव दर्शनम्।
न भूयो सुगतो बुद्धो वैशालीं आगमिष्यति।"

जिस स्थान पर खड़े होकर महात्मा बुद्ध ने वैशाली की ओर आखिरी दृष्टिपात किया था, उस स्थान पर वैशाली के नगर-निवासियों ने एक स्तूप का निर्माण करके इस घटना को स्मरणीय

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वनाने की चेष्टा की। जब चीनी यात्री ह्वेनसांग वैशाली में आया था, तव उसने उस स्तूप को देखा था।

४०
भिक्षापात्र का दान

भगवान् बुद्ध जब कुशीनगर के रास्ते पर आगे बढ़े, उस समय वैशाली नगर के भक्त लिच्छवियों ने उनका अनुसरण करना चाहा। बुद्ध के मना करने पर भी वे नहीं रुके। तब बुद्ध ने तुरत अपनी माया के बल से एक विशाल नदी की सृष्टि की, जिसका किनारा बहुत ऊँचा था और जिसमें भयंकर लहरें उठ रही थीं। इस कारण लिच्छवि आगे नहीं बढ़ सके। तब बुद्ध ने उन लोगों पर कृपा करके उनको अपने भिक्षापात्र (पिण्डपात्र) का दान किया। उन लोगों ने उस भिक्षापात्र की कहानी को एक शिला-स्तम्भ पर लिखकर सदा के लिए उस स्मृति को कायम रखा। चीनी यात्री फाहियान ने उस स्मृति-स्तम्भ को देखा था।

४१
बुद्ध के शरीरावशेष में लिच्छवियों का भाग

वैशाली से विदा हो और लिच्छवियों को लौटाकर भगवान् बुद्ध भण्डगाम, हत्थिगाम, अम्बगाम, जम्बुगाम और भोगनगर होते हुए पावा पहुँचे। पावा से कुशीनगर ६ गव्यूति है। इस बीच में पचीस स्थानों में बैठकर बड़ी हिम्मत

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

करके जाते हुए मध्याह्न से चलकर सूर्यास्त समय भगवान् कुशीनगर पहुँचे।

कुशीनगर में मल्लों के शालवन में यमक-(=जुड़वें) शालों के वीच में उत्तर की ओर सिरहाना कर चारपाई बिछायी गयी, जिसपर भगवान् दाहिनी करवट सिंहशय्या से लेट गये। वैशाख-पूर्णिमा की उस रात के पिछले पहर तथागत का परिनिर्वाण हुआ।

छः दिनों तक तो कुशीनगर के मल्ल भगवान् के शरीर का नृत्य, गीत, वाद्य, माला और गन्ध से सत्कार करते रहे। सातवें दिन नगर के पूर्व ओर जहाँ मुकुट-वन्धन नामक मल्लों का चैत्य था, वहाँ भगवान् का शरीर ले जाया गया, जहाँ दाह-क्रिया सम्पन्न हुई।

कुशीनगर के मल्लों ने भगवान् की अस्थियों (=सरीरानि) को सप्ताह भर संस्थागार में सुरक्षित रूप से रखा और नृत्य, गीत, वाद्य, माला एवं गन्ध से सत्कार करते रहे।

मागध राजा वैदेहीपुत्र अजातशत्रु ने सुना—'भगवान् कुशीनगर में परिनिर्वाण को प्राप्त हुए'। तब राजा अजातशत्रु ने कुशीनगर के मल्लों के पास दूत भेजा—'भगवान् भी क्षत्रिय थे, मैं भी क्षत्रिय हूँ; भगवान् के शरीरों (=अस्थियों) में मेरा भाग भी वाजिव है। मैं भी भगवान् के शरीरों का स्तूप वनवाऊँगा और पूजा करूँगा।'

वैशाली के लिच्छवियों ने सुना—'भगवान् कुशीनगर में

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

परिनिर्वाण को प्राप्त हुए'। तब वैशाली के लिच्छवियों ने कुशीनगर के मल्लों के पास दूत भेजा—'भगवान् भी क्षत्रिय थे, हम भी क्षत्रिय हैं; भगवान् के शरीरों (=अस्थियों) में हमारा भाग भी वाजिब है। हम भी भगवान् के शरीरों का स्तूप बनवाएँगे और पूजा करेंगे।'

इसी प्रकार के सन्देश कपिलवस्तु के शाक्यों, अल्लकप्प के बुलियों, रामगाम के कोलियों, वेठदीप के ब्राह्मणों एवं पावा के मल्लों ने भी भेजे।

तब कुशीनगर के मल्लों ने उन संघों और गणों से कहा—"भगवान् हमारे ग्रामक्षेत्र में परिनिर्वृत्त हुए; हम भगवान् के शरीरों का भाग नहीं देंगे।"

ऐसा कहने पर द्रोण ब्राह्मण ने उन संघों और गणों से कहा—"आप सब मेरी एक बात सुनें। हमारे बुद्ध क्षमावादी थे। यह ठीक नहीं कि उस उत्तम पुरुष की अस्थि बाँटने में मारपीट हो। आप सभी एक साथ एकमत हो आठ भाग करें, जिससे दिशाओं में स्तूपों का विस्तार हो, बहुत-से लोग चक्षुमान् (=बुद्ध) में श्रद्धावान् हों।"

"तो ब्राह्मण! तू ही भगवान् के शरीरों को आठ समान भागों में सुविभक्त कर।"

"अच्छा भो!" द्रोण ब्राह्मण ने भगवान् के शरीरों को आठ समान भागों में सुविभक्त (=बाँट) कर उन संघों और गणों से कहा—

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

"आप सब इस कुम्भ को मुझे दे दें। मैं कुम्भ का स्तूप बनाऊँगा और पूजा करूँगा।"

उन्होंने द्रोण ब्राह्मण को कुम्भ दे दिया।

इसी समय पिप्पलीवन के मोरियों (=मौर्यों) का दूत शरीर-भाग के लिए पहुँचा। मोरिय भी क्षत्रिय थे।

"भगवान् के शरीरों का भाग नहीं है, भगवान् के शरीर बँट चुके। यहाँ से कोइला (=अङ्गार) ले जाओ।"

तब वह वहाँ से कोइला ले गया।

भगवान् बुद्ध के शरीरावशेष में भाग पा जाने पर मागध राजा वैदेहीपुत्र अजातशत्रु ने राजगृह में भगवान् की अस्थियों का स्तूप बनाया और पूजा की, वैशाली के लिच्छवियों ने वैशाली में भगवान् की अस्थियों का स्तूप बनाया और पूजा की; इसी प्रकार अन्यों ने भी स्तूप बनाये और पूजा की। द्रोण ब्राह्मण ने कुम्भ का स्तूप बनाया और पूजा की। पिप्पलीवन के मोरियों ने अंगारों का स्तूप बनाया और पूजा की।

लिच्छवियों द्वारा बनवाये स्मारक को करीब सवा ग्यारह सौ वर्ष बाद चीनी यात्री ह्वेनसांग ने देखा था।

४२

आनन्द-स्तूप

आनन्द मगध से वैशाली की ओर चले, क्योंकि उनकी इच्छा निर्वाण प्राप्त करने की हुई। मगध के राजा अजातशत्रु को इस

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वात का पता लग गया। वह शीघ्र उनका पीछा करता अपनी सेना के साथ चल पड़ा और नदी के किनारे पहुँच गया। वैशाली के लिच्छवियों को जव यह ज्ञात हुआ कि आनन्द आ रहे हैं, तव वे उनका स्वागत करने को चल पड़े और नदी के दूसरे तीर तक पहुँच गये। आनन्द ने सोचा—'यदि मैं आगे वढ़ता हूँ, तो अजातशत्रु दुःखी होता है और यदि पीछे लौट पड़ता हूँ, तो लिच्छवि रंज होंगे'। इस असमंजस में पड़कर आनन्द ने नदी के वीच में ही समाधि द्वारा अपने शरीर को जलाकर निर्वाण प्राप्त कर लिया।

उनके शरोर के दो भाग हो गये—एक-एक भाग नदी के दोनों तीरों पर गिरा। अजातशत्रु और लिच्छवि दोनों उनके अर्द्धशरीर के अवशेप ले गये और अपने-अपने यहाँ उनपर स्तूप वनवाये।

४३

अम्बपाली की वृद्धावस्था

अम्वपाली ने भगवान् वुद्ध को भोजन के लिए निमंत्रित किया था और जव भगवान् भोजन कर चुके, तव उनसे उपदेश ग्रहण कर अपना उपवन वुद्ध-प्रमुख संघ को दान कर दिया था। साधना करते हुए अम्वपाली ने अपने पुत्र विमल कोण्डञ्ञ के उपदेश से प्रव्रज्या ग्रहण की।

वृद्धावस्था में अपने शरीर के परिवर्तनों को देखकर अम्वपाली ने वुद्ध-वचनों की सत्यता प्रतिफलित होते हुए देखी और उसे संसार

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

की वस्तुओं की अनित्यता का ज्ञान हुआ। अपने निरंतर जर्जरित होते हुए शरीर को देखकर उसने कहा—

"काले, भ्रमर के वर्ण के सदृश, जिनके अग्र भाग घुँघराले हैं, ऐसे किसी समय मेरे बाल थे। वही आज जरावस्था में जीर्ण सन के समान हैं।

गहरे नीले रंग की दो उज्ज्वल, सुन्दर मणियों के समान मेरे दो विस्तृत नेत्र थे। वही आज बुढ़ापे से अभिहत हुए भद्दे और शोभाहीन हैं।

वनचारिणी कोकिला की मधुर कूक के समान किसी समय मेरी प्यारी मीठी बोली थी। वही आज जरावस्था में स्खलित और भर्रायी हुई है।

सुन्दर मुद्रिका और स्वर्णालङ्कारों से विभूषित पहले मेरे हाथ शोभते थे। वही आज जरावस्था में निर्बल और गाँठ-गठीले हैं।

मेरे दोनों सुकोमल पैर कभी रूई के फाहे के समान हल्के थे। वही आज जरावस्था में सूखकर झुर्रियों से भरे हुए हैं।

एक समय यह शरीर ऐसा था। इस समय यह जर्जर और अनेक दुःखों का घर है। जीर्ण घर जैसे विना लिपाई-पुताई के गिर जाता है, उसी प्रकार यह जरा का घर (शरीर) भी विना थोड़ी-सी रखवाली किये शीघ्र ही गिर जायगा।"

अम्बपाली ने अनुभव किया कि सत्यवादी बुद्ध ने जो वचन कहे थे, वे सब सच उतर रहे हैं।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

४४

लिच्छवियों की पराजय

(वैशाली-गणतंत्र का पतन)

मगध का महामात्य वर्षकार गृध्रकूट-पर्वत पर भगवान् बुद्ध से मिल, वज्जियों के सम्वन्ध में उनका विचार जान, राजा अजातशत्रु के यहाँ गया।

राजा ने उससे पूछा—"आचार्य ! भगवान् ने क्या कहा ?"

वर्षकार ने कहा—"भो ! श्रमण गौतम के कथन से तो वज्जियों को किसी प्रकार भी पराजित नहीं किया जा सकता। हां, उपलापन (=रिश्वतखोरी) और आपसी फूट होने से उन्हें पराजित किया जा सकता है।"

तव राजा ने कहा—"उपलापन से हमारे हाथी-घोड़े नष्ट होंगे, भेद (=फूट) से ही पकड़ना चाहिए। फिर क्या किया जाए ?"

"तो महाराज ! वज्जियों को लेकर आप परिषद् में वात उठाइए। तव मैं—'महाराज ! आप को उनसे क्या है ? अपनी कृषि और वाणिज्य करके ये 'राजा' (=प्रजातंत्र के सभासद्) जीएँ'—कहकर चला जाऊँगा। तव आप कहिएगा—'क्यों जी ! यह ब्राह्मण वज्जियों के सम्वन्ध में होती वात को रोकता है'। उसी दिन मैं वज्जियों के लिए भेंट भेजूँगा ; उसे भी पकड़कर मेरे ऊपर दोषारोपण कर, वन्धन, ताड़न आदि न कर, छुरे से मुण्डन करा

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मुझे नगर से निकाल दीजिएगा। तब मैं कहूँगा—'मैंने आपके नगर में प्राकार और परिखा (=खाई) बनवायी हैं; मैं दुर्बल तथा गम्भीर स्थानों को जानता हूँ; अब जल्द आपको सीधा करूँगा।' ऐसा सुनकर बोलिएगा—'तुम जाओ'।"

राजा ने सब किया।

लिच्छवियों ने वर्षकार के निकाले जाने की खबर सुनकर कहा—"ब्राह्मण मायावी (=शठ) है, उसे गंगा न उतरने दो।"

तब किन्हीं-किन्हीं ने कहा—"हमारे लिए कहने से तो वह (राजा) ऐसा करता है।"

अन्त में उसे आने दिया गया।

लिच्छवियों ने उससे पूछा—"किस लिए आये?"

वर्षकार ने सारा हाल कह सुनाया।

लिच्छवियों ने कहा—"थोड़ी-सी बात के लिए इतना भारी दण्ड देना युक्त नहीं था। खैर, वहाँ आपका क्या पद था?"

"मैं विनिश्चय-महामात्य था।"

"यहाँ भी आपका वही पद रहे।"

वर्षकार विनिश्चय-महामात्य हो गया। वह सुन्दर ढंग से विनिश्चय (=इन्साफ) करता था। राजकुमार उसके पास विद्या (=शिल्प) ग्रहण करते थे।

अपने गुणों से प्रतिष्ठित हो जाने पर उसने एक दिन एक लिच्छवि को एक ओर ले जाकर पूछा—

"खेत (=केदार=क्यारी) जोतते हैं?"

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

"हाँ, जोतते हैं।" उत्तर मिला।

"दो बैल जोतकर?"

"हाँ, दो बैल जोतकर।"

दूसरे लिच्छवि ने वर्षकार को पहले लिच्छवि से बतियाते देख लिया था। उसने वर्षकार के चले जाने पर पहले लिच्छवि से पूछा—"वर्षकार तुम से क्या पूछ रहे थे?" पहले लिच्छवि ने सच-सच बतला दिया। मगर वर्षकार ने चालाकी करके ऐसी मामूली बात पूछी थी कि दूसरे लिच्छवि को इसका विश्वास ही नहीं हुआ कि वर्षकार ऐसी महत्त्वहीन बात पूछ सकते हैं। उसने समझा कि वर्षकार ने कोई गम्भीर बात पूछी है, मगर यह मेरा विश्वास न कर ठीक-ठीक नहीं बतलाता है। यह सोच उसने पहले लिच्छवि से विगाड़ कर लिया।

ब्राह्मण दूसरे दिन भी एक लिच्छवि को एक ओर ले जाकर 'किस व्यंजन (=तेमन=तरकारी) से भोजन किया?' पूछ-कर लौटने पर, उससे भी दूसरे ने पूछकर, न विश्वास कर वैसे ही विगाड़ कर लिया।

ब्राह्मण ने किसी दूसरे दिन एक लिच्छवि को एकान्त में ले जाकर पूछा—"बड़े गरीब हो न?" "किसने ऐसा कहा?" पूछे जाने पर वर्षकार कह देता—"अमुक लिच्छवि ने।"

दूसरे को भी एक ओर ले जाकर ब्राह्मण ने पूछा—"तुम कायर हो क्या?" "किसने ऐसा कहा?" तब वर्षकार पूर्ववत् झूठमूठ किसी लिच्छवि का नाम बतला देता।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

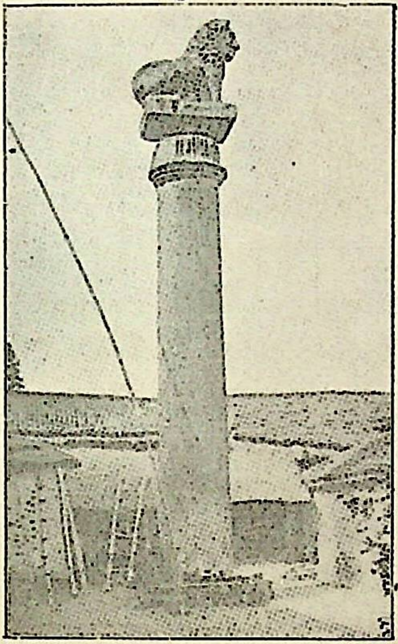

वैशाली का अशोक-स्तम्भ

पृ० १०५

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

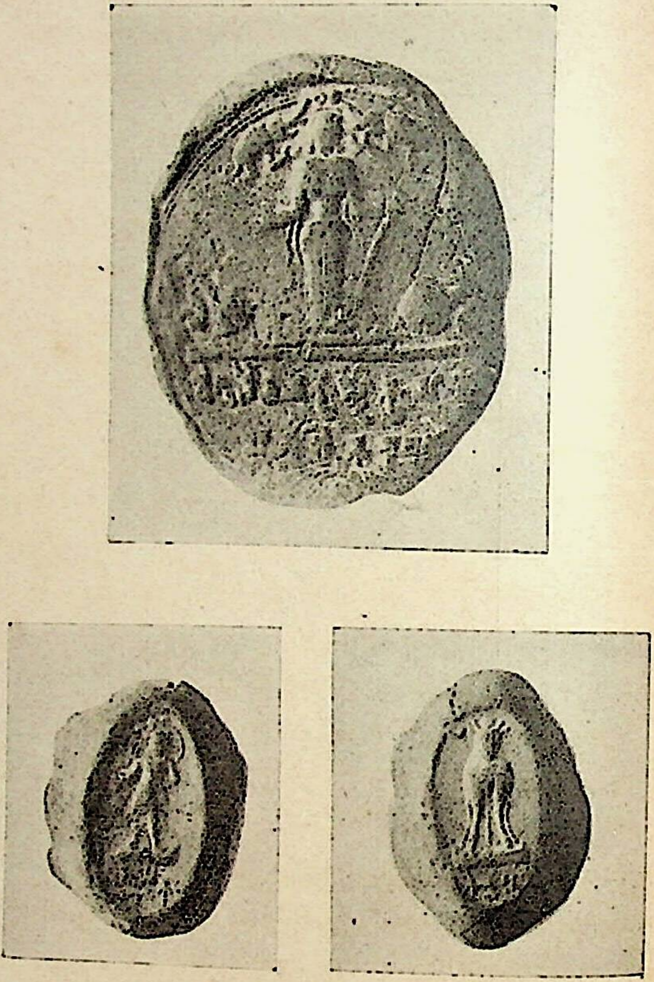

वैशाली में प्राप्त कुछ मुहरें

पृ० ११७

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

इस प्रकार दूसरे के न कहे हुए को कहते तीन वर्षों में वर्षकार ने उन राजाओं में ऐसी फूट डाल दी कि दो एक रास्ते से भी न जाते थे।

वैसा करके उसने जमा होने का नगारा (=सन्निपात-भेरी) बजवाया। लिच्छवि—"मालिक (ईश्वर) लोग जमा हों"—कहकर नहीं जमा हुए। तब उस ब्राह्मण ने राजा अजातशत्रु को जल्द आने के लिए खबर भेजी।

राजा सुनकर सैनिक-नगारा (=बलभेरी) बजवाकर निकला।

वैशालीवालों ने सुनकर भेरी बजवायी—"आओ, चलें, राजा को गंगा न उतरने दें।" उसको भी सुनकर—"देवराज (=सुर-राज) लोग जाएँ"—आदि कहकर लोग नहीं जमा हुए।

तब वैशालीवालों ने भेरी बजवायी—"राजा को नगर में घुसने न दें, नगर-द्वार बन्द करके रहें।" एक भी नहीं जमा हुआ।

राजा अजातशत्रु का कोई प्रतिरोध नहीं हुआ। खुले द्वारों से ही वह नगर में घुस गया। नव मल्लकि, नव लिच्छवि एवं काशी-कोसल के अठारह गणराज, जिनने मगध के विरुद्ध संघ बनाया था, अजातशत्रु का कुछ न बिगाड़ सके।

राजा चेटक अपनी हार से दुःखी होकर एक कुएँ में कूद पड़े। अजातशत्रु ने सबको तबाह किया और बड़ी मारकाट मचायी। वैशाली के जो राजकुमार अजातशत्रु की मारकाट से

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

बचकर भागे, उन्होंने नेपाल की तराई में मोरियनगर (मौर्यनगर) की स्थापना की।

वैशाली को मगध के सामने घुटने टेक देने पड़े। उसकी स्वतंत्रता छिन गयी। लिच्छवि कंचन, कामिनी, कादम्ब, कूट-नीति (मागध), कलह और कुमति के षट्कोण में फँसकर अपना व्यक्तित्व खो बैठे और वृजिगण मगध का अंग हो गया।

वैशाली-गणतंत्र के पतन का यह समय बुद्धनिर्वाण से तीन साल बाद है।

फूट जो न कराए, थोड़ा है। वैशाली पारस्परिक फूट के कारण ही विनष्ट हुई। जिसके डर से आसपास के राजा काँपते थे, वह तथागत-प्रशंसित नगरी अपने आदर्श भूलकर पराधीन और श्रीहीन बन गयी।

४५

द्वितीय बौद्ध संगीति

पुष्पपुर के राजा कालाशोक के शासन के दसवें वर्ष में भगवान् बुद्ध के परिनिर्वाण के सौ वर्ष पूरे हुए।

उस समय वैशालीनिवासी अनेक लज्जारहित वज्जिपुत्तक (=वृजिपुत्र) भिक्षु इन दस वस्तुओं का समर्थन करने लगे—

(१) सींग के खोल में नमक रखकर पास रखना कि जहाँ नमक न मिलेगा, वहाँ लेकर खाएँगे।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

(२) निश्चित (मध्याह्न) समय के पश्चात् सूर्य के दो अंगुल अधिक उतर जाने तक भोजन कर सकना।

(३) मध्याह्न-काल के भोजन के बाद भी ग्राम में जाना और और निमंत्रित किये जाने पर दुबारा भोजन कर सकना।

(४) एक ही सीमित स्थान में रहने वाले भिक्षुओं के लिए अपना-अपना उपोसथागार पृथक्-पृथक बना सकना।

(५) पीछे आनेवालों से पीछे उपोसथ की स्वीकृति लेने की आशा से थोड़े-से भिक्षुओं से ही उपोसथकर्म का कर सकना।

(६) 'यह मेरे उपाध्याय ने आचरण किया है, यह मेरे आचार्य ने आचरण किया है' ऐसा समझकर किसी बात का आचरण करना।

(७) भोजन-काल के बाद भी दूध और दही के बीच की अवस्था वाले दूध को पी सकना।

(८) जो सुरा अभी चुवायी नहीं गयी है, जो सुरापन को अभी प्राप्त नहीं हुई है, उसका पीना।

(९) बिना किनारी का आसन रख सकना।

(१०) सोना-चाँदी ग्रहण कर सकना।

जब काकण्डक-पुत्त यश ने यह बात सुनी, तब वे उस विवाद को दूर करने के लिए महावन विहार (वैशाली) आये।

उस समय वैशाली के वज्जिपुत्तक भिक्षु उपोसथ के दिन काँसे की थाली को पानी से भर भिक्षु-संघ के बीच में रखकर आने-जाने वाले वैशाली के उपासकों (गृहस्थों) को कहते थे—

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

"संघ को कार्षापण दो, अधेला (=अर्धकार्षापण) दो, पइली (=पाद कार्षापण) दो, मासा (=माषक रूप) भी दो। संघ के परिष्कार का काम होगा।"

इस पर आयुष्मान् यश काकण्डपुत्त ने वैशाली के उपासकों से कहा—"संघ को कार्षापण (=पैसा) देना धर्मानुकूल नहीं है, इसलिए कार्षापण न दो।"

भिक्षुओं ने यश स्थविर की बात नहीं मानी। तब यश स्थविर नगर में गये और नगरनिवासियों को अपना धर्मपक्ष समझाया। यह जान भिक्षु उनसे और भी बिगड़े तथा उनका वासस्थान घेर लिया।

यश स्थविर जल्द आकाश-मार्ग से चले गये और कौशाम्बी में ठहरकर वहाँ से पावा (=पश्चिम) और अवन्ति के भिक्षुओं के पास दूत भेजा। वहाँ से स्वयं अहोगंग पर्वत (हरिद्वार के समीप) पर जा साणवासी सम्भूत स्थविर से सब हाल कहा। पावा (=पश्चिम) और अवन्ति के स्थविर अहोगंग पर्वत पर आये। वहीं अन्य स्थानों से भी नब्बे हजार भिक्षु एकत्रित हुए।

सौरेय्य रेवत स्थविर उस काल में सबसे प्रमुख थे। उनसे मिलने के लिए सब भिक्षु निकले। उनकी बात को अपनी दिव्य शक्ति से जान सौरेय्य रेवत स्थविर सुख से पहुँचने की इच्छा से उसी क्षण वैशाली चल दिये।

रेवत स्थविर पहले सहजाति (भीटा, जिला इलाहाबाद) पहुँचे। सम्भूत स्थविर के कहने पर यश स्थविर ने रेवत स्थविर से वै

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

दस बातें पूछीं, जिनका समर्थन वज्जिपुत्तक भिक्षु करने लगे थे। रेवत ने कहा कि ये सब बातें निपिद्ध हैं।

वज्जिपुत्तक भिक्षु भी अपने पक्ष के समर्थन के लिए रेवत स्थविर के दर्शनार्थ शीघ्र ही नाव द्वारा सहजाति पहुँचे और उपहार लेकर रेवत से मिले। स्थविर ने उनके पक्ष को स्वीकार नहीं किया और उस पक्ष के ग्रहण करने वाले अपने शिष्य को भी हटा दिया।

सहजाति में ग्यारह लाख नव्वे हजार भिक्षुओं ने रेवत स्थविर के पास आकर कहा – "इस झगड़े को आप शान्त करें"। स्थविर ने कहा—"झगड़े के जो मूल हैं, उनके बिना इस झगड़े का शमन नहीं हो सकता"।

इसलिए वे सब भिक्षु वहाँ से वैशाली गये।

विवादग्रस्त इस बातों का निश्चय करने के लिए संघ एकत्रित हुआ। उस समय वहाँ संघ में अनेक अनर्गल बातें होने लगीं। तब रेवत ने सारे संघ को सुनाकर निश्चय किया कि इन बातों का पञ्चायत (उब्बाहिका) के द्वारा फैसला होना चाहिए। उस विवाद की शान्ति के लिए चार पूर्व के और चार पश्चिम (पावा) के भिक्षुओं को पंच चुना। सर्वकामी, साल्ह, क्षुद्रशोभित और वृषभग्रामी ये चार पूर्व वाले और रेवत, साणसम्भूत, काकण्डक-पुत्र यश और सुमन ये चार पश्चिम वालें—ये आठ स्थविर उस विवाद को शान्त करने के लिए भीड़भाड़ से शून्य, शान्त वालुकाराम में गये।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सर्वकामी महा-स्थविर को उस समय उपसम्पन्न-भिक्षु हुए एक सौ बीस वर्ष हो गये थे। वही उस समय पृथ्वी पर संघ-स्थविर थे।

सर्वकामी, साल्ह, क्षुद्रशोभित, काकण्डकपुत्र यश और साणवासी सम्भूत ये आनन्द स्थविर के शिष्य थे। इन आठ भाग्यवान् स्थविरों ने भगवान् बुद्ध के दर्शन किये थे।

महामुनि के मत को जानने वाले ये महास्थविर वालुकाराम में सुन्दर आसनों पर विराजमान हुए।

प्रश्न पूछने में चतुर महास्थविर रेवत ने उन दस बातों में से एक-एक बात क्रम से सर्वकामी स्थविर से पूछी। महास्थविर के पूछने पर सर्वकामी स्थविर ने कहा—"ये तमाम बातें धर्म-विरुद्ध हैं"।

उन्होंने वहाँ क्रम से विवाद का निश्चय करके फिर संघ में भी उसी तरह प्रश्नोत्तर किया। महास्थविरों ने उन दस बातों के प्रचारक दस हजार भिक्षुओं का दमन किया।

बारह लाख भिक्षु एकत्रित हुए। उस समय रेवत स्थविर सब भिक्षुओं में प्रधान थे। रेवत स्थविर ने चिरकाल तक धर्म की स्थिरता के लिए, धर्मसंगीति करने के निमित्त ज्ञानी त्रिपिटकज्ञ सात सौ अर्हत् भिक्षुओं को चुना। उन सबने कालाशोक की संरक्षकता में वालुकाराम में रेवत स्थविर की प्रधानता में धर्म-संग्रह किया।

बौद्धों की यह दूसरी संगीति थी। यह आठ मासों में समाप्त हुई।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

४६

अर्थशास्त्र में लिच्छवियों और वृजियों का उल्लेख

जिसने शास्त्र, शस्त्र और नन्दराज के अधीन हुई भूमि का क्रोध के कारण बहुत जल्द ही उद्धार कर दिया, उसी विष्णुगुप्त कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की रचना की।

कौटिल्य ने सब शास्त्रों को अच्छी तरह जानकर और उनके प्रयोगों को अच्छी तरह समझकर फिर नरेन्द्र (चन्द्रगुप्त मौर्य) के लिए यह शासनविधि प्रस्तुत की।

पृथ्वी के लाभ और पालन के लिए जितने अर्थशास्त्र प्राचीन आर्यों ने लिखे, प्रायः उन सबको ही संगृहीत करके कौटिल्य ने अर्थशास्त्र का निर्माण किया।

अर्थशास्त्र में कुल पन्द्रह अधिकरण और एक सौ पचास अध्याय हैं। ग्यारहवाँ अधिकरण एक ही अध्याय का है और इसका विषय है 'संघवृत्त'। इसमें संघों के प्रति कैसी नीति बरती जानी चाहिए, इसीका विश्लेषण किया गया है।

आचार्य कौटिल्य का विचार है कि संघलाभ, दण्डलाभ, (=सेनालाभ) और मित्रलाभ—इनमें संघलाभ उत्तम है, क्योंकि इकट्ठा रहने से संघों को शत्रु दबा नहीं सकते। यदि वे संघ अपने अनुकूल हों, तो उनके प्रति साम और दान की नीति बरती जाए और यदि वे प्रतिकूल हों, तो भेद और दण्ड की नीति बरती जाए।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कौटिल्य (चाणक्य) ने दो प्रकार के संघों का उल्लेख किया है—वार्ताशस्त्रोपजीवी और राजशब्दोपजीवी। कम्बोज, सुराष्ट्र, क्षत्रिय, श्रेणी आदि—इनके संघ थे प्रथम प्रकार के। इनकी जीविका थी वार्ता और शस्त्र। कृषि, पशुपालन और वाणिज्य को वार्ता कहते हैं। शस्त्र का अर्थ स्पष्ट है। लिच्छिविक, वृजिक, मल्लक, मद्रक, कुकुर, कुरु, पाञ्चाल आदि—इनके संघ दूसरे प्रकार के थे। इनके शासक 'राजा' कहलाते थे। 'राजा' शब्द का प्रयोग करने का अधिकार इन्हें प्राप्त था, पर वास्तव में ये राजा यानी सर्वाधिकारसम्पन्न नहीं थे। हाँ, आन्तरिक मामलों में ये स्वाधीन थे।

अर्थशास्त्र में लिच्छवियों और वृजियों का उल्लेख महत्त्वपूर्ण है। इससे प्रकट होता है कि यद्यपि लिच्छवियों और वृजियों की स्वाधीनता चली गयी थी, तथापि वे समूल नष्ट नहीं हुए थे—उनका संघ-शासन सीमित अर्थ में जीवित था और अपनी एकता के कारण वे संघ अजेय समझे जाते थे। मौर्य सम्राट् भी उन संघों से अच्छा सम्बन्ध रखना चाहते थे।

महत्त्व की एक दूसरी बात है उपर्युक्त संघों के अध्यक्षों का 'राजा' शब्द से अभिहित होना। इससे प्राचीन परम्परा की पुष्टि भी होती है—बुद्ध और उनके पूर्व के युग में वैशाली में ७७०७ 'राजाओं' के होने का उल्लेख मिलता है।

कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र के संघवृत्त नामक पूर्वोक्त अधि-

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

करण और अध्याय के अन्त में संघमुख्य (संघ के मुख्य अधिकारी) के कर्तव्यों का इस प्रकार वर्णन किया है—

"संघमुख्य को चाहिए कि वह संघों में सदा न्याययुक्त, हितकारी तथा प्रिय व्यवहार करे। कभी उद्धतता से काम न ले। अपने अनुकूल पुरुषों को ही अपने समीप रखे और सब संघ के पुरुषों के मतानुसार ही व्यवहारों को करे।"

लिच्छवियों और वृजियों के संघमुख्य भी ऐसा ही करते रहे होंगे।

कौटिल्य के समय तक 'वैदेहक' शब्द का प्रयोग 'व्यापारी' के अर्थ में होने लगा था। अर्थशास्त्र में इसी अर्थ में 'वैदेहक' प्रयुक्त हुआ है। विदेह के लोग व्यापार में बहुत बढ़े-चढ़े थे। अतएव वैदेहक का अर्थ व्यापारी हो गया, जैसा इस समय 'मारवाड़ी' का हो गया है। वैशाली विदेह में थी और बहुत पहले से व्यापार का केन्द्र थी।

४७

अशोक का स्तम्भ

चन्द्रगुप्त मौर्य के पौत्र अशोक विशेष पुण्य, तेज, बल और ऋद्धि वाले थे। राज्य प्राप्त करने के चार वर्ष बाद पाटलिपुत्र में उनका राज्याभिषेक हुआ। भगवान् बुद्ध के निर्वाण के पश्चात् और अशोक के अभिषेक के पूर्व दो सौ अठारह वर्ष व्यतीत हुए।

अशोक ने बौद्धधर्म स्वीकार किया और अपना शेष जीवन

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

इसके प्रचार एवं प्रजारंजन में विता दिया। बौद्ध स्थविरों से मिलने के लिए वे वहुत उत्सुक रहते थे।

उपगुप्त प्रसिद्ध बौद्ध स्थविर थे और मथुरा में रहते थे। जब उन्हें मालूम हुआ कि सम्राट् अशोक मुझसे मिलने यहाँ आना चाहते हैं, तब उन्होंने कहला भेजा कि 'मैं स्वयं ही पाटलिपुत्र आ जाऊँगा, क्योंकि सम्राट् के मेरे पास आने से वहुत-से आदमियों और वैल आदि पशुओं को कष्ट होगा'।

भिक्षु उपगुप्त अपने अठारह हजार साथियों के साथ नौकाओं पर चढ़कर मथुरा से यमुना और गंगा के मार्ग से होते हुए पाटलिपुत्र पहुँचे। पाटलिपुत्र में उनका वड़े समारोह और धूमधाम के साथ स्वागत किया गया। एक पैर नदी के तीर पर तथा दूसरा नाव पर रखकर सम्राट् ने स्वयं उपगुप्त को नीचे उतारा और फिर इस तरह उसके पैरों पर गिर पड़ा, जैसे जड़ से कटा हुआ वृक्ष।

स्तुति-आशीर्वाद होने के वाद अशोक ने कहा—"हे स्थविर! मेरी इच्छा है कि मैं उन सव स्थानों के दर्शन करूँ, जहाँ कि भगवान् वुद्ध ठहरे थे, उनका सम्मान करूँ तथा वहाँ पर स्थिर निशान छोड़ जाऊँ, जिससे कि भविष्य में आने वाली सन्तति को शिक्षा मिलती रहे।"

स्थविर—"साधु! साधु! तुम्हारे हृदय में वहुत उत्तम विचार उत्पन्न हुआ है। मैं तुम्हें मार्ग दिखाने का कार्य वड़ी प्रसन्नता के साथ करूँगा।"

इस प्रकार तीर्थ-यात्रा का प्रारम्भ हुआ। उपगुप्त सव स्थानों

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

के महत्त्व का वर्णन करते जाते थे और अशोक उनकी यथोचित रीति से पूजा और सम्मान करते हुए दान करते जाते थे।

सबसे पहले तथागत की जन्मभूमि (लुम्बिनीवन) के दर्शन का कार्यक्रम बना। लुम्बिनीवन और कपिलवस्तु नेपाल में हैं। अतः पाटलिपुत्र से उस ओर यात्रा हुई।

रास्ते में वैशाली पड़ती थी। यह नगरी भगवान् गौतम बुद्ध को बहुत प्यारी थी। यहाँ उनके बहुत उपदेश हुए थे। महावन की कूटागारशाला यहीं थी। यहीं भिक्षुणी-संघ की स्थापना हुई थी। बुद्ध ने अपने भिक्षु-संघ के संगठन में लिच्छवि-गणतंत्र का अनुकरण किया था। वैशाली में आनन्द का अर्धांग-स्तूप भी था। * इन सब कारणों से प्रेरित होकर अशोक ने यहाँ अपना एक सिंह-स्तम्भ स्थापित करने का निश्चय किया।

स्तम्भ खड़ा किया गया। उस पर कोई अभिलेख नहीं दिया गया। एक ही पत्थर का समूचा स्तम्भ। न जानें, इसे यहाँ स्थापित करने में कितना परिश्रम हुआ होगा! किन्तु बुद्ध के वैशाली-प्रेम को देखकर अशोक ने यह कार्य कर ही डाला। ऊपर सिंह की मूर्ति रही—उत्तर की ओर देखती हुई। सम्भवतः सिंहों (लिच्छवियों) के नगर में स्थित वह सिंह शाक्यसिंह की जन्मभूमि की ओर देख रहा था, जहाँ अशोक अब जाने वाले थे।

बुद्ध के प्रसिद्ध शिष्य आनन्द के स्तूप पर अशोक ने साठ लाख स्वर्ण-मुद्राएँ अर्पित कीं।

---

* यहाँ द्वितीय बौद्ध संगीति हुई थी।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तदनन्तर वे उत्तर-पश्चिम की ओर चले। उन्हें भविष्य में खड़े किये जाने वाले स्तम्भों के लिए लौरिया-अरेराज, लौरिया-नन्दनगढ़ एवं रामपुरवा में स्थानों की परीक्षा कर लेनी थी और लुम्बिनीवन पहुँचना था, जिसके दर्शन के लिए वे छटपटा रहे थे।

वसाढ़ से सटे हुए कोल्हुआ नामक गाँव में खड़ा स्तम्भ अभी भी अशोक की याद दिला रहा है।

४८

मनुस्मृति में लिच्छवियों का उल्लेख

वैशाली जैनधर्म और बौद्धधर्म का केन्द्र बन गयी। यहां के निवासी निगंठ नाथपुत्त अथवा शाक्यसिंह के अनुयायी बन गये। वैदिक धर्म पीछे पड़ गया। लिच्छवियों में, और उनके पड़ोसी मल्लों में भी, वैदिक आचार का पालन नहीं होने लगा।

यह बात ब्राह्मणों को बुरी लगी। उन्होंने घोषणा कर दी कि लिच्छवि व्रात्य क्षत्रिय हैं, शुद्ध क्षत्रिय नहीं; क्योंकि ये वैदिक आचारों का पालन नहीं करते। मनुस्मृति के लेखक ने अपने ग्रन्थ में इसी विचार को व्यक्त किया और लिच्छवि 'व्रात्य' करार दिये गये। व्रात्य आचारच्युत को कहा जाता है।

मनु द्वारा 'व्रात्य राजन्य' करार दी गयी जातियों और वर्गों की सूची इस प्रकार है – झल्ल, मल्ल, लिच्छवि, नट (=पेशेवर अभिनेता), करण (=पेशेवर लेखक या मुंशी); खस और द्रविड़। 'राजन्य' क्षत्रिय को कहते हैं।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

लिच्छवियों को मनु के इस फतवे की कोई परवाह न थी। वे अपने विचार और तर्क के अनुसार अवैदिक धर्मों के पालन में लीन थे। कुछ निर्ग्रन्थ थे यानी जैनमतावलम्बी थे। कुछ बौद्ध थे, जो बौद्धमत मानते थे और भगवान् गौतम बुद्ध द्वारा दिये गये भिक्षापात्र की पूजा करते थे।

४६

भिक्षापात्र गन्धार चला गया

लिच्छवियों को भगवान् बुद्ध से स्नेह के प्रतीक के रूप में उन का भिक्षापात्र मिला था, जिसे वे वैशाली ले आये थे। इस भिक्षा-पात्र पर उन्होंने पत्थर का स्तम्भ खड़ा किया और उस स्तम्भ पर यह वृत्तान्त खोद दिया।

वैशाली-निवासी साढ़े पाँच सौ वर्षों से भी अधिक समय तक प्यारे बुद्धदेव की निशानी के प्रति श्रद्धा दिखलाते रहे। मगर इसके बाद एक घटना हुई, जिसने लिच्छवियों को इस भिक्षापात्र से वञ्चित कर दिया।

उत्तर-पश्चिम से युए-चि जाति की कुषाण शाखा भारत-विजय करती हुई आ रही थी। कनिष्क इस वंश का सब से बड़ा सम्राट् हुआ, जिसने शक संवत् चलाया। उसने तक्षशिला से आगे बढ़ कर सारनाथ (वाराणसी) तक के प्रदेश जीते और मगध एवं वैशाली पर आक्रमण कर दिया। मगध और वैशाली दोनों राज्य पराजित हुए। दोनों से तथागत का अनुयायी कनिष्क एक-एक

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

रत्न अपनी राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) को ले गया। पाटलिपुत्र की राजसभा में अश्वघोष नामक बौद्ध कवि रहते थे। कनिष्क ने उन्हें अपनी राजसभा में रखना चाहा। वैशाली में गौतम बुद्ध का भिक्षापात्र था, जिसे कनिष्क ने अपने यहाँ—गन्धार देश में—रखना चाहा। विजयी राजा की बात सबको माननी पड़ती है। अतः ये दोनों रत्न पुरुषपुर ले जाये गये।

बुद्ध के भिक्षापात्र के वैशाली में होने से इस नगर का महत्त्व बौद्ध जगत् में बहुत बढ़ गया था। वैशाली का यह गौरव अब जाता रहा।

कनिष्क के सिक्के बक्सर, पटना, वैशाली आदि स्थानों में पाये गये हैं। बिहार में कुषाण-काल के नाप-जोख के बटखरे काफी संख्या में पाये जाते हैं। इन बातों से प्राचीन अनुश्रुति की पुष्टि होती है।

फाहियान ने, जो कनिष्क के करीब सवा तीन सौ वर्षों के बाद आया था, यह भिक्षापात्र अपने समय में गन्धार में देखा था।

५०

नागार्जुन द्वारा प्रशंसा

नागार्जुन प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिकों में हैं। वे अश्वघोष के प्रशिष्य थे। दर्शन के साथ-साथ वे विज्ञान के भी बड़े पंडित थे। उन्होंने एक 'लोहशास्त्र' लिखा और पारे के योग बनाने की विधि निकालकर रसायन के ज्ञान को बढ़ाया। उन्होंने

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सुश्रुत के ग्रन्थ का सम्पादन भी किया। नालन्दा से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था।

उस समय वैशाली के भिक्षुकगण तर्कशास्त्र में बहुत प्रवीण थे और अनेक लोग उनसे तर्क में परास्त हो जाते थे। आर्य नागार्जुन और उनके मशहूर शिष्य आर्य भिक्षुदेव के साथ बातचीत में इसका हमें प्रमाण मिलता है।

एक बार वैशाली के भिक्षुकों की विचार-सभा के लिए निमन्त्रण पाकर भिक्षुदेव वैशाली जाने को तैयार हुए। तब नागार्जुन ने उनको सम्बोधित करके कहा—"हे देव! वैशाली के नवीनपन्थी भिक्षुक तर्कशास्त्र में बहुत ही चतुर हैं। तुम उनके मुकाबिले नहीं हो। इसलिए मुझको स्वयं जाना होगा।"

५१

लिच्छवियों की नेपाल-विजय

उत्तर भारत से कुषाण-सत्ता का उच्छेद करने में लिच्छवि, नाग और यौधेय वीरों ने बहुत काम किया।

वैशाली के लिच्छवि पुनः पनपने लगे। उनका राज्य जम गया। सम्भवतः अभी भी गणतंत्र राज्य ही था, क्योंकि तुरत ही आगे चलकर सिक्कों पर लिच्छवि शब्द के बहुवचन (लिच्छवयः) का प्रयोग पाते हैं। लिच्छविकुल से रक्त-सम्बन्ध स्थापित करना गौरव की बात समझी जाने लगी।

लिच्छवियों का यह पुनरुत्थान था। इस पुनरुत्थान-युग के

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आरम्भ में ही वैशाली के लिच्छवियों ने नेपाल को जीत लिया और वहाँ लिच्छवि राजवंश स्थापित हुआ।

उस वंश के तीसरे राजा पशुप्रेक्षदेव ने पशुपतिनाथ के मन्दिर की स्थापना की। पशुपतिनाथ महादेव चौमुखी महादेव हैं।

कई लिच्छवि राजाओं के अभिलेख मिले हैं। इनमें वे अपने को 'लिच्छविकुलकेतु' कहते हैं।

लिच्छवि नेपाल में कई सौ वर्षों तक राज करते रहे। तत्पश्चात् राघवदेव ने समूचा नेपाल जीत लिया और नेपाल-संवत् चलाया।

फागुन में शिवरात्रि के अवसर पर अभी भी बहुत-से लोग नेपाल की राजधानी काठमाण्डू जाते हैं और पशुपतिनाथ महादेव का दर्शन करते हैं। अपार भीड़ होती है। यह मन्दिर नेपाल में लिच्छवियों की अपूर्व कृति है।

५२

कुमारदेवी का विवाह

पाटलिपुत्र में महाराज गुप्त के पुत्र महाराज घटोत्कच राज करते थे। घटोत्कच के पुत्र का नाम चन्द्रगुप्त था। चन्द्रगुप्त का विवाह कुमारदेवी से हुआ, जो वैशाली की लिच्छवि कन्या थीं।

यह विवाह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इससे गुप्तों को आगे बढ़ने का अवसर मिला, सम्भवतः उन्होंने लिच्छवियों को आत्मसात् कर

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

लिया। दूसरे, गुप्तों का वंश चलाने के लिए कुमारदेवी की कुक्षि से समुद्रगुप्त ने जन्म लिया।

चन्द्रगुप्त-कुमारदेवी-विवाह के स्मारक के रूप में सोने का एक खास सिक्का चला। इसके एक ओर चन्द्रगुप्त और कुमारदेवी की खड़ी मूर्तियाँ हैं और "चन्द्रगुप्त" एवं "श्रीकुमारदेवी" शब्द हैं। दूसरी ओर सिंहासना लक्ष्मी की मूर्ति है और "लिच्छवयः" शब्द लिखा है।

इस विवाह से गुप्तवंश की गौरववृद्धि हुई। चन्द्रगुप्त (प्रथम) ने 'महाराजाधिराज' की पदवी धारण की और गुप्त-संवत् चलाया। गंगा के किनारे प्रयाग, साकेत और मगध—ये सब जनपद वे भोगने लगे। उनने गुप्त-साम्राज्य की नींव डाली। इन सब सफलताओं के लिए पूर्वोक्त विवाह को ही श्रेय दिया जा सकता है।

अपनी मृत्यु के पहले ही चन्द्रगुप्त ने अपने उत्तराधिकारी का चुनाव कर दिया। कुमारदेवी के गर्भ से उत्पन्न समुद्रगुप्त को उन्होंने अपना युवराज घोषित किया।

५३

'लिच्छविदौहित्र'

चन्द्रगुप्त (प्रथम) की लिच्छवि स्त्री कुमारदेवी से उत्पन्न समुद्रगुप्त जब अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् पाटलिपुत्र के सिंहासन के अधिकारी हुए, तब उन्होंने अपने लिए पराक्रम, व्याघ्रपराक्रम

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

और पराक्रमांक की उपाधियां धारण कीं। क्यों न हो? उनमें लिच्छवि रक्त जो प्रवाहित हो रहा था।

अपने अभिलेखों में वे अपने को 'लिच्छविदौहित्र' कहते थे और इसमें वहुत गर्व का अनुभव करते थे। यह वात कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। स्पष्ट ही लिच्छवि अत्यन्त गौरवपूर्ण जाति थे और उनसे गुप्तवंशजों को आगे वढ़ने में सहायता मिली थी। लिच्छवियों का पूर्व गौरव लोगों को याद था। जिस प्रकार करीव साढ़े आठ सौ वर्ष पहले लिच्छवियों का एक नाती वैदेहीपुत्र (अजातशत्रु) कहलाता था, उसी प्रकार अव यह दूसरा नाती (समुद्रगुप्त) अपने को 'लिच्छविदौहित्र' कहने लगा। इस एक शव्द में गुप्तों की प्रारम्भिक उन्नति का सारा इतिहास निहित है।

'लिच्छविदौहित्र' ने अपना 'व्याघ्रपराक्रम' नाम सार्थक किया। आर्यावर्त के राज्यों को उन्होंने उन्मूलित किया, आटविक राजाओं को सेवक वनने को वाधित किया, दक्षिणापथ को आक्रान्त किया, प्रत्यन्त राज्यों एवं गणराज्यों से आत्मसमर्पण कराया और कुछ विदेशी राज्यों से आत्म-निवेदन भी कराया। कौन कह सकता है, उनको अपनी दिग्विजयों में अपने नाना के वंश से कितनी सहायता मिली होगी?

अश्वमेध यज्ञ द्वारा उन्होंने अपना पराक्रम प्रतिष्ठित किया। वस्तुतः वे धनद (कुवेर), वरुण, इन्द्र और अन्तक (यम) के समान थे।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

५४

फाहियान का वैशाली-भ्रमण

फाहियान चीनी यात्री था। बौद्धधर्म के पवित्र स्थानों के दर्शन एवं बौद्ध ग्रन्थों की खोज के लिए वह भारत आया था। वह चीन से स्थल-मार्ग द्वारा चला, छः वर्षों में मध्यदेश (= उत्तर-प्रदेश-विहार) में पहुँचा, छः वर्ष वहाँ फिरा, लौटकर समुद्र-मार्ग से तीन वर्षों में चीन पहुँचा।

मध्यदेश में श्रावस्ती, कपिलवस्तु और कुशीनगर होता हुआ फाहियान वैशाली पहुँचा। आते ही उसने पवित्र स्थानों के दर्शन शुरू किये।

सबसे पहले उसे वह स्थान मिला, जहाँ महावन की कूटागार-शाला थी। यह विहार नगर के उत्तर में था। यहीं आनन्द का अर्द्धांगस्तूप भी था। कुछ दक्षिण बढ़कर उसने अम्बपालीवन भी देखा, जिसे अम्बपाली ने बुद्ध को समर्पित कर दिया था। जहाँ भगवान् बुद्ध ने नागावलोकन किया था और कहा था—"इस स्थान पर (यानी वैशाली में) मैंने अपने पार्थिव जीवन का अन्तिम धार्मिक कृत्य किया है"—वह स्थान भी चीनी यात्री ने देखा। नगर के उत्तर-पश्चिम था चापाल चैत्य। यहीं पर बुद्ध ने माघ-पूर्णिमा के आसपास कहा था—"आज से तीन मास बाद तथागत का निर्वाण होगा।" अनुवादकों ने इस शब्द को 'धनुर्वाण-त्याग' बना दिया है, जो वस्तुतः चापाल (चाप रख देने)

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

के चीनी भाव का विकृत रूप है। फाहियान ने वालुकाराम (वालिकाराम) भी देखा, जहाँ द्वितीय बौद्ध संगीति हुई थी।

उसने आनन्द के निर्वाण पाने और स्तूप बनने का वर्णन किया है।

पाँच नदियों के संगम पर पहुँचने के बाद उसने गंगा नदी पार की और मगध में पाटलिपुत्र पहुँच गया। यहाँ उसे तीन वर्ष ठहरकर अध्ययन करना था और पीछे लंका होकर चीन लौट जाना था।

वैशाली की महत्ता से आकृष्ट होकर ही फाहियान यहाँ आया था। अपने यात्रा-विवरण में उसने जो वैशाली का वर्णन किया है, वह इतिहास का महत्त्वपूर्ण अंग है।

५५

चौमुखी महादेव

वसाढ़ से सटे पूर्व कम्मन छपरा नामक गाँव है। कमकरों का ही गाँव यह अभी भी है। सम्भव है, प्राचीन काल का कर्मारग्राम यही हो।

डेढ़ हजार वर्षों से भी अधिक हुआ कि यहाँ चौमुखी महादेव की स्थापना हुई थी। मूर्ति अभी भी कायम है, कम्मन छपरा गाछी में स्थित है, कच्ची सड़क के नजदीक। वहाँ सप्ताह में हाट भी लगती है।

मूर्ति के नीचे गुप्त-सम्राट् चन्द्रगुप्त (द्वितीय) विक्रमादित्य का

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सोने का एक सिक्का मिला था। स्थापना के समय वह सिक्का रखा गया होगा। आज भी देव-प्रतिमा की स्थापना के अवसर पर ऐसा ही किया जाता है।

एक अभिलेख भी है—मूर्ति के निचले भाग में; पहले मिट्टी से ढँका था, अब मिट्टी हटा देने से साफ मालूम पड़ता है। इसके काफी अंश घिस गये हैं। जो अंश वचा हुआ है, वह भी प्रशंसा के योग्य है—गुप्तकाल की संस्कृत, लच्छेदार और प्राञ्जल।

चारों दिशाएँ महादेव के मुख ही हैं और महादेव चारों दिशाओं को देखते हैं, इसी विचारधारा पर उक्त मूर्ति का निर्माण हुआ होगा।

गुप्तकाल में वैशाली में वौद्धों और जैनों के अतिरिक्त देव-पूजक भी काफी संख्या में थे, ऐसा प्रतीत होता है।

यह मूर्ति नगर के पूर्वी किनारे पर स्थापित करायी गयी मालूम पड़ती है।

५६

गुप्तकालीन मुहरें और अन्य प्राचीन चिह्न

वैशाली के गढ़ की तीन वार खुदाई हुई है।

तीनों बार गुप्तकाल की मुहरें (seals) काफी संख्या में मिली हैं।

पहली वार सात सौ से भी अधिक मुहरें मिली थीं, दूसरी वार दो सौ से अधिक।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मुहरें मिट्टी की बनी होती हैं, आकार में साधारणतः गोल। उन पर किसी देवता की मूर्ति भी हो सकती है। उन पर व्यक्तियों के नाम लिखे रहते हैं।

इन मुहरों का अध्ययन करने से कई बातें मालूम पड़ती हैं— शासन-प्रबन्ध, आर्थिक अवस्था, धार्मिक अवस्था एवं कला।

वैशाली गुप्तकाल में तीरभुक्ति नामक प्रदेश की राजधानी थी। यहाँ गुप्त-सम्राट् का प्रतिनिधि रहता था।

वैशाली उस समय वाणिज्य-व्यापार का केन्द्र थी। लाखों का व्यापार होता था और अनेक सिक्के चलते थे। व्यापारियों के अपने संगठन थे, जिन्हें 'निगम' कहते थे। श्रेष्ठी (सेठ), सार्थवाह (सामान साथ-साथ लेकर व्यापार करनेवाले) और कुलिक (व्यापारी)—सभी व्यापार में लगे थे। कुलिकों का मुखिया प्रथमकुलिक कहलाता था। वाणिज्य में ही लक्ष्मी का निवास है, अतः वैशाली श्री का केन्द्र थी।

शैवमत और वैष्णवमत उन्नत अवस्था में थे। मुहरों पर कलश, पादुका, शंख, त्रिशूल, वेदी आदि धार्मिक प्रतीक मिले हैं। लक्ष्मी और सूर्य की पूजा भी प्रचलित थी। बौद्धधर्मपरक मुहरें नहीं मिली हैं।

मुहरों से तथा वहाँ पाये गये अन्य प्राचीन चिह्नों से वैशाली की विकसित कला का परिचय मिलता है। मृण्मूर्तियों (मिट्टी की मूर्तियों, टेराकोटा) से उस समय के जीवन की झाँकी मिलती है। बहुत सी मृण्मूर्तियाँ पटना संग्रहालय (म्यूजियम) में रखी

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हुई हैं। पत्थरों पर काम किया हुआ है, जो अपूर्व है। एक गोल पत्थर पर फूलों का बहुत अच्छा काम किया हुआ है, जिसकी सुन्दरता की प्रशंसा पश्चिमी विद्वानों ने भी की है।

वस्तुतः गुप्तकालीन वैशाली प्रादेशिक शासन, आर्थिक समृद्धि, सामुदायिक जीवन, धार्मिक सहिष्णुता और उन्नत कला का केन्द्र थी।

५७

वाङ्-ह्वेन-सी का वैशाली-भ्रमण

वाङ्-ह्वेन-सी (Wang-Hiuen-Tse) भी, फाहियान के समान, चीनी यात्री था। उसने भारत की यात्रा की और उसका वृत्तान्त लिखा।

उसने दो बार वैशाली के दर्शन किये।

जब वह दूसरी बार वैशाली आया, तब उसने बौद्ध भिक्षुओं को कपड़े दिये और इस दान-पुण्य से अपना जीवन सार्थक किया।

❀ ❀ ❀

इस समय के चीनी साहित्य में वैशाली, विदेह और तीरभुक्ति का स्वतंत्र रूप से भी उल्लेख पाया जाता है।

५८

ह्वेनसांग का वैशाली-भ्रमण

ह्वेनसांग भी, फाहियान के समान, चीनी यात्री था। बौद्ध-

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

धर्म के पवित्र स्थानों के दर्शन एवं बौद्धसाहित्य के संग्रह के लिए वह भारत आया था। फाहियान के चलने के २३० वर्ष बाद वह चला। स्थल-मार्ग से वह आया था और स्थल-मार्ग से ही लौटा। सारी यात्रा में उसे सोलह वर्ष लगे। उसने समस्त भारत का भ्रमण किया। फाहियान (या आगे आने वाला इत्सिंग) केवल उत्तरी भारत का भ्रमण कर सका था।

मध्यदेश में श्रावस्ती, कपिलवस्तु, रामगाम, कुशीनगर और काशी के बाद वह वैशाली पहुँचा। यहाँ की भूमि, जलवायु और निवासियों के बारे में वह लिखता है—

"भूमि अच्छी और उपजाऊ है। फूल और फल बहुतायत से उत्पन्न होते हैं। आम और केले बहुत ज्यादा मिलते हैं और उनकी बड़ी कीमत की जाती है। जलवायु अनुकूल और सम है। लोगों के रहन-सहन के ढंग शुद्ध और ईमानदरी से भरे हैं। वे धर्म को प्यार करते हैं और विद्या का बहुत समादर करते हैं। विधर्मी (= अबौद्ध) और धर्म-विश्वासी (= बौद्ध), दोनों एक साथ रहते हुए पाये जाते हैं। कई सौ संघाराम हैं, जो अधिकतर टूटी-फूटी हालत में हैं। तीन या पाँच जो अभी भी हैं, उनमें भिक्षु नहीं हैं। अनेक देव-मन्दिर हैं, जिनमें विभिन्न वर्गों के मतावलम्बी हैं। निर्ग्रन्थ के मानने वाले बहुत ज्यादा हैं। वैशाली, जो राजधानी है, बहुत हद तक उजाड़ है।"

ह्वेनसांग ने बहुत-से स्तूप देखे। उसने विवरण-सहित उन स्तूपों का उल्लेख किया है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स्तम्भ के बारे में लिखा है—

"उत्तर-पश्चिम में अशोकराज द्वारा निर्मित एक स्तूप है; इसकी बगल में करीव-करीव पचास या साठ फीट ऊँचा एक प्रस्तर-स्तम्भ है, जिसके शिखर पर एक सिंह की मूर्ति है। प्रस्तर-स्तम्भ के दक्षिण एक तालाव -- मर्कटह्रद—है। यह कुछ वन्दरों द्वारा बुद्ध के उपयोग के लिए खोदा गया था।"

आगे वह लिखता है—

"वैशाली नगर के भीतर और वाहर और उसके चारों ओर पवित्र अवशेष इतने अधिक हैं कि उन सवको गिनाना कठिन होगा। पग-पग पर वड़ी-वड़ी जगहें और नींवें देखी जाती हैं, जो ऋतुओं के थपेड़ों और वर्षों के व्यतीत होने से विलकुल नष्ट हो गयी हैं। जंगल काट डाले गये हैं; छिछली झीलें सूख गयी हैं और वदवू दे रही हैं; विनाश के घृणाजनक अवशेषों को छोड़ और कुछ नहीं लिखा जा सकता।"

आखिर ह्वेनसांग वौद्ध था और था संस्कृति का प्रेमी। तव वह वैशाली की दुर्दशा कैसे देख सकता!

वैशाली से वह दक्षिण की ओर श्वेतपुर विहार आया। वहाँ से वृजिराज्य और नेपाल होते हुए वह वैशाली लौटा तथा गंगा पार कर मगध पहुँचा। यहाँ से पूर्वी भारत होते हुए उसे दक्षिण भारत की यात्रा करनी थी।

वैशाली की महत्ता से आकृष्ट होकर ही ह्वेनसांग यहाँ आया

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

था। उसने अपने यात्रा-विवरण में वैशाली के अवशेषों का विस्तृत वर्णन किया है।

५६

इत्सिंग की वैशाली-यात्रा

ह्वेनसांग के चीन लौटने के छब्बीस वर्ष बाद एक अन्य चीनी यात्री समुद्र-मार्ग से भारत के लिए चल पड़ा। यह था इत्सिंग। इसका भारत-विवरण भी, ह्वेनसांग के भारत-यात्रा-विवरण के समान, बहुत विस्तृत है। चौबीस वर्षों के बाद यह समुद्र-मार्ग से ही स्वदेश लौटा था।

भारत में इत्सिंग के यात्रा-मार्ग पर मुख्य स्थान ये थे—ताम्रलिप्ति, राजगृह, नालन्दा, (फिर लौटकर) राजगृह, बोधगया, पाटलिपुत्र, वैशाली, कुशीनगर, कपिलवस्तु, श्रावस्ती, प्रयाग और कौशाम्बी।

ऊपर की स्थान-सूची से मालूम पड़ जाता है कि इत्सिंग ने भी वैशाली की यात्रा की थी।

६०

वैशाली के उपनिवेशक

अराकान (बर्मा) में अक्याब जिले में वेथाली नाम की जगह है। यह वैशाली शब्द का स्थानीय उच्चारण है। यहाँ वैशाली के निवासियों ने अपना उपनिवेश स्थापित किया था। जिस तरह

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चम्पा (भागलपुर) के उपनिवेशकों ने अपने उपनिवेश का नाम चम्पा रखा, उसी तरह वैशाली के उपनिवेशकों ने भी अपने नये उपनिवेश का नाम वैशाली ही रखा।

वैशाली बहुत पहले से व्यापार का केन्द्र थी। गण्डक के रास्ते नावें गंगा में आती थीं और वहाँ से चम्पा और ताम्रलिप्ति होते बंगाल की खाड़ी में चली जाती थीं। पाटलिपुत्र की स्थापना तो वैशाली के वज्जियों को रोकने के लिए हुई थी। 'वैदेहक' शब्द का अर्थ ही व्यापारी हो गया। गुप्त-काल की मुहरों से सिद्ध होता है कि वैशाली का व्यापारिक जीवन उन्नत ही रहा। इसी की परिणति हुई उपनिवेशीकरण में।

पर वैशाली के उपनिवेशीकरण में कहीं खून-खराबी का नाम नहीं। भला जिसका घनिष्ठ सम्बन्ध तथागत के जीवन से हो, उस नगर से और क्या आशा की जाए? व्यापार के सहारे ही लोग वहाँ पहुँचे।

❁ ❁ ❁

बर्मा के प्राचीन इतिहास में अनिरुद्ध नामक प्रसिद्ध राजा हुआ है। यह पगन का राजा था। इसका विवाह वैशाली (विदेह) की राजकुमारी से हुआ। इससे पता चलता है कि वैशाली (विदेह) के बाहरी सम्बन्ध बने हुए थे।

६१

उत्साह की बुद्ध-भक्ति

वैशाली में माणिक्य नामक एक महानुभाव रहते थे। सम्भव

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

है, आजकल जो मानिकपुर गाँव है, वह उन्हीं के नाम पर बसा हो। अगर मुजफ्फरपुर से वैशाली जायी जाए, तो 'रेवारोड' पकड़कर मानिकपुर आते हैं और मानिकपुर चौराहे से दक्षिण मुड़कर तीन मील चलकर वसाढ़ पहुँचते हैं।

माणिक्य के लड़के का नाम था 'उत्साह' (= उछाह)। वे बौद्ध थे—महायानमत के मानने वाले। भगवान् बुद्ध के प्रति उनकी अपूर्व भक्ति थी। उनका पेशा था मुंशीगिरी यानी वे करणिक थे।

उनके हृदय में बुद्ध-भक्ति बढ़ती ही गयी। तब उन्होंने भगवान् गौतम बुद्ध की एक मूर्ति बनवायी। भगवान् भूमि-स्पर्श-मुद्रा में बोधिवृक्ष के नीचे बैठे थे। काले पत्थर की बनी वह मूर्ति अत्यन्त सुन्दर थी। मूर्ति बनवाकर उन्होंने उसका दान कर दिया। पर उनकी निस्पृहता तो देखिए। इस दान से जो पुण्य होता, वह उन्होंने अकेले नहीं लिया—अपने आचार्य, उपाध्याय, माता-पिता और अपने से लेकर समस्त प्राणिमात्र के अनन्त कल्याणार्थ उसे समर्पित कर दिया!

यह बात हजार या आठ सौ वर्ष पहले की है। हमलोग 'उत्साह' के बारे में कुछ नहीं जान पाते, मगर उन्होंने मूर्ति के निचले भाग में तीन पंक्तियों में एक अभिलेख खुदवा दिया था, जिससे हम इतना भी जान सके।

बौद्धों का एक प्रसिद्ध सिद्धान्त-वाक्य है; वह भी उस मूर्ति में खुदा हुआ है—

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ये धर्मा हेतुप्रभवा हेतुं तेषां तथागतोह्यवदत्।
तेषां च यो निरोध एवं वादी महाश्रमणः॥

(अर्थात् जो धर्म या भाव किसी कारण से उत्पन्न होते हैं, उनके कारण क्या हैं और उन सबको कैसे रोका जा सकता है, इसे महाश्रमण बुद्धदेव ने बतला दिया है।)

मुसलमानों का जब वैशाली पर आक्रमण हुआ, तब बुद्ध की यह मूर्ति धरती के नीचे गाड़ दी गयी।

करीब सौ वर्ष हुए, यह मूर्ति अशोक-स्तम्भ के उत्तर किसी खेत से निकली और स्तम्भ के उत्तर पहले से बने एक स्तूप के ऊपर एक मन्दिर बनाकर स्थापित कर दी गयी।

उत्साह से बनवायी और दान की गयी यह मूर्ति अभी भी कोल्हुआ में सुरक्षित है।

६२

जैन वैशाली को भूल गये

जैनों के लिए वैशाली का बहुत महत्त्व है। उनके चौबीसवें और अन्तिम तीर्थंकर महावीर का जन्म वहीं हुआ था। गृहत्याग के बाद उन्होंने बारह वर्षावास वहाँ किये थे। वहाँ जैनधर्म के बहुत अनुयायी थे। ह्वेनसांग के समय भी वैशाली में बहुत से निर्ग्रन्थ (= जैन) रहते थे। पालयुग में वहाँ तीर्थंकरों की मूर्तियाँ बनती थीं।

मगर इसके बाद जैन वैशाली को भूल गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

यह कम आश्चर्य की बात नहीं है कि जैनों ने अपने तीर्थंकर की जन्मभूमि को बिलकुल भुला दिया।

इसके क्या कारण हो सकते हैं ?

इसके लिए दो-चार शताब्दियाँ ऐसी होनी चाहिए, जब कि वज्जीभूमि और वैशाली से जैनों का कोई सम्पर्क नहीं रह गया था।

मुसलमानों ने विहार जीत लिया था और बौद्धों को खदेड़ दिया था। जैनों पर भी इसका असर पड़ा होगा। उत्तर विहार में भी इस्लाम ने प्रवेश किया।

परन्तु इसके पहले ही कई अन्य प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी आ चुकी थीं।

ह्वेनसांग के पहले ही वैशाली उजाड़ हो चुकी थी। वहाँ से लोगों के नेपाल और वर्मा चले जाने का भी कुछ प्रभाव पड़ा ही होगा। इस समय जैनधर्म पश्चिम और दक्षिण भारत की ओर चला गया। इसी में वैशाली पीछे पड़ गयी। सम्भव है, गण्डक नदी का पाट भी इस समय बदला हो।

मुसलिम-युग में जैन वैशाली से बिलकुल अलग हो गये और इसे भूल ही गये। उधर इस्लाम तेजी से अपने पैर बढ़ा रहा था।

६३

शेख मुहम्मद फैजुल्लाह काजिन शुत्तारी

मक्का शरीफ में इमाम मुहम्मद फकीह रहते थे। उनको लोग पीछे ताज फकीह भी कहने लगे थे। इस्लाम के प्रचार के लिए

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

वे भारत आये। उन्होंने मनेर (पटना जिला) को वहाँ के हिन्दू सरदार से जीतकर उसे अपना प्रचार-केन्द्र बनाया।

उनके तीन लड़के थे—इसराईल, इसमाईल और अब्दुल अजीज। इन तीनों को भारत में इस्लाम का प्रचार करने की आज्ञा देकर वे मक्के लौट गये। वहाँ अभी भी उनकी कब्र दिखलायी जाती है।

फकीह साहब के तीन पुत्रों में सबसे बड़े और सबसे छोटे तो गंगा के दक्षिण रहे, मँझले (इसमाईल) ने गंगा के उत्तर इस्लाम-प्रचार का भार उठाया।

इसमाईल के वंशजों में सबसे प्रसिद्ध हुए बनिया-बसाढ़ के शेख मुहम्मद फैजुल्लाह काजिन शुत्तारी।

शेख मुहम्मद काजिन साहब इमाम मुहम्मद फकीह की नवीं पीढ़ी में मनेर में पैदा हुए।

उस समय माण्डू (मध्य भारत) में शेख अब्दुल्ला शुत्तारी नामक एक सन्त रहते थे। काजिन की उनके प्रति बड़ी भक्ति थी। वे पैदल माण्डू गये और उनके शिष्य बन गये।

काजिन का ध्यान धर्म-प्रचार की ओर गया। वैशाली में उस समय चैत रामनवमी का मेला लगा करता था। इसी मेले को काजिन ने धर्मप्रचार का उपयुक्त अवसर समझा। वे धर्म-प्रचार करने लगे। उन्हें सफलता मिली।

एकसठ वर्षों तक वे जीवित रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

उनके मरने पर उनकी कब्र बसाढ़ में एक ऊँचे बौद्ध स्तूप के ऊपर बनी।

शेख काज़िन के कई पुत्र थे। सबसे बड़े मखदूम शेख उवैस बसाढ़ में एक मस्जिद खड़ी करने का प्रयत्न करने के कारण हिन्दुओं द्वारा मारे गये। एक दूसरे लड़के अबुल फतह की कब्र हाजीपुर के समीप गण्डक के किनारे तँगोल में है।

शेख मुहम्मद काजिन एवं उनके वंश का इतिहास उत्तर बिहार में इस्लाम के प्रचार का इतिहास है। अभी भी हाजीपुर सबडिवीजन के गाँवों के नामों में दो तिहाई मुसलिम उद्गम के हैं।

प्रति वर्ष बसाढ़ में चैत रामनवमी को शेख काजिन की कब्र पर मेला लगा करता है। इस कब्र को 'मीरानजी की दरगाह' के नाम से पुकारते हैं।

६४

वैशाली के ऐतिहासिक अवशेष

स्थिति

उत्तरी बिहार का यह प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान मुजफ्फरपुर जिले में हाजीपुर से २३ मील उत्तर-पश्चिम और मुजफ्फरपुर से २३ मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यहाँ से गण्डक नदी बिलकुल समीप है—केवल तीन-चार मीलों पर।

आवागमन के मार्ग

हाजीपुर और मुजफ्फरपुर से यहाँ तक नियमित रूप से लॉरी

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

वायें से दायें—वैशाली में प्राप्त जैन तीर्थंकर, सिंहनाद अवलोकितेश्वर और शिव-पार्वती (पाल-कालीन मूर्तियाँ)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

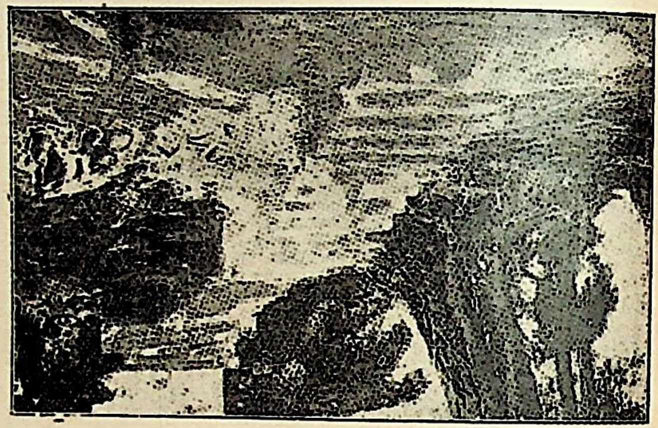

शेख मुहम्मद काजिन की दरगाह
(प्राचीन बौद्ध स्तूप-पर बनी हुई)
ऊपर जाने की सीढ़ियाँ साफ दीख पड़ती हैं।

पृष्ठ १२६

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सर्विस है। टमटम से भी जा सकते हैं। मुजफ्फरपुर से टैक्सी (भाड़े की मोटर) भी मिलती है।

मुजफ्फरपुर वाली सड़क ज्यादा अच्छी है। मुजफ्फरपुर से 'रेवारोड' नामक सड़क पकड़िए, जो गण्डक नदी के किनारे स्थित 'रेवाघाट' को जाती है। सरैया से आगे मानिकपुर पहुँचकर चौराहे से दक्षिण की ओर मुड़ जाइए। तीन मील दक्षिण की ओर चलकर आप बसाढ़ पहुँच जाएँगे। 'राजा विशाल का गढ़' नामक ऊँचा टीला आपका स्वागत करता मिलेगा। वहाँ से आप उत्तर और पश्चिम की ओर आसपास के गाँवों में घूम लें।

ऐसा भी कर सकते हैं कि आप मानिकपुर चौराहे पर न मुड़कर 'रेवारोड' द्वारा आगे बढ़ते ही जाएँ। उस हालत में आपको आगे जाकर बखरा नामक गाँव में 'रेवारोड' नाम की सड़क को छोड़ देना पड़ेगा और आप दक्षिण-पूर्व मुड़कर कोल्हुआ का रास्ता पकड़ेंगे। बिलकुल समीप ही है। वहाँ अशोक-स्तम्भ आपका रास्ता देखेगा। वहाँ से आप पूर्व और दक्षिण बढ़ जाएँगे। अगर आप चाहें, तो बसाढ़ पहुँचने के बाद कम्मनछपरा और बसुकुण्ड देखकर उत्तर की ओर बढ़ मानिकपुर चौराहा पकड़ ले सकते हैं। और मानिकपुर चौराहे से 'रेवारोड' नामक सड़क द्वारा मुजफ्फरपुर लौट आ सकते हैं।

वैशाली के दर्शनीय स्थान

यों तो समूचा वैशाली-क्षेत्र प्राचीन अवशेषों से भरा हुआ है, मगर उतने सारे अवशेष देखने का शायद आपके पास समय न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हो। इसलिए हम आपको केवल मुख्य अवशेषों एवं दर्शनीय स्थानों से परिचित कराएँगे।

ये अवशेष मुख्यतया छः गाँवों में फैले हुए हैं। बसाढ़, चकरामदास और कम्मनछपरा हाजीपुर सब-डिवीजन के लालगंज थाने में पड़ते हैं और कोल्हुआ, बनिया एवं वसुकुण्ड सदर (मुजफ्फरपुर) सब-डिवीजन के पारू थाने में पड़ते हैं।

अगर आप पश्चिम (कोल्हुआ) से देखना शुरू करें, तो ऐतिहासिक अवशेष इस प्रकार आपकी नजर के सामने आएँगे—

आप 'रेवारोड' नाम की सड़क छोड़कर बखरा स्कूल से दक्षिण-पूर्व मुड़े। सबसे पहले

कोल्हुआ—के पश्चिमी भाग में स्थित 'भीमसेन का पल्ला' (भीमसेन का भार) मिलेगा। ये दो ऊँचे टीले हैं। वहाँ से अशोक-स्तम्भ चले आइए। स्तम्भ के ऊपर सिंह की मूर्ति है। स्तम्भ को लोग 'भीमसेन की लाट' भी कहते हैं। अशोक ने इसपर अपना अभिलेख नहीं लिखवाया था। स्तम्भ के सटे दक्षिण रामकुण्ड नामक छोटा पोखर है। इसे ह्वेनसांग के लेखानुसार बौद्ध इतिहास में प्रसिद्ध 'मर्कटह्रद' समझा जाता है। कूटागारशाला भी इसके समीप ही थी। स्तम्भ के सटे उत्तर एक स्तूप है। उस पर लगी सीढ़ियों के सहारे ऊपर चढ़ जाइए और वहाँ बने मन्दिर में भूमिस्पर्श-मुद्रा में बैठे भगवान् गौतम बुद्ध की पालयुगीन विशाल मूर्ति देखिए। मूर्ति के निचले भाग में अभिलेख भी हैं—'उत्साह' का अभिलेख और बौद्धधर्म का सिद्धान्त-वाक्य। मन्दिर के

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पिछवाड़े से पश्चिम की ओर ताकिए, तो 'भीमसेन का पल्ला' दीख पड़ेगा। सीढ़ी से उतरकर अब चल दीजिए और

बनिया—आइए। यहाँ एक मन्दिर में चौमुखी महादेव की एक प्राचीन मूर्ति है। वहां से—

चकरामदास—आइए। यहाँ एक म्यूजियम है, जिसे 'वैशाली म्यूजियम' कहते हैं। इसमें इधर-उधर मिले हुए वैशाली-क्षेत्र के प्राचीन चिह्न रखे हुए हैं। म्यूजियम का नया भवन खरौना पोखर के उत्तरी किनारे तैयार हो रहा है। हाल में जो उस गाँव में खुदाई हुई थी, वह जगह भी देख सकते हैं। नये म्यूजियम-भवन से दक्षिण मुड़िए। आप तुरत—

बसाढ़—पहुँच गये। खरौना पोखर का मुख्य भाग बसाढ़ में है, थोड़ा चकरामदास में है। वहाँ वालों का विश्वास है कि लिच्छवियों की 'अभिषेक-पुष्करिणी' यही है। पोखर से दक्षिण बढ़िए—खेतों होकर। आप बावना पोखर आ गये। यहाँ एक मन्दिर है, जिसमें गणेश, सप्तमातृका, बुद्ध सिंहनाद अवलोकितेश्वर, हरगौरी (शिव-पार्वती) और विष्णु की प्राचीन मूर्तियाँ हैं। बगल में एक जैन मन्दिर है, जहाँ जैन तीर्थंकर की एक अत्यन्त प्राचीन और भव्य मूर्ति विराजमान है। बावना पोखर से आकर शेख मुहम्मद काजिन की दरगाह देखिए, जो प्राचीन बौद्ध स्तूप पर बनायी गयी थी। ऊपर जाने के लिए सीढ़ियाँ लगी हैं। समीप ही हरिकटोरा का मन्दिर है, जहाँ कार्तिकेय की एक प्राचीन मूर्ति है। अब आप वैशाली-संघ की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अतिथिशाला में आकर विश्राम कर लें और फिर 'राजा विशाल का गढ़' देखें। बहुत विशाल टीला है। यहीं खुदाइयां हुई हैं। इसी टीले के दक्षिण-पूर्वी कोने पर खेत में प्रति वर्ष चैत सुदी तेरह को वैशाली-महोत्सव हुआ करता है। कुछ हटकर सड़क के किनारे महावीर तीर्थंकर हाई इंगलिश स्कूल है। बसाढ़ देखकर आपने उत्तर जाने वाली सड़क पकड़ी। तुरत ही पूर्व मुड़कर आप—

कम्मनछपरा—में आ गये। यहां चौमुखी महादेव की एक गुप्तकालीन मूर्ति है। जड़ में एक अभिलेख भी है, जिसका काफी हिस्सा घिस गया है। कम्मनछपरा से लौटकर आप फिर उत्तर की ओर जाने वाली सड़क पर आ गये और आगे बढ़े। कुछ दूर जाकर आप फिर पूर्व की ओर मुड़े। इस बार आप—

वसुकुण्ड—आ गये। क्षत्रियकुण्डपुर का वर्तमान प्रतिनिधि यही है, जहां जैनों के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान् महावीर का जन्म हुआ था।

वसुकुण्ड से लौटकर आप फिर उत्तर वाली सड़क पकड़ें और मानिकपुर चौराहे से 'रेवारोड' नाम की सड़क पकड़ मुजफ्फरपुर पहुँच जाएँ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

६५

वैशाली का पुनरुद्धार

(वैशाली-संघ और वैशाली-महोत्सव)

वैशाली-संघ और वैशाली-महोत्सव वैशाली के पुनरुद्धार के सुन्दर प्रयत्न हैं।

वैशाली-संघ

वैशाली-संघ की स्थापना प्रथम वैशाली-महोत्सव के अवसर पर ३१ मार्च, १९४५ ई० को हुई थी। इसके दो उद्देश्य थे। पहला उद्देश्य था वैशाली के ध्वंसावशेषों को प्रकाश में लाना और इसे विस्मृति के उस गर्त से निकालना, जिसमें यह कई दशकों से पड़ी हुई थी। दूसरा उद्देश्य था साधारणतया ग्रामीण जनता में, और विशेषकर वैशाली के निवासियों में, एक नवीन सांस्कृतिक और सामाजिक चेतना जाग्रत करना और इस प्रकार वैशाली के लोकतांत्रिक आदर्शों से अनुप्राणित एक जन-संस्कृति-आन्दोलन का सूत्रपात करना। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर अबतक निम्नलिखित कार्य किये गये हैं :—

(१) प्रत्येक वर्ष संघ "वैशाली-महोत्सव' मनाता रहा है।

(२) वैशाली-सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण प्रकाशन हुए हैं।

(३) वैशाली के प्राचीन चिह्नों का एक छोटा संग्रहालय (वैशाली म्यूजियम) स्थापित किया गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

(४) संघ ने वैशाली इलाके के नवयुवकों को पटने में संग्रहालय-कार्य (म्यूजियम वर्क), कला-कौशल, दस्तकारी, ग्रामोद्योग और चित्रकला की शिक्षा पाने के लिए वृत्तियाँ दी हैं।

(५) गणसभा के तत्त्वावधान में ग्राम-स्वायत्त-शासन-प्रणाली का संगठन किया गया है। इस सभा ने उस इलाके में ग्राम-विकास और कृषि-सुधार के कामों को अपने हाथों में ले लिया है।

(६) वैशाली में एक हाई स्कूल, एक पुस्तकालय और एक दातव्य औषधालय की स्थापना हुई है।

(७) एक अत्यन्त सफल "श्रेष्ठतर ग्राम"-प्रतियोगिता का भी श्रीगणेश किया गया है।

(८) वैशाली ले जानेवाली और वहाँ की स्थानीय सड़कों के सुधार के लिए यत्न जारी है।

(९) अब खास वैशाली से हाजीपुर और मुजफ्फरपुर तक 'बस' सर्विस चालू हो गयी है।

(१०) संघ ने करीब सात हजार रुपये खर्च कर वैशाली-क्षेत्र में खुदाई करायी है (१९५० ई०)। इसकी रिपोर्ट शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है।

(११) जैनों में प्रचार किया गया, जिसके फलस्वरूप १९४८ ई० से प्रति वर्ष जैनों के चौबीसवें तीर्थंकर श्रमण भगवान् महावीर की जन्मभूमि वैशाली में श्रीमहावीर-जन्मकल्याणक-पूजा सम्पन्न होती आयी है। अब जैन सम्प्रदाय की ओर से वैशाली

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(कुण्डपुर) तीर्थ-प्रवन्धक-समिति की स्थापना भी हो गयी है, जिसने वैशाली में जैन-मन्दिर बनवाया है।

(१२) संग्रहालय (म्यूजियम) और अतिथिशाला (गेस्ट हाउस) के भवन-निर्माण के लिए संघ को बिहार सरकार से ग्राएट मिला है। दोनों भवनों में हाथ लग गया है। ये शीघ्र ही तैयार हो जाएँगे।

(१३) साधारण जनता की संस्कृति के उत्थान के लिए संघ ने अपने तत्त्वावधान में 'वैशाली लोकरंगमंच' नामक एक नूतन और अनूठी संस्था का आयोजन किया है। इसमें वैशाली-क्षेत्र के गाँवों की संगीत, नृत्य और अभिनय मण्डलियाँ शामिल हैं। इस तरह वैशाली-संघ के द्वारा भारतवर्ष के इस कोने में सच्चे अर्थ में लोकरंगसंच के बीज बोये जा रहे हैं।

(१४) हलदानयज्ञ का आयोजन किया गया है। हरएक हल पर साल में एक बार एक रुपया-मात्र दान देकर वैशाली-क्षेत्र का प्रत्येक कुटुम्ब स्थानीय सदस्य बन जाए—यही योजना है। यह वैशाली-क्षेत्र के सभी कुटुम्बों को एक सूत्र में बाँधने का प्रयत्न है। यही सूत्र आगे उसी प्रकार के जनतन्त्रसंगठन का आधार बन सकेगा, जिसके लिए प्राचीन काल में वैशाली प्रसिद्ध थी।

(१५) संघ ने विहार सरकार के सहयोग से वैशाली-क्षेत्र के ग्रामों में समाज-शिक्षा और ग्रामोत्थान-सम्बन्धी कार्यों का नये ढंग से प्रारम्भ किया है। इसके लिए एक स्थानीय ऑर्गेनाइजर की नियुक्ति हुई है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

(१६) अब जैन दानियों की कृपा से बिहार सरकार के तत्त्वावधान में प्राकृत एवं जैन अध्ययन और अनुसन्धान के लिए 'वैशाली प्राकृत इन्स्टीट्यूट' (वैशाली विद्यापीठ) की स्थापना की जा रही है।

वैशाली-महोत्सव

वैशाली-महोत्सव का विचार सबसे पहले १६४४ के अन्त में उपस्थित हुआ, जब प्राचीन वैशाली की महिमा की याद में एक उत्सव करने के उद्देश्य से ३१ दिसम्बर, १६४४ को हाजीपुर के विशिष्ट व्यक्तियों की एक सभा हुई। इस काम को शुरू किया था श्रीजगदीशचन्द्र माथुर, आई० सी० एस० ने, जो उस समय हाजीपुर (जिला मुजफ्फरपुर) के एस० डी० ओ० थे। समूचे सबडिवीजन और मुजफ्फरपुर जिले के बहुत-से गैर-सरकारी कार्यकर्त्ताओं ने इस काम में बहुत ही उत्साह दिखलाया और सक्रिय सहयोग दिया। यह पूर्णतया एक सांस्कृतिक सम्मेलन रहा है, जिसमें हर साल सरकारी अफसरों और गैर-सरकारी लोगों ने मिलकर काम किया है और जिसमें राज्य के जन-साधारण ने पूरा योग दिया है।

आज वैशाली-महोत्सव बिहार राज्य का एक प्रमुख सांस्कृतिक समारोह है, जिसमें, अन्य बातों के अतिरिक्त, प्राचीन वैशाली की झाँकी भी मिल जाती है।

★ ★ ★

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

परिशिष्ट

१

वैशाली की समृद्धि और गणतन्त्रवादिता

अपरे ऽप्याहुः। इयं वैशाली महानगरी ऋद्धा च स्फीता च क्षेमा च सुभिक्षा च रमणीया चाकीर्णबहुजनमनुष्या च वितर्दिनिर्यूहतोरणगवाक्षहर्म्यकूटागारप्रासादतलसमलंकृता च पुष्पवाटिका वनराजिसंकुसुमिता च। अमरभवनपुरप्रकाश्या सा प्रतिरूपास्य बोधिसत्त्वस्य गर्भप्रतिसंस्थानयेति॥ अपर आहुः। साप्यप्रतिरूपा। किं कारणं। तथा हि। तेषां नास्ति परस्पर-न्यायवादिना नास्ति धर्माचरणं नोच्चमध्यवृद्धज्येष्ठानुपालिता। एकैक एव मन्यते। अहं राजा अहं राजेति। न च कस्यचिच्छि-ष्यत्वमभ्युपगच्छति न धर्मत्वं। तेन साप्यप्रतिरूपा॥

[ललितविस्तर]

२

भगवान् महावीर की जीवन-झाँकी

(*जन्म*)

(९६) तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जे से गिम्हाणं पढमे मासे दुच्चे पक्खे—चित्तसुद्धे, तस्स णं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चित्तसुद्धस्स तेरसीदिवसेणं, नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं विइक्कंताणं, उच्चट्ठाणगएसु गहेसु, पढमे चंदजोगे, सोमासु दिसासु वितिमिरासु विसुद्धासु, जइएसु सव्वसउणेसु, पयाहिणाऽणुकूलंसि भूमिसप्पिंसि मारुयंसि पवायंसि, निप्फण्णमेइणीयंसि कालंसि, पमुइय-पक्कीलिएसु, जणवएसु, पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि, हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं आरोग्गारुग्गं दारयं पयाया ॥ ९६ ॥

(गृहस्थ-जीवन)

(११०) समणे भगवं महावीरे दक्खे दक्खपइन्ने पडिरूवे आलीणे भद्दए विणीए नाए नायपुत्ते नायकुलचन्दे विदेहे विदेहदिन्ने विदेहजच्चे विदेहसूकुमाले तीसं वासाइं विदेहंसि कट्टु अम्मापिऊहिं देवत्तगएहिं गुरुमहत्तरएहिं अब्भणुण्णाए सम्मत्तपइन्नेपुणरवि लोयंतेहिं जीयकप्पिएहिं देवेहिं ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं अणवरयं अभिनन्दमाणा य अभिथुव्वमाणा य एवं वयासी ॥११०॥

(वर्षावास)

(१२२) तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे अट्ठियगामं नीसाए पढमं अंतरावासं वासावासं उवागए, चम्पं य पिट्ठचम्पं छ नीसाए च तओ अंतरवासे वासावासं उवागए, वेसालिं नगरिं वाणिज्यगामं च नीसाए दुवालस अंतरावासे वासावासं उवागए, रायगिहं नगरं नालंदं च वाहिरिय नीसाए चउद्दस अंतरावासे वासावासं उवागए, छ मिहिलाए, दो भद्दिआए, एगं

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

आलंभियाए, एगं सावत्थीए, एगं पणिअभूमीए, एगं पावाए मज्झिमाए हत्थिवालस्स रन्नो रज्जुगसभाए अपच्छिमं अंतरावासं वासावासं उवागए ॥१२२॥

(दीपोत्सव)

(१२८) जं रयणिं च णं समणे भगवं महावीरे कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे तं रयणिं च नवमल्लई नवलेच्छई कासी-कोसलगा अट्ठारस विगणरायाणो पारामोअं पोसहोववासं पट्ठविसु, गए से भावुज्जोए दव्वुज्जोयं करिस्सामो ॥१२८॥

[जैन कल्पसूत्र]

३

लिच्छवियों द्वारा बुद्ध-स्वागत की तैयारी

भगवां संप्रस्थितो सार्धं भिक्षुसंघेन ॥ राजा श्रेणियो बिम्बिसारो सयुग्यबलवाहनो सदेवीकुमारामात्यपरिजनो राजार्हेहि पंचहि च्छत्रशतेहि धार्यमाणेहि ओसक्तपट्टदामकलापेहि सध्वजपताकेहि महता राजानुभावेन महता राजऋद्धीये महत्ताये विभूषाये भगवन्तं वैशालिं गच्छन्तं समनुयाति अर्धयोजनिकेनान्तरावासेन यावत्स्वकं विषयं गंगायाः तीरं ॥ अश्रोषुः वैशालका लेच्छविका एद्दशाये विधीये राजा श्रेणियो बिम्बिसारो भगवतो अनुयानं करोति राजगृहातो वैशालिमागच्छन्तस्येति ॥ श्रुत्वा च पुनः याव च वैशाली याव च गंगातीर्थं वैशालकानां लेच्छवीनां विजितमत्रान्तरे मार्गं प्रतिजाग्रंसु अष्टपदसममविषमं पाणितलजातं सिक्तसंमृष्टं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मुक्तपुष्पावकीर्णं विततवितानं चित्रदुष्यपरिक्षिप्तं ओसक्तपट्टदाम-कलापं धूपितधूपनं ॥ देशदेशेहि च नटनर्तनऋल्लमल्लपाणिस्वर्या स्थापयेन्सु। अर्धयोजनिकेन च अन्तरेण मण्डपसंविधानं च कारयेन्सु शय्यासनसंविधानं च पानीयसंविधानं च भक्तसंविधानं च भगवतः सश्रावकसंघस्य ॥ अभ्यन्तरवैशालीतो चतुरशीति रथसहस्राणि योजापयित्वा द्वे चतुरशीति रथसहस्राणि योजापयित्वा सवैजयन्तिकानि सनन्दिघोषाणि सपुष्पमालानि सच्छत्रध्वज पताकानि प्रभूतं च गन्धमाल्यमादाय स्वकस्वकानि भद्राणि यानान्यभिरुहित्वा महता राजानुभावेन महता राजऋद्धीये महतो जनकायस्य हक्कारहिक्कारभेरीमृदंगमरुपणवशंखसन्निनादेन वैशालीतो नगरातो निर्याता भगवन्तं प्रत्युद्गच्छेन्सु यावद्गंगातीर्थं भगवतः पजार्थं ॥ तेषां पि तं एवं संविधानरूपं अभूषि ॥ सन्त्यत्र लेच्छवयः नीलाश्वा नीलरथा नीलरश्मिप्रतोदा नीलयष्टी नीलवस्त्रा नीलालंकारा नोलउष्णीषा नीलच्छत्रा नीलखड्गमणिपादुक-वालव्यंजनाः ॥ तत्रेदमिति उच्यते ॥

नीलाश्वा नील रथा नीला रश्मिप्रतोदमुष्णीषा।
नीला च पंच ककुदा नीला वस्त्रा अलंकारा ॥

सन्त्यत्र लेच्छवयः पीताश्वाः पीतरथा पीतरश्मिप्रतोदयष्टी पीतवस्त्राः पीतालंकारा पीतोष्णीपा पीतच्छत्रा पीतखड्गमणि-पादुका ॥ तत्रेदमुच्यते ॥

पीताश्वा पीत रथा पीता रश्मिप्रतोदमुष्णीषा।
पीता च पंच ककुदा पीता वस्त्रा अलंकारा ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सन्त्यत्र लेच्छवयो मंजिष्ठाश्वा मंजिष्ठरथा मंजिष्ठप्रतोदयष्टी मंजिष्ठवस्त्रा मंजिष्ठअलंकारा मंजिष्ठउष्णीषा मंजिष्ठच्छत्राः मंजिष्ठ-मणिपादुकवालव्यंजनाः ॥ तत्रेदमुच्यते ॥

मंजिष्ठा अश्वरथा मञ्जिष्ठ रश्मिप्रतोदयष्टी च।
मंजिष्ठ पंच ककुदा मंजिष्ठ वस्त्रअलंकाराः ॥

सन्त्यत्र लेच्छवयो लोहिताश्वा लोहितरथा लोहितप्रतोदयष्टी लोहितवस्त्रा लोहितालंकारा लोहितउष्णीषा लोहतिच्छत्राः लोहित-खड्गमणिपादुकवालव्यंजनाः ॥ तत्रेदमुच्यते ॥

लोहिता अश्वा रथा च लोहित रश्मिप्रतोदयष्टी च।
लोहित च पंच ककुदा लोहित वस्त्रा अलंकाराः ॥

सन्त्यत्र लेच्छवयो श्वेताश्वा श्वेतरथा श्वेतप्रतोदयष्टी च श्वेत-वस्त्राः श्वेतालंकाराः श्वेतोष्णीषाः श्वेतच्छत्राः श्वेतखड्गाः श्वेत-मणिपादुकवालव्यंजनाः ॥ तत्रेदमुच्यते ॥

श्वेताश्वा श्वेत रथा श्वेत रश्मिप्रतोदयष्टी च।
श्वेता च पंचे ककुदा श्वेता वस्त्रा अलंकाराः ॥

सन्त्यत्र लेच्छवयो हरिताश्वा हरितरथाः हरितरश्मिप्रतोदयष्टी च हरितवस्त्रा हरितालंकारा हरितोष्णीषा हरितच्छत्रा हरितखड्गा हरितमणिपादुकवालव्यंजनाः ॥ तत्रेदमुच्यते ॥

हरिताश्वा हरित रथा हरिता रश्मिप्रतोदयष्टी च।
हरिता च पंच ककुदा हरिता वस्त्रा अलंकाराः ॥

सन्त्यत्र लेच्छवयो व्यायुक्ताश्वा व्यायुक्तरथा व्यायुक्तरश्मि-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रतोदयष्टी व्यायुक्तवस्त्रा व्यायुक्तालंकारा व्यायुक्तउष्णीषा व्यायुक्तच्छत्रा व्यायुक्तखड्गा व्यायुक्तमणिपादुकवालव्यंजनाः ॥ तत्रेदमुच्यते ॥

व्यायुक्ता अश्वरथा व्यायुक्त रश्मिप्रतोदयष्टी च ।
व्यायुक्त पंच ककुदा व्यायुक्त वस्त्रअलंकाराः ॥

सन्त्यत्र लेच्छवयो सुवर्णच्छत्रेहि कुंजरेहि नानालंकारभूषितेहि ॥ सन्त्यत्र लेच्छवयो सुवर्णशिविकाहि सर्वरतनभूषिताहि ॥ सन्त्यत्र लेच्छवयो सुवर्णमयेहि रथेहि सवैजयन्तेहि सनन्दिघोषेहि सखुरप्रवाशीहि उच्छ्रितच्छत्रध्वजपताकेहि ॥ एवंरूपेण अनुभावेन एवंरूपाये विधिये एवंरूपेण समुदयेन एवंरूपाये राजऋद्धीये एवंरूपाये समृद्धीये एवंरूपाये संवृत्ताये एद्दशाये विभूषाये वैशालका लेच्छवयो द्वे चतुरशीतिहि यानसहस्रे हि गोशृंगी च आम्रपालिका च तद्यथा सो पि महाजनकायो भगवन्तं प्रत्युद्गता यावद्गंगाया तीर्थं ॥

भगवां गंगाये पारिमे कूले राज्ञो श्रेणियस्य बिम्बिसारस्य मागधकानां ब्राह्मणकानां धर्मया कथया संदर्शयित्वा समुत्तेजयित्वा संप्रहर्षयित्वा मागधकानां ब्राह्मणकानां चतुरशीति सहस्राणि धर्माभिसमये प्रतिष्ठापेत्वा येन वैशालका लेच्छवयो तेन विलोकेत्वा भिक्षूणां आमन्त्रेति ॥ भिक्षवो न दृष्टपूर्वा देवा त्रायस्त्रिंशाः सुदर्शनातो नगरातो उद्यानभूमिमभिनिष्क्रमन्ता ॥ ते एतरहि वैशालका लेच्छवयो पश्यथ ॥ तत्कस्य हेतोः ॥ तादृशाये व

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भिक्षवो ऋद्धीये देवा त्रायस्त्रिंशा सुदर्शनातो नगरातो उद्यानभूमिमभिनिष्क्रमन्ति ॥

स्फीतानि राज्यानि प्रशास्यमाना
सम्यक् राज्यानि करोन्ति ज्ञातयो ।

तथा इमे लेच्छविमध्ये सन्तो
देवेहि शास्ता उपमामकासि ॥

त्रायस्त्रिंशा येहि न दृष्टपूर्वा
उद्यानभूमिं अभिनिष्क्रमन्ता ।

एतादृशी समिति अभूषि तेषां
यथा इयं समृद्धि लेच्छवीनां ॥

सुवर्णच्छत्रेहि च कुंजरेहि
शिविकाहि सौवर्णमयीहि चान्ये ।

रथेहि सौवर्णमयेहि चान्ये
प्रत्युद्गमं लेच्छविनो करोन्ति ॥

सर्वे समेत्वा सह ज्ञातिबन्धवो
दहरा च मध्या च महल्लका च ।

अलंकृता लक्तकरक्तवस्त्रा
प्रत्युद्गता ते च विचित्रचारी ॥

[महावस्तु]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

४

वज्जि-गणतंत्र की सात विशेषताएँ

तेन खो पन समयेन आयस्मा आनन्दो भगवतो पिट्ठतो ठितो होति भगवन्तं वीजमानो (v. l. वीजयमानो ; वीजियमानो)। अथ खो भगवा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि :—'किन्ति ते आनन्द सुतं, वज्जी अभिण्हं सन्निपाता सन्निपातबहुला'ति ?'। 'सुतं मे तं भन्ते वज्जी अभिण्हं सन्निपाता सन्निपातबहुला'ति'। 'यावकीवञ्च आनन्द वज्जी अभिण्हं सन्निपाता सन्निपातबहुला भविस्सन्ति, वुद्धि येव आनन्द वज्जीनं पाटिकङ्खा नो परिहानि। किन्ति ते आनन्द सुतं, वज्जी समग्गा सन्निपतन्ति, समग्गा वुट्ठहन्ति, समग्गा वज्जीकरणीयानि करोन्ती'ति ?'।

'सुतं मे तं भन्ते......पे०......करोन्ती'ति'।

'यावकीवञ्च आनन्द वज्जी समग्गा सन्निपतिस्सन्ति, समग्गा वुट्ठहिस्सन्ति, समग्गा वज्जीकरणीयानि करिस्सन्ति, वुद्धि येव आनन्द वज्जीनं पाटिकङ्खा नो परिहानि। किन्ति ते आनन्द सुतं, वज्जी अप्पञ्ञत्तं न पञ्ञापेन्ति, पञ्ञत्तं न समुच्छिन्दन्ति, यथा पञ्ञत्ते पोराणे वज्जिधम्मे समादाय वत्तन्ती'ति ?'।

'सुतं मे तं भन्ते वज्जी...पे०...समादाय वत्तन्ती'ति'।

'यावकीवञ्च आनन्द वज्जी अप्पञ्ञत्तं न पञ्ञापेस्सन्ति, पञ्ञत्तं न समुच्छिन्दिस्सन्ति, यथा पञ्ञत्ते पोराणे वज्जिधम्मे समादाय वत्तिस्सन्ति, वुद्धि येव आनन्द वज्जीनं पाटिकङ्खा नो

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

परिहानि। किन्ति ते आनन्द सुतं वज्जी ये ते वज्जीनं वज्जिमहल्लका ते सक्करोन्ति गरुकरोन्ति मानेन्ति पूजेन्ति तेसञ्च सोतब्बं मञ्ञन्ती'ति ?'।

'सुतं मे तं भन्ते वज्जी ये ते वज्जीनं वज्जिमहल्लका... पे० ... सोतब्बं मञ्ञन्ती'ति'।

'यावकीवञ्च आनन्द वज्जी ये ते वज्जीनं वज्जिमहल्लका ते सक्करिस्सन्ति गरुकरिस्सन्ति मानेस्सन्ति पूजेस्सन्ति तेसञ्च सोतब्बं मञ्ञिस्सन्ति, वुद्धि येव आनन्द वज्जीनं पाटिकङ्खा नो परिहानि। किन्ति ते आनन्द सुतं वज्जी या ता कुलित्थियो कुलकुमारियो ता न ओक्कस्स पसय्ह वासेन्ती'ति ?'।

'सुतं मे तं भन्ते वज्जी या ता कुलित्थियो... पे० ...वासेन्ती'ति'।

'यावकीवञ्च आनन्द वज्जी या ता कुलित्थियो कुलकुमारियो ता न ओक्कस्स पसय्ह वासेस्सन्ति, वुद्धि येव आनन्द वज्जीनं पाटिकङ्खा नो परिहानि। किन्ति ते आनन्द सुतं वज्जी यानि तानि वज्जीनं वज्जिचेतियानि अब्भन्तरानि चेव बाहिरानि च तानि सक्करोन्ति गरुकरोन्ति मानेन्ति पूजेन्ति तेसञ्च दिन्नपुब्बं कतपुब्बं धम्मिकं बलिं नो परिहापेन्ती'ति ?'।

'सुतं मे तं भन्ते वज्जी यानि तानि... पे० ...परिहापेन्ती'ति'।

'यावकीवञ्च आनन्द वज्जी यानि तानि वज्जीनं वज्जिचेतियानि, अब्भन्तरानि चेव बाहिरानि च, तानि सक्करिस्सन्ति,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

गरुकरिस्सन्ति मानेस्सन्ति, पूजेस्सन्ति, तेसञ्च दिन्नपुब्बं कतपुब्बं धम्मिकं बलिं नो परिहापेस्सन्ति, वुद्धि येव आनन्द वज्जीनं पाटिकङ्खा नो परिहानि। किन्ति ते आनन्द सुतं वज्जीनं अरहन्तेसु धम्मिका'रक्खा' वरणगुत्ति सुसंविहिता, किन्ति अनागता च अरहन्तो विजितं आगच्छेय्युं आगता च अरहन्तो विजिते फासुं विहरेय्यु''ति ?'।

'सुतं मे तं भन्ते वज्जीनं अरहन्तेसु... पे० ... विहरेय्यु''ति'।

'यावकीवञ्च आनन्द वज्जीनं अरहन्तेसु धम्मिका' रक्खा' वरणगुत्ति सुसंविहिता भविस्सति, किन्ति, अनागता च अरहन्तो ... पे० ...विहरेय्यु''ति, वुद्धि येव आनन्द वज्जीनं पाटिकङ्खा नो परिहानी'ति '।

अथ खो भगवा वस्सकारं ब्राम्हणं मगधमहामत्तं आमन्तेसि:—

'एक'मिदा'हं ब्राम्हण समयं वेसालियं विहरामि सारन्ददे चेतिये। तत्रा'हं वज्जीनं इमे सत्त अपरिहानिये धम्मे देसेसिं, यावकीवञ्च ब्राम्हण इमे सत्त अपरिहानिया धम्मा वज्जीसु ठस्सन्ति, इमेसु च सत्तसु अपरिहानियेसु धम्मेसु वज्जी सन्दिस्सन्ति, वुद्धि येव ब्राम्हण वज्जीनं पाटिकङ्खा नो परिहानी'ति '।

[दीघनिकाय : महापरिनिब्बाणसुत्त]

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgac

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

५

कुछ महत्त्वपूर्ण तिथियाँ

भगवान् राम

जन्म—चैत सुदी नवमी (रामनवमी) को, अयोध्या (उत्तर-प्रदेश) में [सदियों से बसाढ़ में इस तिथि को एक मेला लगता है]।

विवाह—अगहन सुदी पंचमी (विवाहपंचमी) को।

भगवान् बुद्ध

जन्म—वैशाख-पूर्णिमा को, कपिलवस्तु (नेपाल) के समीप लुम्बिनीवन (आधुनिक रुम्मिनदेई) में।

गृहत्याग (महाभिनिष्क्रमण)—आषाढ़-पूर्णिमा को।

ज्ञानप्राप्ति (सम्बोधिलाभ)—वैशाख-पूर्णिमा को, बोधगया में पीपलवृक्ष के नीचे [हाल से यहाँ इस तिथि को एक महोत्सव होने लगा है]।

महापरिनिर्वाण—वैशाख-पूर्णिमा को, कुशीनगर (आधुनिक कसिया, जिला गोरखपुर) में।

भगवान् महावीर

जन्म—चैत सुदी तेरह की मध्यरात्रि में, वैशाली के समीप कुण्डपुर (क्षत्रियकुण्ड) में [हाल से यहाँ इस तिथि को 'वैशाली-महोत्सव' मनाया जाने लगा है]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

गृहत्याग (निष्क्रमण)--मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी (अगहन सुदी दशमी) को दिन के चौथे पहर में।

ज्ञानप्राप्ति (केवलज्ञान)—वैशाख शुक्ला दशमी को दिन के चौथे पहर में, जृम्भिकग्राम के समीप ऋजुपालिका नदी के उत्तर तट पर सालवृक्ष के नीचे [यह स्थान चम्पा और पावा के बीच कहीं था]।

निर्वाण—कार्तिक अमावस्या की पिछली रात में, पावा (मध्यमा पावा) में राजा हस्तिपाल के रज्जुगसभाभवन में। [दिगम्बर जैनों के विचारानुसार निर्वाण-काल चौबीस घण्टे पहले यानी कातिक वदी चौदह को है।]

Reory.

★ ★ ★

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

लेखक की अन्य प्रकाशित पुस्तकें

सम्पादित

१ वैशाली-अभिनन्दन-ग्रन्थ (श्री जगदीशचन्द्र माथुर, आई० सी० एस० के साथ)। मूल्य बारह रुपये।

२ वैशाली (डा० सुविमल चन्द्र सरकार के साथ)। मूल्य दो रुपये।

३ मेगास्थनीज का भारत-विवरण। मूल्य दो रुपये।

लिखित

४ भारत का ऐतिहासिक एटलस (५८ नक्शों में भारत के सम्पूर्ण इतिहास का चित्रण, हर नक्शे के साथ उपयुक्त विवरण)।

५ Identification of Mahavira's Birthplace (अँगरेजी में)।

६ श्रमण भगवान् महावीर की जन्मभूमि (उपर्युक्त का हिन्दी अनुवाद)।

७ अशोक के अभिलेख (मौर्य सम्राट् अशोक के मूल अभिलेख नागरी लिपि में और उनका हिन्दी अनुवाद। विषय को स्पष्ट करने के लिए कई अध्याय भी हैं। पुस्तक प्रेस में है।)

★ ★ ★

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra
ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon